बाल श्रम एक सामाजिक दुर्व्यवहार: आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में एक अध्ययन

शोध-प्रबन्ध

समाजशास्त्र में

पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधकर्ता

राजेश सिंह

MUIT0120038262

शोध निर्देशिका

डॉ० सरिता वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग

महर्षि विज्ञान एवं मानविकी स्कूल

महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ

सीतापुर रोड, पोस्ट महर्षि विद्या मंदिर

लखनऊ, 226013

अक्टूबर-2024

महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

लखनऊ

शोध छात्र का प्रतिज्ञा-पत्र

मैं एतद्द्वारा घोषणा करता हूँ कि इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत कार्य जिसका शीर्षक है **"बाल श्रम एक सामाजिक दुर्व्यवहार: आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में एक अध्ययन** "महर्षि विज्ञान एवं मानविकी स्कूल, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री के आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, इस विश्वविद्यालय में महर्षि विज्ञान एवं मानविकी स्कूल की **डॉ० सरिता वर्मा**, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग की देखरेख में किए गए मेरे अपने शोध कार्य का एक प्रामाणिक रिकॉर्ड है। मैं यह भी घोषणा करता हूँ, कि वर्तमान शोध प्रबंध में निहित कार्य-

i) यह मूल कार्य है और इसे किसी पत्रिका/थासिस/पुस्तक से कॉपी नहीं किया गया है; तथा

ii) इसे किसी विश्वविद्यालय/संस्थान द्वारा किसी अन्य डिग्री या छात्र के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांक: **राजेश सिंह**

महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है की प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध **"बाल श्रम एक सामाजिक दुर्व्यवहार: आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में एक अध्ययन'** राजेश सिंह, शोध छात्र, समाज शास्त्र विभाग, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा समाज शास्त्र में पी-एच०डी० उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में नियमानुसार परिपूर्ण कर प्रस्तुत किया गया है। इस विषय पर यह शोध सर्वथा मौलिक और नवीन उपलब्धियों से युक्त होने के साथ ही इनके निजी अध्यवसाय एवं कठिन परिश्रम का परिणाम है। यह शोध राजेश सिंह द्वारा एक किये गए तथ्यों एवं आकड़ो पर आधारित है। इसके अन्तर्गत वैज्ञानिक तथा पद्धति शास्त्रीय रूप में तथ्यों एवं आकड़ो का प्रस्तुतिकरण उनका स्वतः प्रयास है।

मैं, राजेश सिंह के इस कार्य से पूर्ण रूप से संतुष्ट हूँ तथा इस शोध-प्रबन्ध को पी-एच०डी० उपाधि हेतु परीक्षणार्थ सम्प्रेषित करने के लिए अनुमोदित करती हूँ।

दिनांक:
स्थान:

शोध निर्देशिका
डॉ० सरिता वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग

आभार

आज शोध प्रबंध के रूप में अपनी साधना व मेहनत को साकार होते देखकर मेरे हृदय में जो आनन्द की अनुभूति हो रही है, उसकी अभिव्यक्ति मैं शब्दों में वर्णित करने में असमर्थ महसूस कर रहा हूँ। इस सफलता के लिए सर्वप्रथम मैं शक्तिस्वरूपा माँ सरस्वती को कोटिशः नमन करते हुए अपने आभार की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

सर्वप्रथम, मैं विश्वव्यापी शक्तिस्वरूपा के चरणों में स्वयं को समर्पित करते हुए प्रार्थना करता हूँ जिसने अपनी कृपा से मुझे शोध कार्य को सफल करने की प्रेरणा दी साथ ही साथ विकट से विकट परिस्थितियों में अपनी असीम शक्ति व कृपा से मुझे अपने कार्य को पूर्ण करने व आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया और लड़खड़ाते कदम में साहस का संचार प्रवाहित किया।

मैं, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस विश्वविद्यालय द्वारा विद्यावारिधि उपाधि प्राप्त करने का अवसर मिला। विश्वविद्यालय के सहयोग के लिए आभारी हूँ।

मैं, श्रद्धेय गुरू **डॉ० सरिता वर्मा**, समाज शास्त्र विभाग, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लखनऊ एवं **प्रोफेसर वी. के. सिंह**, अधिष्ठाता शोध, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लखनऊ एवं **डॉ० गिरीश छिम्वाल**, कुलसचिव, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लखनऊ सहित समस्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष गुरूजनों को नमन व आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझावों के माध्यम से मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं विशेष रूप से अत्यंत सहयोगी और विद्वान व्यक्ति, **प्रोफेसर अखंड प्रताप सिंह,** सदस्य, उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बिना यह शोध संभव नहीं हो पाता। इस अध्ययन के विभिन्न चरणों को सुगम बनाने में उनकी सहायता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस शोध यात्रा में सफल बनाने के लिए मेरे कई सहपाठियों ने अपना अमूल्य समय देकर मुझे ऋणी बना दिया। मैं उन सभी सहपाठियों को आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे शोध कार्य में मेरा सहयोग किया। मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी प्रोत्साहित किया ।

कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और समर्पण होने के बावजूद उनमें यदा-कदा त्रुटियाँ हो सकती हैं। इन त्रुटियों के लिए क्षमा याचना के साथ मैं अपनी साधना का प्रसून माँ सरस्वती के चरण कमलों में अर्पित करता हूँ। विद्वानजन अपने अमूल्य सुझावों से मेरा मार्गदर्शन करेंगे, इस विश्वास व आशा के साथ यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत है।

दिनांकः

राजेश सिंह,
समाज शास्त्र विभाग
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में बाल श्रम के मुद्दे की गहराई से जांच करना है। बाल श्रम एक सामाजिक दुर्व्यवहार है, जो बच्चों के विकास और भविष्य को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। इस शोध में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण किया गया है, जो बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करते हैं।

आगरा जिले में जूता उद्योग में बच्चों का श्रम आम है, जहाँ उन्हें कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। अध्ययन में स्थानीय श्रमिकों, उद्योग मालिकों और अधिकारियों के साक्षात्कार से प्राप्त डेटा का उपयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि गरीबी, शिक्षा की कमी और प्रभावी नीतियों की अनुपस्थिति बाल श्रम को बढ़ावा देती हैं।

इसके अलावा, यह अध्ययन दर्शाता है कि बाल श्रम बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। अंततः यह शोध बाल श्रम उन्मूलन के लिए सामूहिक प्रयासों और ठोस नीतियों की आवश्यकता पर जोर देता है, ताकि एक सुरक्षित और समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सके।

बाल श्रम एक गंभीर सामाजिक दुर्व्यवहार है, जो विशेष रूप से विकासशील देशों में बच्चों के भविष्य को प्रभावित करता है। यह अध्ययन आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में बाल श्रम की जड़ें, कारण और प्रभावों की जांच करता है। इस शोध में यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक किस प्रकार बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करते हैं।

आगरा जिले में जूता उद्योग में बच्चों का श्रम अत्यधिक सामान्य है, जहाँ उन्हें कठिन और खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। यह अध्ययन प्राथमिक डेटा संग्रहण के माध्यम से स्थानीय श्रमिकों, उद्योग मालिकों और संबंधित अधिकारियों के बीच साक्षात्कार के माध्यम से किया गया।

परिणाम बताते हैं कि आर्थिक विपन्नता, शिक्षा की कमी और सामाजिक नीतियों की अनुपस्थिति बाल श्रम को बढ़ावा देती हैं। साथ ही, यह अध्ययन यह भी उजागर करता है कि बाल श्रम बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष समाज के सभी वर्गों को जागरूक करने और बाल श्रम उन्मूलन के लिए ठोस नीतियों की आवश्यकता को दर्शाते हैं। बाल श्रम के खिलाफ सामूहिक प्रयासों के माध्यम से ही हम एक स्वस्थ और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	शीर्षक पेज	(i)
2.	प्रतिज्ञा-पत्र	(ii)
3.	प्रमाण-पत्र	(iii)
4.	आभार	(iv)
5.	सारांश	(v)
7.	अनुक्रमणिका	(vi-xi)
8.	तालिका	(x-xii)
9.	ग्राफ	(xiii-xv)
अध्याय 1	**प्रस्तावना**	1-20
1.1	समस्या की प्रकृति	1-5
1.2	बाल श्रम की परिभाषा	6
1.3	भारत में बाल श्रम के कारण	6
	1.3.1 बढ़ती जनसंख्या	7
	1.3.2 भ्रष्टाचार	7
	1.3.3 बढ़ती महंगाई	8
	1.3.4 अशिक्षा	8
	1.3.5 बेरोजगारी	8
	1.3.6 विभिन्न बीमारियाँ	9
	1.3.7 अनाथ बच्चे	9
	1.3.8 युद्ध और गृहयुद्ध	9
	1.3.9 प्राकृतिक आपदाएँ	10

1.4	भारत में बच्चों के मुख्य कार्य	10
	1.4.1 कृषि	10
	1.4.2 कालीन बुनाई	11
	1.4.3 होटल, ढाबे, रेस्टोरेंट और चाय की दुकानें	12
	1.4.4 घरेलू नौकर के तौर पर काम करना –	12
	1.4.5 राशन की दुकान, हलवाई की दुकान, बेकरी, किराना दुकान, प्रोविजनल स्टोर व अन्य दुकानें	13
	1.4.6 कारखाने और उद्योग	13
	1.4.7 लघु और कुटीर उद्योग	13
	1.4.8 हस्तशिल्प उद्योग	14
	1.4.9 पटाखे और बीड़ी बनाना	14
	1.4.10 खनन कार्य	14
1.5	अध्ययन का महत्व	14
1.6	उद्देश्य	16
1.7	परिकल्पनाएँ	16
1.8	शोध पद्धति	16
1.9	अध्ययन का क्षेत्र:	18
1.10	विधि:	20
अध्याय 2	**साहित्य की समीक्षा**	21-47
2.1	साहित्य की चयनित अध्ययन समीक्षा	21
2.2	बुनियादी मुद्दे	46
2.3	पद्धतिगत मुद्दे	47

अध्याय 3	**अध्ययनाधीन क्षेत्र और शोध पद्धति**	48-62
3.1	उद्देश्य	48
3.2	परिकल्पनाएँ	48
3.3	शोध पद्धति	49
3.4	ब्रह्मांड	51
3.5	परिप्रेक्ष्य	51
3.6	डेटा संग्रह और विश्लेषण के तरीके और तकनीक	51
3.7	अध्ययन का क्षेत्र	52
3.8	जिले के बारे में	54
3.9	स्वास्थ्य अवसंरचना: आगरा जिला	55
3.10	जिला अस्पताल: आगरा का जिला महिला अस्पताल	55
3.11	आगरा जिला और भूगोल	58
3.12	सामान्य प्रशासन	59
3.13	पुलिस प्रशासन	59
3.14	बुनियादी ढांचा और नागरिक प्रशासन	59
3.15	केंद्र सरकार के कार्यालय	61
3.16	राजस्व सृजन	62
अध्याय 4	**विभिन्न अधिनियम और उनके निहितार्थ**	63-67
4.1	भारत में बाल श्रम कानून	64
4.2	बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार के प्रयास	65
4.3	बाल श्रम कानूनों के समुचित क्रियान्वयन में आने वाली बाधाएं	66

4.4	सुझाव	66
4.5	निष्कर्ष	67
अध्याय 5	**डेटा विश्लेषण**	68-136
5.1	नमूने का अवलोकन	68
5.2	परिस्थितियों और समस्याओं से संबंधित	76
5.3	कार्यस्थल से तनाव	87
अध्याय 6	**निष्कर्ष**	137-149
	संदर्भ सूची	150-160

तालिका

तालिका सं0	तालिका	पृष्ठ संख्या
5.1	आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण	68
5.2	लिंग के आधार पर वर्गीकरण उत्तरदाता की स्थिति	69
5.3	जाति	70
5.4	धर्म	72
5.5	परिवार का आकार	73
5.6	शैक्षिक योग्यता	74
5.7	माता-पिता का व्यवसाय	76
5.8	माता-पिता के कार्य क्षेत्र	77
5.9	सामाजिक सुरक्षा	79
5.10	रात में ड्यूटी	80
5.11	काम के निश्चित घंटे	81
5.12	असुरक्षा महसूस	82
5.13	एक सप्ताह की छुट्टी	83
5.14	नौकरी से संतुष्ट हैं	84
5.15	किसी दबाव में यह नौकरी चुनी	85
5.16	वेतन से सहमत	86
5.17	अन्य नौकरी का अवसर	87
5.18	नौकरी में काम के घंटे	88
5.19	मालिक कैसा व्यवहार	89
5.20	किसी प्रकार का खतरा या डर महसूस होता	90
5.21	आपकी ड्यूटी लंबी है	91

5.22	ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेना असुविधाजनक	92
5.23	परिवार के साथ समय बिताने का अवसर	93
5.24	अपने लिए समय	94
5.25	श्रमिकों का वर्ग	95
5.26	परिवार में बाल मजदूरों	96
5.27	घर का प्रकार	97
5.28	बाल श्रम से मुक्त	98
5.29	पारिवारिक पृष्ठभूमि	99
5.30	परिवार की आर्थिक स्थिति	100
5.31	परिवार पर कर्ज	101
5.32	माता-पिता से प्रेरित	102
5.33	बाल श्रम की अनदेखी	103
5.34	बाल श्रम अपराध	104
5.35	बाल श्रमिकों के लिए उनके वर्तमान कार्य में कठिनाइयाँ	105
5.36	शारीरिक समस्या	106
5.37	कार्य को लेकर चिंतित	107
5.38	अपने काम में खतरा महसूस	108
5.39	वरिष्ठ का व्यवहार बुरा	109
5.40	कार्य स्थिति	110
5.41	मानसिक और शारीरिक दबाव	111
5.42	प्रतिकूल कार्य स्थिति	112
5.43	पौष्टिक आहार	113
5.44	काम हर हालत में ज़रूरी	114
5.45	शारीरिक दुर्बलता	115

5.46	अन्य स्वास्थ्य समस्या	116
5.47	कार्यस्थल पर बुरी लत	117
5.48	धूम्रपान की लत	118
5.49	तम्बाकू चबाना	119
5.50	शराब की लत	120
5.51	धूम्रपान, चबाना, शराब पीना	121
5.52	पारिवारिक आय में वृद्धि	122
5.53	भाई-बहनों का बढ़ता शैक्षिक स्तर	123
5.54	स्वास्थ्य स्थिति बेहतर	124
5.55	निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि	125
5.56	माता-पिता पर निर्भरता में कमी	126
5.57	बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति का व्यवहार	128
5.58	सामाजिक कठिनाइयों के आधार	129
5.59	सामाजिक अपमान	130
5.60	मनोवैज्ञानिक दबाव	131
5.61	विशेष अवसरों पर अपने परिवार के साथ	132
5.62	शारीरिक क्षमता के अनुसार कार्य	133
5.63	परिवार और कर्तव्य के बीच समायोजन/समन्वय	134
5.64	परिवार के सदस्य आपके वेतन पर निर्भर	135
5.65	पड़ोसी/रिश्तेदारों की आपके बारे में अच्छी धारणा	136

ग्राफ

क्रम संख्या	ग्राफ	पृष्ठ संख्या
5.1	आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण	68
5.2	लिंग के आधार पर वर्गीकरण उत्तरदाता की स्थिति	69
5.3	जाति	71
5.4	धर्म	72
5.5	परिवार का आकार	73
5.6	शैक्षिक योग्यता	75
5.7	माता-पिता का व्यवसाय	76
5.8	माता-पिता के कार्य क्षेत्र	78
5.9	सामाजिक सुरक्षा	79
5.10	रात में ड्यूटी	80
5.11	काम के निश्चित घंटे	81
5.12	असुरक्षा महसूस	82
5.13	एक सप्ताह की छुट्टी	83
5.14	नौकरी से संतुष्ट हैं	84
5.15	किसी दबाव में यह नौकरी चुनी	85
5.16	वेतन से सहमत	86
5.17	अन्य नौकरी का अवसर	87
5.18	नौकरी में काम के घंटे	88
5.19	मालिक कैसा व्यवहार	89
5.20	किसी प्रकार का खतरा या डर महसूस होता	90
5.21	आपकी ड्यूटी लंबी है	91

5.22	ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेना असुविधाजनक	92
5.23	परिवार के साथ समय बिताने का अवसर	93
5.24	अपने लिए समय	94
5.25	श्रमिकों का वर्ग	95
5.26	परिवार में बाल मजदूरों	96
5.27	घर का प्रकार	97
5.28	बाल श्रम से मुक्त	98
5.29	पारिवारिक पृष्ठभूमि	99
5.30	परिवार की आर्थिक स्थिति	100
5.31	परिवार पर कर्ज	101
5.32	माता-पिता से प्रेरित	102
5.33	बाल श्रम की अनदेखी	103
5.34	बाल श्रम अपराध	104
5.35	बाल श्रमिकों के लिए उनके वर्तमान कार्य में कठिनाइयाँ	105
5.36	शारीरिक समस्या	106
5.37	कार्य को लेकर चिंतित	107
5.38	अपने काम में खतरा महसूस	108
5.39	वरिष्ठ का व्यवहार बुरा	109
5.40	कार्य स्थिति	110
5.41	मानसिक और शारीरिक दबाव	111
5.42	प्रतिकूल कार्य स्थिति	112
5.43	पौष्टिक आहार	113
5.44	काम हर हालत में ज़रूरी	114
5.45	शारीरिक दुर्बलता	115

5.46	अन्य स्वास्थ्य समस्या	116
5.47	कार्यस्थल पर बुरी लत	117
5.48	धूम्रपान की लत	118
5.49	तम्बाकू चबाना	119
5.50	शराब की लत	120
5.51	धूम्रपान, चबाना, शराब पीना	121
5.52	पारिवारिक आय में वृद्धि	122
5.53	भाई-बहनों का बढ़ता शैक्षिक स्तर	124
5.54	स्वास्थ्य स्थिति बेहतर	125
5.55	निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि	126
5.56	माता-पिता पर निर्भरता में कमी	127
5.57	बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति का व्यवहार	128
5.58	सामाजिक कठिनाइयों के आधार	129
5.59	सामाजिक अपमान	130
5.60	मनोवैज्ञानिक दबाव	131
5.61	विशेष अवसरों पर अपने परिवार के साथ	132
5.62	शारीरिक क्षमता के अनुसार कार्य	133
5.63	परिवार और कर्तव्य के बीच समायोजन/समन्वय	134
5.64	परिवार के सदस्य आपके वेतन पर निर्भर	135
5.65	पड़ोसी/रिश्तेदारों की आपके बारे में अच्छी धारणा	136

अध्याय-1

प्रस्तावना

1.1. समस्या की प्रकृति:

बच्चे किसी भी समाज और देश का भविष्य होते हैं। समाज और देश में बच्चों का समुचित विकास हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। दुर्भाग्य से, बाल श्रम पूरे विश्व को उच्च और निम्न स्तर पर प्रभावित करता है। आंकड़े बताते हैं कि पूरे विश्व में 1.2 बिलियन बच्चे (10-18) वर्ष की आयु वर्ग में आते हैं [1,2]। दुनिया भर में इस समस्या के खतरों के बावजूद, आंकड़े बताते हैं कि बाल श्रम की उच्च संख्या के कारण यह समस्या वास्तव में गंभीर है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन से पता चलता है कि पूरे विश्व में 15.2 बिलियन बाल श्रमिक हैं [3,4]। भारत की 2011 की सरकारी राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार, 5-14 वर्ष की आयु वर्ग के बाल श्रमिक लगभग 10.1 मिलियन हैं [5] ।

विभिन्न स्थानीय और क्षेत्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि 12.6 मिलियन बच्चे खतरनाक व्यवसायों में लगे हुए हैं [6]। कई बच्चे अपने पारंपरिक व्यवसायों, घरों और भूमिगत अर्थव्यवस्था में लगे हुए हैं जो छिपी हुई मजदूरी है। भारत में अनिवार्य शिक्षा नीति 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देती है और 18 खतरनाक व्यवसायों में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के रोजगार पर रोक लगाती है, फिर भी भारत के अनौपचारिक क्षेत्रों में बाल श्रम अभी भी प्रचलित है। बाल श्रम मानव अधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (अनुच्छेद 32, बाल अधिकारों पर कन्वेंशन) के कानूनों का उल्लंघन है [7,8, 9]। विकासशील और अविकसित देशों में लगभग एक तिहाई बच्चे 4 साल की शिक्षा भी पूरी नहीं कर पाते हैं। भारतीय आबादी में 10.1 मिलियन से अधिक बच्चे विभिन्न उद्योगों में काम कर रहे हैं [10], और अधिकतम कृषि क्षेत्र, चूड़ी बनाने, सिगरेट बनाने, चमड़ा उद्योग, खनन और चटाई बनाने के उद्योग आदि में हैं। बाल श्रम दुनिया भर में एक बड़ी समस्या है, खासकर विकासशील और अविकसित देशों में। अफ्रीका और एशिया में कुल बाल रोजगार का 99 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है [5]। बाल श्रम विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ स्कूली शिक्षा और काम के लिए न्यूनतम आयु आवश्यकताओं को लागू करने की क्षमता का अभाव है। बच्चे गरीबी, भुखमरी आदि कई कारणों से काम करते हैं। बच्चों को उनके काम के लिए पूरा वेतन नहीं दिया जाता है, फिर भी विकासशील और अविकसित देशों में वे अभी भी परिवार की आय में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में काम करते हैं [11, 12]। स्कूल की समस्याएँ भी बाल श्रम में योगदान करती हैं, चाहे वह स्कूलों की दुर्गमता हो या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी जो माता-पिता

को अपने बच्चों को अधिक लाभदायक गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित करती है [13,14]। कुछ देशों में, पारंपरिक कारक जैसे कठोर सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिकाएँ जैसे लड़कियों को शिक्षित न करना, लड़कियों को घर से बाहर न निकलने देना, बाल विवाह आदि शिक्षा के अवसरों को सीमित करते हैं और बाल श्रम को बढ़ाते हैं। न्यूनतम मजदूरी के लिए लंबे समय तक काम करने के लिए बच्चों का बहुत शोषण किया जाता है। उनकी कामकाजी परिस्थितियाँ बहुत खराब हैं जो उनके स्वास्थ्य को बहुत बुरी तरह प्रभावित करती हैं। इनमें से कई बच्चे अभावग्रस्त जीवन जीते हैं। बाल श्रम को समाप्त करने के प्रयास अभी भी बाल श्रम के शोषण को रोकने के लिए अपर्याप्त हैं। समस्या का औचित्य: कई वर्षों से श्रम सामाजिक और आर्थिक रूप से सबसे बड़ी बाधा है। विकास। आज के समय में बाल श्रम पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बन गया है। बाल श्रम सामाजिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टि से एक बहुत गंभीर समस्या है।

दुनिया के कई विकासशील और अविकसित देशों में बाल श्रम का एक बहुत ही विकृत रूप देखने को मिलता है। इन विकासशील और अविकसित देशों में बाल श्रम जीवन का एक सामान्य हिस्सा बन गया है। जिसके कारण इन विकासशील और अविकसित देशों में आज भी बाल श्रम विद्यमान है। परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण छोटे बच्चों को बहुत कम उम्र में ही बाल श्रम करना पड़ता है [15]। कम उम्र में बाल श्रम के कारण ये बच्चे अपना बचपन ठीक से नहीं जी पाते हैं। बच्चों को खेलने के लिए अच्छे खिलौने, पहनने के लिए अच्छे कपड़े, खाने के लिए अच्छा खाना, घूमने के लिए सुंदर जगहें और शिक्षा और चिकित्सा जैसी सुविधाएँ मुश्किल से ही मिल पाती हैं। कम उम्र में ही अपने परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी इन बच्चों पर आ जाती है। इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए ये बच्चे कम उम्र में ही बाल श्रम में लग जाते हैं।

बाल श्रमिकों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खतरनाक इलाकों में काम करने के कारण इन बच्चों की सुरक्षा की समस्या हमेशा बनी रहती है [16,17]। ये बच्चे पूरे दिन गंदे और धूल भरे माहौल में काम करते हैं। इन बच्चों को गर्मी, सर्दी, बारिश और धूप जैसे सभी मौसमों में काम करना पड़ता है। इन बच्चों को पूरे दिन काम करना पड़ता है और इन बच्चों के काम करने के घंटे भी तय नहीं होते हैं। इन बच्चों की सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है और इन्हें किसी भी प्रकार की चिकित्सा सुविधा नहीं मिलती है। इन बच्चों को बड़े व्यक्तियों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है। गंदे वातावरण और खतरनाक परिस्थितियों में काम करने के कारण इन बच्चों को

कई प्रकार की भयानक शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ हो जाती हैं [18,19, 20]। कम उम्र में और गंदे वातावरण में काम करने से इनका शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। इन बच्चों को परेशान किया जाता है, मारा-पीटा जाता है और उनसे उनकी क्षमता से अधिक काम करवाया जाता है [21]। क्षमता से अधिक काम करवाने के कारण इनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

शरीर में श्रम जैसे गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट और अनाथ होना आदि शामिल हैं [22]। लेकिन गरीबी बाल श्रम का मुख्य कारण है। ये बच्चे अपने और अपने परिवार के लिए एक वक्त का खाना जुटाने के लिए बाल श्रम करते हैं। ये बच्चे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने और अपने जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करने को मजबूर हैं[23,24]। बाल श्रम पूरी दुनिया में गैरकानूनी और अवैध है। बाल श्रम को गैरकानूनी घोषित किए जाने के बाद भी विकासशील और अविकसित देशों में बड़ी संख्या में बच्चे अभी भी बाल श्रम में लगे हुए हैं [25]। बाल श्रम को रोकने के लिए कई संगठनों और दुनिया के सभी देशों ने कई कानून बनाए हैं। लेकिन इन सभी प्रयासों के बावजूद बाल श्रम आज भी एक समस्या बनी हुई है [26]।

बाल श्रम को खत्म करने के लिए पूरी दुनिया को मिलकर काम करना होगा। बाल श्रम: एक परिचय बाल श्रम पूरी दुनिया में एक समस्या बनी हुई है। दुनिया के कई बच्चे इसका शिकार बनते हैं। दुनिया के लगभग सभी देश बाल श्रम की समस्या से जूझ रहे हैं [27]। बाल श्रम किसी भी समाज के लिए अभिशाप है। बाल श्रम से मुक्त होना हर समाज के विकास के लिए बहुत जरूरी है। बाल मजदूरी वह काम है जो एक बच्चा खुद का और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए करता है। आज के समय में बाल मजदूरी बहुत तेजी से बढ़ रही है। बाल मजदूरी गरीब और अनाथ बच्चों से करवाई जाती है। विकासशील और अविकसित देशों में बाल मजदूरी आम बात है। विकासशील और अविकसित देशों में बढ़ती जनसंख्या, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, भुखमरी और कई तरह की बीमारियों आदि के कारण बच्चे बाल मजदूरी करने को मजबूर हैं [28-37]। गरीब परिवारों के बच्चे छोटी उम्र से ही बाल मजदूरी करना शुरू कर देते हैं ताकि उन्हें कुछ पैसे मिल सकें, जिससे वे अपने परिवार की आर्थिक मदद कर सकें। कई गरीब माता-पिता भी अपने बच्चों से ज्यादा पैसे कमाने के लिए बाल मजदूरी करवाते हैं। बाल मजदूरी बच्चे के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को अवरुद्ध करती है [36]। बाल मजदूरी का बच्चों के शरीर पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बच्चे कई तरह के खतरनाक उद्योगों जैसे रासायनिक उद्योग, पेट्रोलियम उद्योग, बीड़ी

बनाने वाली फैक्ट्रियाँ, चूड़ी बनाने वाली फैक्ट्रियाँ, कांच बनाने वाली फैक्ट्रियाँ और पटाखा फैक्ट्रियाँ आदि में काम करते हैं [5]। उद्योगों या फैक्ट्रियों में बच्चे कई तरह की अप्राकृतिक और अमानवीय परिस्थितियों में काम करते हैं। इन उद्योगों और फैक्ट्रियों में हर दिन अंधेरे, गंदे और गर्म वातावरण में बच्चे पैदा होते हैं। इन जगहों पर बच्चों की किसी भी तरह की सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं है और न ही उन्हें किसी तरह की मेडिकल सुविधा दी जाती है। बच्चों का शरीर बहुत कोमल और नाजुक होता है, इसलिए वे किसी भी बीमारी के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। यह अध्ययन "बाल श्रम एक सामाजिक शोषण है: आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में एक अध्ययन" पर केंद्रित है।

इस विषय में जूता उद्योग में बाल श्रम की समग्र स्थिति के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। भारत जैसे विकासशील देश में प्राचीन काल से ही श्रम चला आ रहा है। प्राचीन काल में बाल श्रम को समस्या नहीं माना जाता था, लेकिन औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण बाल श्रम एक गंभीर समस्या बन गई। मशीनों से अधिक मात्रा में, तेजी से और कम लागत में उत्पादन होने के कारण लघु उद्योग और हस्तशिल्प उद्योगों में काम करने वाले लोग बेरोजगार हो गए। कृषि क्षेत्र में मशीनों के उपयोग के कारण मजदूर बेरोजगार होने लगे [4]। पहले जो काम लोग अपने हाथों से करते थे, मशीनों द्वारा किए जाने के कारण लोगों के सामने कमाई की समस्या खड़ी हो जाती। मशीनीकरण ने बेरोजगारी की समस्या को जन्म दिया। सत्ताधारी बेरोजगार लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे, जिससे शहरीकरण हुआ और यह एक समस्या बन गई।

ग्रामीण बेरोजगारों के शहर की ओर पलायन का मुख्य कारण कारखानों और उद्योगों में सस्ते श्रम की मांग थी। सस्ते श्रम की पूर्ति के लिए बड़ी संख्या में बच्चों को कारखानों और उद्योगों में काम पर लगाया गया [6,7]। कारखानों और उद्योगों में बच्चों को काम पर लगाने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें बड़ों की तुलना में कम पैसे देने पड़ते थे और बच्चे किसी तरह की शिकायत नहीं करते थे। बच्चों को मजदूर के रूप में काम पर लगाने का मुख्य कारण यह भी था कि बच्चों को अपने अधिकारों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और वे अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठा सकते थे। चूंकि बच्चों का कोई संगठन नहीं था, इसलिए वे हड़ताल या कोई मांग नहीं कर सकते थे [38]। उद्योगों और कारखानों में बच्चों को काम पर लगाने का एक मुख्य कारण यह था कि बच्चों को नियंत्रित करना बहुत आसान था क्योंकि उन्हें डरा-धमकाकर या मारपीट करके आसानी से कोई भी काम करने के लिए मजबूर

किया जा सकता था [36, 39]। इन कारणों से बाल श्रम को बहुत बढ़ावा मिला। इसके कारण वर्तमान समय में बाल श्रम एक बड़ी समस्या बन गई है। इसीलिए बाल श्रम की समस्या को समाप्त करने के लिए विभिन्न देशों और संगठनों द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। बाल श्रम का अर्थ:

बाल श्रम का अर्थ व्यापक है। बाल श्रम एक अलग अवधारणा है। बाल श्रम एक व्यापक अवधारणा है, इसलिए इसे सार्वभौमिक अर्थ देना बहुत मुश्किल है [40]। बाल श्रम शब्द इन दो शब्दों "बाल और श्रम" के संयोजन से बना है [5]। बाल शब्द का प्रयोग 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति के लिए किया जाता है। यहाँ बालक शब्द का तात्पर्य केवल बालक या किसी विशेष बालक से नहीं है, बल्कि गर्भस्थ शिशु से लेकर वयस्क होने वाले व्यक्ति तक से है। बालक शब्द उन विभिन्न अवस्थाओं का पर्याय है, जिनमें व्यक्ति परिपक्वता के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। बालक शब्द का प्रयोग अजन्मे बच्चे के साथ-साथ 18 वर्ष के किशोर के लिए भी किया जाता है। बालक शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है। कभी इसका प्रयोग शारीरिक तो कभी मानसिक अपरिपक्वता के लिए किया जाता है। लेकिन व्यावहारिक रूप से बालक शब्द कालानुक्रमिक आयु को दर्शाता है। श्रम शब्द का शाब्दिक अर्थ श्रम या मेहनत है। श्रम शब्द से तात्पर्य ऐसे कार्य से है, जिससे शरीर थक जाता है। श्रम का अर्थ ऐसे कार्य से है, जिसके दौरान शरीर शिथिल होने लगता है। जीविका या धन कमाने के लिए जो कार्य किया जाता है, उसे श्रम कहते हैं। अत: श्रम वह कार्य है, जिससे व्यक्ति धन कमाता है तथा अपने और अपने परिवार के लिए भोजन, मकान, वस्त्र और मूलभूत आवश्यकताओं की व्यवस्था करता है। बाल श्रम बच्चों द्वारा किया जाने वाला कार्य है। दूसरे शब्दों में 18 वर्ष से कम आयु का व्यक्ति अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कार्य करता है, उसे बाल श्रम कहते हैं। लेकिन बाल श्रम एक ऐसा काम है जिसके कारण बच्चे अपना बचपन खो देते हैं [40]। दूसरे अर्थों में बाल श्रम से तात्पर्य ऐसे काम से है जो बच्चों के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से खतरनाक है। बाल श्रम वह कार्य है जो बच्चों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है, उनकी रचनात्मकता को मारता है, उनकी मासूमियत को नष्ट करता है और उनकी पढ़ाई को खत्म कर देता है।

1.2. बाल श्रम की परिभाषा:

बाल श्रम एक व्यापक अवधारणा है। बाल श्रम को परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। बाल श्रम की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। बाल श्रम की परिभाषा में अंतर है। विभिन्न विद्वानों और संगठनों ने बाल श्रम को अलग-अलग तरीकों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। बाल श्रम की परिभाषा निम्नलिखित है:

ILO के अनुसार "बाल श्रम एक ऐसा कार्य है जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी क्षमता और उनकी गरिमा से वंचित करता है और जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हानिकारक है। बाल श्रम उन्हें स्कूल जाने के अवसर से वंचित करके उनकी स्कूली शिक्षा में बाधा डालता है। बाल श्रम उन्हें जल्दी स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर करता है।"

1.3. भारत में बाल श्रम के कारण:

वर्तमान समय में बाल श्रम बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बाल श्रम को बढ़ावा देने के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं। बाल मजदूरी के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं बाल मजदूरी का एक प्रमुख कारण होने के अलावा गरीबी भी एक बड़ी समस्या है। गरीबी से तात्पर्य उस स्थिति से है, जिसमें व्यक्ति अपनी बुनियादी जरूरतों जैसे रोटी, कपड़ा और मकान को भी पूरा नहीं कर पाता है। बाल मजदूरी करने वाले बच्चे ज्यादातर गरीब परिवारों से होते हैं। गरीबी के कारण उनके पास अपने लिए खाना, कपड़ा और मकान खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं होते हैं। ये परिवार इतने गरीब हैं कि इन्हें एक वक्त का खाना भी मुश्किल से मिल पाता है। कभी-कभी इन परिवारों को कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता है। इसलिए इन गरीब परिवारों के माता-पिता सोचते हैं कि अगर उनके बच्चे भी कुछ काम करने लगेंगे तो उन्हें कुछ और पैसे मिलेंगे। इसलिए इन गरीब परिवारों के माता-पिता अपने बच्चों से बाल मजदूरी करवाते हैं। इस बाल मजदूरी से मिले पैसों से ये गरीब परिवार अपने लिए खाना, कपड़ा और मकान का इंतजाम कर पाते हैं। गरीब परिवारों के माता-पिता सोचते हैं कि घर में जितने ज्यादा कमाने वाले सदस्य होंगे, उन्हें उतना ही ज्यादा पैसा मिलेगा। इसलिए गरीब परिवारों के माता-पिता अपने बच्चों से बाल मजदूरी करवाते हैं। कई गरीब बच्चे अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए खुद भी बाल मजदूरी करते हैं।

1.3.1. बढ़ती जनसंख्या –

बढ़ती जनसंख्या बाल श्रम का एक प्रमुख कारण होने के साथ-साथ अपने आप में एक बड़ी समस्या भी है [5]। जनसंख्या किसी भी देश का मानव संसाधन होती है। अगर किसी देश की जनसंख्या उस देश में मौजूद भौतिक संसाधनों के अनुकूल है तो यह किसी भी देश के विकास के लिए अच्छा है। अगर किसी देश की जनसंख्या उस देश में मौजूद भौतिक संसाधनों के अनुकूल है तो यह एक समस्या बन जाती है। किसी भी देश की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि एक समस्या पैदा करती है। भारत में भी जनसंख्या वृद्धि एक समस्या बनी हुई है। चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। लेकिन भारत में मौजूद भौतिक संसाधन जनसंख्या के अनुपात में बहुत कम हैं। भारत की जनसंख्या यहाँ उपलब्ध भौतिक संसाधनों से अधिक होने के कारण हर व्यक्ति को रोजगार, भोजन, कपड़ा, मकान, दवा और शिक्षा जैसी सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं। जिसके कारण कई परिवार गरीबी में जी रहे हैं। इसलिए कई गरीब परिवार अपने बच्चों से बाल श्रम करवाते हैं ताकि उन्हें बुनियादी ज़रूरतें मिल सकें, पैसे मिल सकें और वे अपना जीवन यापन कर सकें [43]।

1.3.2. भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार भी बाल श्रम का एक प्रमुख कारण है। भारत में गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जाती हैं। इन योजनाओं में गरीब परिवारों और अनाथ बच्चों के लिए सरकार की ओर से पैसे भी दिए जाते हैं। गरीब बेरोजगार परिवारों को रोजगार देने के लिए सरकार की ओर से कई तरह के कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। लेकिन इन योजनाओं का लाभ सही लोगों को नहीं मिल पाता। कई मंत्री, सरकारी कर्मचारी इन योजनाओं में झूठे लोगों को शामिल करके सारा पैसा खुद ही हड़प लेते हैं। इन गरीब लोगों को आर्थिक सहायता के लिए छोटी सी रकम लेने के लिए भी सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत देनी पड़ती है। रिश्वतखोरी से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है [44]। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के कारण इस गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो पाता। इसलिए ये गरीब परिवार अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अपने बच्चों से बाल मजदूरी भी करवाते हैं।

1.3.3. बढ़ती महंगाई

बढ़ती महंगाई भी बाल मजदूरी का एक कारण है। महंगाई बढ़ने से खाने-पीने की चीजें, कपड़े और दूसरी चीजों के दाम बढ़ जाते हैं। बढ़ती महंगाई का सीधा असर गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों पर पड़ रहा है। मध्यम वर्गीय परिवार किसी तरह अपना गुजारा कर लेते हैं। लेकिन बढ़ती महंगाई का सबसे बुरा असर गरीब परिवारों पर पड़ रहा है। गरीब परिवारों के लिए एक वक्त के खाने के लिए भी पैसे जुटाना मुश्किल हो जाता है। बढ़ती महंगाई के कारण गरीब परिवारों को लगता है कि अगर घर में ज्यादा कमाने वाले होंगे तो उनकी मदद हो जाएगी। इसलिए गरीब परिवार अपने बच्चों से भी पैसे कमाने का काम करवाते हैं जिससे बाल मजदूरी को बढ़ावा मिलता है। कई बच्चे अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए खुद ही बाल मजदूरी करने लगते हैं।

1.3.4. अशिक्षा

अशिक्षा भी बाल मजदूरी का एक कारण है। बाल मजदूरी में लगे अधिकांश बच्चे अशिक्षित या कम पढ़े-लिखे होते हैं। शिक्षा के अभाव में बच्चे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होते। शिक्षित न होने के कारण बच्चे भी यह नहीं समझ पाते कि उनके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। इसलिए बच्चे बाल मजदूरी को बुरा नहीं मानते। अशिक्षा का मुख्य कारण महंगी शिक्षा भी है। आजकल शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि गरीब परिवार अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी वहां नहीं पढ़ते। महंगी शिक्षा के कारण गरीब परिवार बच्चों को शिक्षा दिलाने के बजाय किसी तरह के रोजगार में लगाना बेहतर समझते हैं। बच्चों को ऐसी आर्थिक गतिविधियों में शामिल करने से बाल मजदूरी को बढ़ावा मिलता है [47, 48]।

1.3.5. बेरोजगारी

बेरोजगारी अपने आप में एक समस्या है और बाल मजदूरी का एक कारण भी है। बेरोजगारी से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें कोई व्यक्ति काम करने में सक्षम है और काम करने के लिए तैयार भी है लेकिन उसे किसी तरह का काम नहीं मिलता। आजकल जनसंख्या इतनी बढ़ गई है कि हर व्यक्ति को रोजगार नहीं दिया जा सकता। जिन्हें रोजगार मिलता भी है, वह रोजगार उनकी योग्यता के अनुसार नहीं होता। जो लोग रोजगार में लगे हैं, उन्हें भी उनके काम के हिसाब से पैसे नहीं दिए जाते। कारखानों और उद्योगों के मालिक अपने उद्योगों के लिए सस्ते मजदूर चाहते हैं। उद्योगपति चाहते हैं कि मजदूरों से कम पैसे में अधिक से अधिक काम करवाया जाए। बच्चे सस्ते मजदूरों का

एक बेहतरीन विकल्प हैं। इसलिए, बच्चों को विभिन्न कारखानों और उद्योगों में आसानी से काम मिल जाता है। बच्चों को कम पैसे दिए जाते हैं और उनसे बड़ों की तुलना में अधिक काम करवाया जाता है। बच्चों की कोई मांग नहीं होती और न ही वे किसी तरह की शिकायत करते हैं। बच्चे कोई हड़ताल नहीं कर सकते, इसलिए उन्हें नियंत्रित करना बहुत आसान है। इन कारणों से वर्तमान समय में बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार देने का चलन लगातार बढ़ रहा है। जो बाल श्रम में वृद्धि का मुख्य कारण है।

1.3.6. विभिन्न बीमारियाँ

विभिन्न प्रकार की खतरनाक बीमारियाँ भी बाल श्रम को बढ़ावा देने का एक प्रमुख कारण हैं। यदि परिवार का कमाने वाला बीमार हो जाता है, तो सारा पैसा उसके इलाज पर खर्च हो जाता है। इलाज का खर्च इतना अधिक होता है कि परिवार कर्जदार हो जाता है। परिवार के कमाने वाले के बीमार होने से परिवार की आय का स्रोत बंद हो जाता है। परिवार में पैसे आने के सभी साधन बंद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को अपने परिवार की मदद करने के लिए बाल श्रम करना पड़ता है।

1.3.7. अनाथ बच्चे

कई बच्चों के माता-पिता कई तरह की बीमारियों या दुर्घटनाओं के कारण मर जाते हैं। माता-पिता की मृत्यु के कारण बच्चे अनाथ हो जाते हैं। अनाथ बच्चों की देखभाल या पालन-पोषण करने वाला कोई नहीं होता। इन अनाथ बच्चों को भोजन, कपड़े और घर जैसी सुविधाएँ नहीं मिलतीं। अनाथ बच्चों को अपने भोजन की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती है। इन बच्चों को खाने के लिए पैसे की ज़रूरत होती है। बच्चों को अपना जीवन जीने के लिए भी पैसे की ज़रूरत होती है। अनाथ बच्चे पैसे कमाने के लिए बाल मजदूरी करने को मजबूर होते हैं।

1.3.8. युद्ध और गृहयुद्ध

युद्ध किसी भी समाज के लिए अच्छा नहीं होता। युद्ध हमेशा विनाश और तबाही लाता है। पूरी दुनिया को दो विश्व युद्धों का सामना करना पड़ा। पूरी दुनिया ने इन विश्व युद्धों से हुई तबाही देखी है। युद्धों में जन और धन की भारी हानि होती है। युद्ध के कारण कई लोग मारे जाते हैं, खो जाते हैं और कई लोग बेघर हो जाते हैं। युद्ध में परिवार के बुजुर्गों की मृत्यु के कारण कई बच्चे अनाथ और बेघर हो जाते हैं। इन बच्चों की देखभाल और पालन-पोषण

करने वाला कोई नहीं होता। बच्चों को वहाँ पेट भरने के लिए पैसे की ज़रूरत होती है, जिसके लिए उन्हें बाल मजदूरी करनी पड़ती है। युद्ध के कारण बेघर और विस्थापित हुए परिवार भी पैसे कमाने के लिए खुद मेहनत करते हैं और अपने बच्चों से बाल मजदूरी भी करवाते हैं।

1.3.9. प्राकृतिक आपदाएँ

प्राकृतिक आपदाओं को रोकने में मनुष्य भी आज तक सफल नहीं हो पाया है। प्राकृतिक आपदाओं को रोकना मनुष्य के वश में नहीं है। प्राकृतिक आपदाएँ बहुत विनाश करती हैं। हर साल बाढ़, तूफ़ान जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। भारत में अकाल, सूखा, भूकंप और भूस्खलन जैसी आपदाएँ आती रहती हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं से जान-माल की भारी हानि होती है। इन प्राकृतिक आपदाओं में कई लोग मारे जाते हैं, कई परिवार बेघर हो जाते हैं और कई बच्चे अनाथ हो जाते हैं। इन विस्थापित परिवारों और अनाथ बच्चों के सामने जीविका की समस्या खड़ी हो जाती है। जीवन यापन के लिए धन की आवश्यकता होती है। ये अनाथ बच्चे धन कमाने के लिए काम करते हैं। जिससे बाल श्रम की समस्या और बढ़ जाती है।

1.4. भारत में बच्चों के मुख्य कार्य:

बाल श्रमिक के रूप में कार्य करना, दुनिया भर के बच्चे अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग व्यवसायों में लगे हुए हैं। बच्चों द्वारा किए जाने वाले मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं-

1.4.1. कृषि

कृषि अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र में आती है। कृषि कार्य पूरे विश्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। कृषि के माध्यम से ही हमें भोजन या खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। किसी भी देश का खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। यदि कोई देश खाद्यान्न के क्षेत्र में दूसरे देश पर निर्भर है, तो वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर पाएगा। खाद्य पदार्थों के मामले में आत्मनिर्भर न होने के कारण निर्यातक देश आयातक देश को अपना गुलाम बना लेते हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी भारत की 68 प्रतिशत आबादी कृषि क्षेत्र में काम करती है। खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर है। भारत पहले खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था। 1966 में हरित क्रांति के बाद भारत खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गया। भारत में कृषि मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में की जाती है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से बच्चों को कृषि कार्य में लगाया जाता है। बच्चों को कृषि क्षेत्र में आसानी से नौकरी मिल जाती है क्योंकि उन्हें इस काम के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण और कौशल की आवश्यकता नहीं होती है। कम जमीन वाले किसान और भूमिहीन किसान भी अपने बच्चों को कृषि क्षेत्र में काम करने के लिए लगाते हैं [46]। कृषि क्षेत्र में बच्चे जानवरों की देखभाल करते हैं, उन्हें पानी पिलाते हैं, जानवरों को नहलाते हैं और जानवरों को चराते हैं। इसके अलावा बच्चे खेतों में खाद डालने, बीज बोने, पानी देने और फसल से अतिरिक्त घास हटाने का काम करते हैं। इन कार्यों के अलावा, बच्चे फसलों को विभिन्न जंगली जानवरों से बचाने के लिए फूल, फल और सब्जियां तोड़ने का काम भी करते हैं [45]।

1.4.2. कालीन बुनाई

भारत के हाथ से बने सामान की मांग प्राचीन काल से ही पूरे विश्व में रही है। प्राचीन काल में भारत हस्तनिर्मित कालीनों का निर्यात विदेशों में करता था। अंग्रेजों के आगमन और उनके द्वारा औद्योगीकरण और मशीनीकरण के प्रयोग से भारत की यह महान कला नष्ट होने लगी। स्वतंत्रता के बाद, भारत में कालीन बनाने और बुनाई की कला को पुनर्जीवित करने के प्रयास किए गए।

भारत सरकार के इन विभिन्न प्रयासों के परिणामस्वरूप, आज भारत हाथ से बुने हुए ऊनी, रेशमी और कढ़ाई वाले कालीनों का एक प्रमुख निर्यातक बन गया है। इन हस्तनिर्मित कालीनों के निर्यात से भारत को किसकी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है? भारत में बहुत से बच्चे कालीन बनाने और बुनाई के काम में लगे हुए हैं। बच्चों के कालीन निर्माण में लगे होने का मुख्य कारण यह है कि कालीन बनाने का काम मशीनों से नहीं किया जा सकता। कालीन में बहुत बारीक कढ़ाई की जाती है जो केवल हाथों से ही संभव है। बच्चों की उँगलियाँ आकार में छोटी होती हैं, जिससे वे किसी भी तरह की कढ़ाई का काम आसानी से कर लेते हैं, इसलिए बच्चों का इस्तेमाल ज़्यादातर कढ़ाई और कालीन बुनाई के काम में किया जाता है [41,42]।

1.4.3. होटल, ढाबे, रेस्टोरेंट और चाय की दुकानें

हर साल कई विदेशी पर्यटक भारत घूमने के लिए आते हैं। ये विदेशी पर्यटक विभिन्न होटलों में रुकते हैं और रेस्टोरेंट और ढाबों में खाना खाते हैं। इन विदेशी पर्यटकों के आने से होटल और रेस्टोरेंट के मालिकों की अच्छी खासी कमाई होती है। इन होटलों और रेस्टोरेंट के मालिक पैसे बचाने के लिए बच्चों को कम पैसे में काम पर रखते हैं।

ढाबे, रेस्टोरेंट और चाय की दुकानों में काम करने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण और योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए बच्चों को यहाँ आसानी से काम मिल जाता है। बच्चे बिना किसी शिकायत के सुबह से शाम तक चुपचाप काम करते हैं। बच्चे सुबह-सुबह इन जगहों पर आते हैं और कुर्सी-मेज साफ करना, फर्श साफ करना, बर्तन साफ करना, फल-सब्जियाँ साफ करना आदि जैसे कई तरह के सफाई के काम करते हैं। ये बच्चे इन जगहों पर अलग-अलग तरह के काम करते हैं जैसे चाय बनाना, सब्ज़ियाँ काटना, थकावट दूर करना, खाना बनाना, गंदे बर्तन उठाना, चाय-शराब परोसना आदि।

1.4.4. घरेलू नौकर के तौर पर काम करना

भारत में कई बच्चे घरेलू नौकर के तौर पर काम करते हैं। घरेलू नौकर के रूप में काम करने के लिए किसी योग्यता और प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। व्यवसायी, धनी जमींदार, सरकारी कर्मचारी और उद्योगपति आदि के घरों में बच्चे घरेलू नौकर के रूप में काम करते हैं। बच्चे वयस्कों की तुलना में कम पैसे में और अपने नियोक्ता के अनुसार काम करते हैं, इसलिए उन्हें घरेलू काम के लिए नौकर के रूप में अधिक रखा जाता है। आजकल कई परिवारों में पति और पत्नी दोनों काम करते हैं और वे घरेलू काम करने में सक्षम नहीं होते हैं, इसलिए उन्हें घरेलू काम करने के लिए घरेलू मदद की आवश्यकता होती है।

घरेलू मदद के लिए बच्चे आसानी से उपलब्ध हैं। लड़कियों को ज्यादातर घरेलू नौकर के रूप में काम पर रखा जाता है। बच्चे इन घरों में अलग-अलग तरह के काम करते हैं। घरों में पोछा लगाना, सफाई करना, खाना बनाना, बर्तन मांजना, कपड़े धोना, बच्चों की देखभाल करना, परिवार के सदस्यों और मेहमानों को खाना परोसना, कपड़ों पर प्रेस करना, घर के काम-काज आदि। बगीचे में पौधों को पानी देना, बाजार से फल-सब्जियां लाना आदि।

1.4.5. राशन की दुकान, हलवाई की दुकान, बेकरी, किराना दुकान, प्रोविजनल स्टोर व अन्य दुकानें

राशन की दुकानों, हलवाई की दुकानों, बेकरी, किराना स्टोर, अस्थाई दुकानों व अन्य दुकानों पर बड़ी संख्या में बच्चे काम करते हैं। इन दुकानों पर काम करने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती। बच्चे कम पैसे में काम करते हैं इसलिए उन्हें काम के लिए दुकानों में ज्यादा रखा जाता है। इन दुकानों पर ज्यादातर लड़कों को ही काम पर रखा जाता है। बच्चे सुबह जल्दी आकर दुकानों में झाड़ू-पोछा व सफाई का काम करते हैं। बच्चे ग्राहक के घर सामान पहुंचाते हैं। बच्चे इन दुकानों में विभिन्न प्रकार के काम करते हैं जैसे दुकानों में विभिन्न वस्तुओं को सजाना, ग्राहकों की मांग पर सामान उठाना, सामान पैक करना, सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, बर्तन धोना, भट्टी में आग लगाना आदि।

1.4.6. कारखाने और उद्योग

भारत में कारखानों और उद्योगों में बड़ी संख्या में बच्चे काम करते हैं। बच्चों को उन कारखानों और उद्योगों में लगाया जाता है जिनके लिए किसी विशेष प्रशिक्षण और योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है जैसे कांच बनाना, चूड़ी बनाना, चमड़ा बनाना, प्लास्टिक के सामान बनाना। इन कारखानों और उद्योगों के मालिकों को अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है। बच्चे सस्ते श्रम का अच्छा विकल्प हैं, इसलिए उन्हें उद्योगों में अधिक रोजगार दिया जाता है। बच्चे इन कारखानों और उद्योगों में विभिन्न प्रकार के काम करते हैं जैसे सामान ढोना, चूड़ियाँ बनाना, लोहा गर्म करना आदि [49, 50]।

1.4.7. लघु और कुटीर उद्योग

भारत में विभिन्न प्रकार के लघु और कुटीर उद्योग हैं। इस लघु और कुटीर उद्योग में कई बच्चे कार्यरत हैं। इस लघु एवं कुटीर उद्योग में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे मुर्गी पालन, मछली पालन, सूअर पालन, मधुमक्खी पालन, बकरी पालन आदि। इन लघु एवं कुटीर उद्योगों में बच्चे विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं जैसे मुर्गियाँ, सूअर, बकरी, मछली पालन, नहलाना आदि। बकरियों, सूअरों और मुर्गियों की सफाई आदि।

1.4.8. हस्तशिल्प उद्योग

भारत प्राचीन काल से ही हस्तशिल्प उद्योग के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध रहा है। हस्तशिल्प उद्योग में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल हैं: मिट्टी के बर्तन बनाना, कठपुतली बनाना, चीनी मिट्टी की चीज़ें, कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग, घर की सजावट के फर्नीचर और चीज़ें, मिट्टी के शिल्प, जूट के हस्तशिल्प, सोने, चाँदी, तांबे और पीतल के बर्तन और सजावटी सामान बनाना, लकड़ी की सजावटी वस्तुएँ बनाना आदि। भारत में हस्तशिल्प उद्योग में बच्चों को रोजगार दिया जाता है। बच्चे हस्तशिल्प उद्योग में कई तरह के काम करते हैं जैसे लकड़ी काटना, मिट्टी के बर्तन बनाना, कढ़ाई और बुनाई, आभूषणों में रत्न लगाना आदि।

1.4.9. पटाखे और बीड़ी बनाना

भारत में बड़ी संख्या में बच्चे पटाखे बनाने और बीड़ी बनाने के काम में लगे हुए हैं। पटाखे और बीड़ी बनाने का काम बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है। बच्चे पटाखे बनाने और बीड़ी बनाने के क्षेत्र में कई तरह के काम करते हैं। पटाखों में बारूद रखना, बीड़ी बनाने के लिए पत्ते लाना, बीड़ी में तम्बाकू भरना आदि।

1.4.10. खनन कार्य

खनन कार्य बहुत खतरनाक काम है। खनन कार्यों में बच्चों का काम करना प्रतिबंधित है, लेकिन फिर भी बच्चे इस क्षेत्र में काम करते हैं। बच्चे खदानों में कई तरह के काम करते हैं जैसे मिट्टी खोदना, मिट्टी को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना, ट्रकों में मिट्टी डालना आदि।

1.5. अध्ययन का महत्व

बचपन जीवन का सबसे प्यारा दौर होता है। एक बच्चा जीवन के सभी दुखों, तनावों और बाधाओं से अनजान होता है। एक बच्चे की मासूमियत उसकी सबसे कीमती संपत्ति होती है। एक बच्चे की कल्पना का अप्रतिबंधित प्रवाह, दुनिया की भोली व्याख्या और असंभव को प्राप्त करने और अनंत तक पहुँचने की मासूम इच्छा होती है। लेकिन क्या होगा अगर एक बच्चे को कल्पना करने के बजाय सोचने के लिए मजबूर किया जाए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपनी मासूमियत छोड़ने और चालाकी भरा नज़रिया अपनाने के लिए मजबूर किया जाए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपने परिवार के लिए कमाने की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए मजबूर किया

जाए, जबकि उसे खिलौनों और दोस्तों के साथ खेलना चाहिए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपने बेफिक्र जीवन का आनंद लेने के बजाय जीवित रहने के लिए संघर्ष करने के लिए मजबूर किया जाए? दुर्भाग्य से, समाज के एक बड़े हिस्से के लिए बच्चा उत्पादन का एक कारक है। बाल श्रम गरीब परिवारों के लिए आय का एक स्रोत है, ILO ब्यूरो ऑफ़ स्टैटिस्टिक्स द्वारा किए गए एक अध्ययन में "बच्चों के काम को आवश्यक माना गया था। (मेहरा केरपालमैन, 1996) कुछ मामलों में, अध्ययन में बच्चे की आय कुल घरेलू आय का 34% से 37% के बीच थी, जो एक गरीब परिवार के महत्व को प्रकट करती है।" जनरल अन्नान कोफी (2007): बाल श्रम के गंभीर परिणाम हैं जो बचपन के वर्षों की तुलना में व्यक्ति और समाज के साथ बहुत लंबे समय तक रहते हैं। युवा श्रमिकों को न केवल खतरनाक कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें दीर्घकालिक शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक तनाव का भी सामना करना पड़ता है [51-55]। उन्हें बेरोजगारी और निरक्षरता का सामना करना पड़ता है। बाल श्रम में लगे बच्चों की वर्तमान संख्या पर नज़र रखना कठिन है। सरकार बाल श्रम के बारे में मौजूदा डेटा एकत्र या विश्लेषण नहीं करती है, क्योंकि लोगों को पता है कि बाल श्रम कानून के खिलाफ है और वे परेशानी में नहीं पड़ना चाहते (देवी, 1985, 37)। आंकड़े 1981 में एकत्र की गई जानकारी पर आधारित हैं (HRW 1996, 122)। यूनिसेफ का अनुमान है कि "14 वर्ष से कम आयु के 75 से 90 मिलियन बाल श्रमिक हैं"। (HRW-1996, 122)। वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा की गई राष्ट्रीय जनगणना में 114 मिलियन बाल श्रमिक थे; श्रम मंत्रालय 37 मिलियन के बारे में बात करता है जो कि दोगुना होगा। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मानता है कि सौ मिलियन बाल श्रमिक हैं। एनएसएसओ के सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, जो 1972 से हर पांच साल में विस्तृत रिपोर्ट देता है, यह संख्या 84 मिलियन है, एक अन्य अनुमान स्कूल न जाने वाले स्कूली उम्र के बच्चों की संख्या पर आधारित है, यह मान कर चला जाता है कि ये बच्चे काम करते हैं और इस प्रकार 62 मिलियन बाल श्रमिक हैं (भारत बाल श्रम, एनएसएसओ, 2006)। भारत में बाल श्रम पर किए गए शोधों की कोई कमी नहीं है। लेकिन अधिकांश अध्ययन पहले से पहचाने गए उद्योगों से संबंधित हैं, जैसे अलीगढ़ का ताला उद्योग, मिर्जापुर-भदोही क्षेत्र का कालीन उद्योग, बीड़ी उद्योग, शिव काशी का पटाखा उद्योग, फिरोजाबाद की चूड़ी बनाने वाली इकाइयां आदि। केवल उन क्षेत्रों को अध्ययन के लिए लिया गया, जिनके लिए कुछ संगठनों द्वारा उठाए गए मुद्दे के कारण हो-हल्ला हुआ था। छोटी चाय की दुकानों, छोटे दुकानदारों या सड़क किनारे के ढाबों पर बड़े पैमाने पर बाल श्रम ने विद्वानों का ध्यान आकर्षित नहीं किया है। प्रस्तुत कार्य में आगरा जिले में सड़क किनारे जूता उद्योग [5], उनमें बाल रोजगार तथा उसके बाद समाज की ऐसी स्थिति के कारणों तथा उसके प्रभाव का अध्ययन करने का प्रस्ताव है।

1.6. उद्देश्य

1. समाज में बाल श्रम की मात्रा को मापना।

2. बाल श्रम की संरचना को समझना-

(ए) सामाजिक संरचना: धर्म के अनुसार, मामले के अनुसार, क्षेत्र के अनुसार, तथा आयु के अनुसार।

(बी) आर्थिक संरचना: माता-पिता का व्यवसाय तथा आय संरचना।

3. बाल श्रम पर प्रवास का प्रभाव।

4. बाल श्रम के कारणों का विश्लेषण करना- सामाजिक बनाम आर्थिक कारण।

5. बाल श्रम के बच्चों के मनोविज्ञान, उनके स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा तथा उनके पारिवारिक जीवन आदि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

1.7. परिकल्पनाएँ

अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण करने का प्रस्ताव है

1. कानून बच्चों को श्रम के रूप में काम पर रखने की प्रथा को नियंत्रित करने में विफल रहे हैं।

2. बाल श्रम बड़े पैमाने पर है तथा आधिकारिक आँकड़े अवास्तविक हैं।

3. छोटे उत्पादक और छोटे व्यवसाय में बाल श्रम की घटनाएं बड़ी इकाइयों की तुलना में अधिक होती हैं।

4. बच्चों को रोज़ी-रोटी कमाने के लिए घर से दूर धकेलने में सामाजिक परिस्थितियाँ अधिक शक्तिशाली होती हैं।

5. स्वयं सहायता समूहों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा दी जाने वाली सेवाएँ वास्तविक लाभार्थी तक शायद ही पहुँच पाती हैं।

1.8. शोध पद्धति

इस अध्ययन के लिए डेटा संग्रह निम्नलिखित तरीके से किया गया था। इसमें मुख्य सूचनादाता साक्षात्कार, बाल साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चा, अवलोकन, प्रश्नावली और इसी तरह के अन्य तरीके शामिल थे। नीचे, स्पष्टीकरण दिए गए हैं कि प्रत्येक विधि का किस हद तक उपयोग किया गया था और शोध डेटा प्राप्त करने में यह कितना प्रासंगिक था।

फील्डवर्क शुरू होने से पहले, आगरा जिले के जूता उद्योग में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए साहित्य की समीक्षा बहुत महत्वपूर्ण थी। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से आगरा जिले में अध्ययन के लिए यह महत्वपूर्ण विषय है "**बाल श्रम एक सामाजिक दुर्व्यवहार: आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में एक अध्ययन**"

यह जनगणना सर्वेक्षण (प्राथमिक डेटा) आधारित अध्ययन है जिसके लिए जानकारी शोधकर्ता द्वारा स्वयं एकत्र की गई है। जूता उद्योग का सर्वेक्षण करने के पश्चात बाल श्रम से आंकड़े एकत्र करने के लिए एक अनुसूची तैयार की गई है। द्वितीयक आंकड़े विभिन्न पुस्तकालयों एवं संस्थाओं जैसे योजना आयोग का पुस्तकालय, एनएसएसओ, बाल श्रम संस्थान नोएडा, साथ ही लखनऊ, रतन टाटा पुस्तकालय, दिल्ली, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट, भारत सरकार के एचआरडब्ल्यू प्रकाशन से लिए गए हैं, जो सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करने में सहायक रहे हैं।

प्रारंभिक रूप से विद्यमान साहित्य की समीक्षा तैयार की गई है, तत्पश्चात आगरा जिले के सड़क किनारे जूता उद्योग के आंकड़े एकत्र किए गए हैं। संरचना में परिवर्तन जानने के लिए आंकड़ों को कई प्रकार से वर्गीकृत किया गया है तथा तत्पश्चात तालिकाएं तैयार की गई हैं। नीतिगत परिवर्तनों का अध्ययन विभिन्न सरकारी प्रकाशनों के आधार पर किया गया है तथा बाल श्रम के आंकड़ों के आधार पर उनके प्रभावों की जांच की गई है।

मुद्दों की समुचित जांच करने के पश्चात अवलोकन किया गया है तथा नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं।

लिंग, आयु, धर्म, जाति समूह, परिवार का आकार, परिवार का प्रकार, बाल श्रमिकों की शिक्षा, बाधित शिक्षा, शिक्षा की इच्छा, बाल श्रम में रुचि तथा शिक्षा दोनों के संदर्भ में, किसी अन्य नौकरी में जाना, अंशकालिक नौकरी करना चाहते हैं, माता-पिता का व्यवसाय, माता-पिता द्वारा किया जाने वाला वही काम, उनकी सुरक्षा के लिए कोई व्यवस्था, काम के घंटे, काम के घंटे, बाल श्रम के विरुद्ध शिकायत, परिवार की आय, श्रमिकों की श्रेणी, बाल श्रमिकों की संख्या, परिवार का प्रकार, बाल श्रमिकों के माता-पिता का शैक्षिक स्तर, बाल श्रम से संतुष्टि तथा बाल श्रम से मुक्त।

- श्रमिक अनाथ हैं, परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, परिवार पर कोई कर्ज नहीं है, माता-पिता द्वारा बाल श्रम के लिए प्रेरित किया जाता है, पढ़ाई में रुचि नहीं है, बाल श्रम के रूप में बाल श्रम के कार्य में शामिल होने के कारणों के बारे में जानना चाहते हैं। बेरोजगारी और अल्परोजगार के कारण बाल श्रम, मौजूदा कानूनों के बारे में बाल श्रमिकों की अज्ञानता और माता-पिता को पता है कि बाल श्रम एक अपराध है।
- तीसरे प्रश्न का उद्देश्य बाल श्रम की इच्छा, स्वास्थ्य की स्थिति, काम में आने वाली कठिनाइयाँ, खतरनाक काम का सामना करना, नियोक्ता के बुरे व्यवहार का सामना करना, खराब कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना, मानसिक रूप से बाल श्रम की कठिनाइयों और शारीरिक दबाव, गंदे वातावरण में काम करना, शारीरिक समस्याएँ, शरीर में दर्द, कभी-कभी बुखार, गंभीर बीमारी, शारीरिक दुर्बलता, अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ, बुरी लत, धूम्रपान की लत, तम्बाकू की लत, (शराब) पीना और धूम्रपान, तम्बाकू चबाना, (शराब) पीना सभी व्यसनों के बारे में जानना है।
- मजदूर बनने के बाद परिवार की आय में वृद्धि, भाई-बहनों की शिक्षा का स्तर बढ़ा, स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार, परिवार के निर्णय लेने में भागीदारी में वृद्धि और माता-पिता पर निर्भरता कम हुई, मैं जानना चाहता हूँ।
- पाँचवें प्रश्न का उद्देश्य बाल श्रम की सामाजिक स्थिति, बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति के व्यवहार के संदर्भ में बाल श्रम का सामाजिक प्रभाव आकलन, क्या बाल श्रमिकों को समाज में किसी भी सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, सामाजिक अपमान का सामना करना पड़ता है, आर्थिक अपमान का सामना करना पड़ता है। मनोवैज्ञानिक दबाव और सामाजिक अपमान, वित्तीय अपमान, मनोवैज्ञानिक दबाव सभी अपमान हैं जिनका सामना करना पड़ता है।

1.9. अध्ययन का क्षेत्र:

आगरा भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के तट पर स्थित एक शहर है, जो राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से लगभग 230 किलोमीटर (140 मील) दक्षिण-पूर्व और राज्य की राजधानी लखनऊ से 330 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। लगभग 1.6 मिलियन की आबादी के साथ, आगरा उत्तर प्रदेश का चौथा सबसे अधिक आबादी वाला शहर और भारत का तेईसवाँ सबसे अधिक आबादी वाला शहर है।

आगरा का उल्लेखनीय ऐतिहासिक काल सिकंदर लोदी के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ, लेकिन शहर का स्वर्ण युग 16वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगलों के साथ शुरू हुआ। आगरा भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे प्रमुख शहर था और मुगल सम्राटों बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के अधीन मुगल साम्राज्य की राजधानी था। मुगल शासन के तहत, आगरा शिक्षा, कला, वाणिज्य और धर्म का केंद्र बन गया और आगरा किला, सिकंदरा और आगरा के सबसे बेशकीमती स्मारक, ताजमहल का निर्माण देखा, जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में 1632 और 1648 के बीच बनवाया था।

18वीं शताब्दी के अंत में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ, शहर क्रमिक रूप से पहले मराठों और बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन चला गया। स्वतंत्रता के बाद, आगरा एक औद्योगिक शहर के रूप में विकसित हुआ, जहाँ पर्यटन उद्योग के साथ-साथ फुटवियर, चमड़ा और अन्य विनिर्माण उद्योग भी फल-फूल रहे हैं। ताजमहल और आगरा किला यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं। शहर में हल्की सर्दियाँ, गर्म और शुष्क ग्रीष्मकाल और मानसून का मौसम होता है, और यह अपने मुगलई व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। आगरा को दिल्ली और जयपुर के साथ गोल्डन ट्राइंगल पर्यटन सर्किट में शामिल किया गया है; और उत्तर प्रदेश हेरिटेज आर्क, लखनऊ और वाराणसी के साथ उत्तर प्रदेश का एक पर्यटन सर्किट है।

ताजमहल और अन्य ऐतिहासिक स्मारकों की मौजूदगी के कारण, आगरा में पर्यटन उद्योग के साथ-साथ पिएत्रा ड्यूरा, संगमरमर की जड़ाई और कालीन जैसे शाही शिल्प भी फल-फूल रहे हैं।

40% आबादी मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है, और अन्य लोग चमड़े और जूते के व्यवसाय और लोहे की ढलाई पर निर्भर हैं। 2007 में वाराणसी के बाद आगरा भारत में दूसरा सबसे अधिक स्वरोजगार वाला शहर था, उसके बाद भोपाल, इंदौर और पटना का स्थान था। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के अनुसार, 1999-2000 में, शहर में हर 1,000 कार्यरत पुरुषों में से 431 स्वरोजगार में थे, जो 2004-05 में बढ़कर 1,000 में 603 हो गया।

1.10. विधि:

विभिन्न डेटा संग्रह तकनीकों, साक्षात्कार अनुसूची और गैर-प्रतिभागी अवलोकन का उपयोग करके 250 उत्तरदाताओं से अध्ययन डेटा एकत्र किया जाएगा। डेटा का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय विधि माध्य, माध्य और प्रतिशत आदि का विश्लेषण करेगी।

अध्याय-2

साहित्य की समीक्षा

2.1. साहित्य की चयनित अध्ययन समीक्षा

शुल्ट्ज टी 1961 और बैकर गैरी (1964) [57]: मानव पूंजी सिद्धांत विकसित किया, शिक्षा और अन्य प्रासंगिक कार्य प्रशिक्षण में निवेश को प्रोत्साहित किया क्योंकि इस तरह के निवेश से भविष्य में आय में वृद्धि होगी। तर्क यह है कि इस तरह के निवेश से, लोग उचित ज्ञान, कौशल या योग्यताएँ जमा करते हैं और इस तरह इन परिसंपत्तियों के बिना उन लोगों की तुलना में अधिक उत्पादक श्रम शक्ति बन जाते हैं, तदनुसार, बेहतर कौशल, लंबी शिक्षा और प्रासंगिक कार्य के अनुभव वाले व्यक्ति को अधिक उत्पादक माना जाता है और इस प्रकार वे उच्च आय की उम्मीद कर सकते हैं।

बरुआ, पी. (1977) [58] - बरुआ का अध्ययन "शहरी दिल्ली में कामकाजी बच्चे: कामकाजी बच्चों (5-14 वर्ष) पर एक शोध रिपोर्ट" सात चयनित व्यवसायों में घरेलू पूछताछ और तदर्थ सर्वेक्षणों पर आधारित है। कामकाजी बच्चों का चयन व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया था। 1992 के सर्वेक्षण में, केवल 60 घरों में 68 कामकाजी बच्चे थे और अन्य 110 कामकाजी बच्चों को सात व्यवसायों से चुना गया था, जैसे कि चाय की दुकान और ढाबे की घरेलू सेवाएं, जूता पॉलिश, ऑटोमोबाइल, साइकिल मरम्मत, चिथड़े और अन्य अपशिष्ट पदार्थों का संग्रह, समाचार पत्र / विक्रेता और दूध की बोतल डिलीवरी लड़का।

सिंह, आर. (1980) [59] - सिंह-आर. द्वारा किए गए अध्ययन "कार्य स्थितियों और बाल श्रम के कल्याण के लिए विभिन्न कानूनों का कार्यान्वयन" से पता चला कि कर्मचारी मौजूदा कानूनों के बारे में बहुत जागरूक थे। केवल 20 बच्चे बच्चों के रोजगार को विनियमित करने के लिए कानून के पक्ष में थे।

सिंह, मुसाफर, वी.डी. कुर्वा और खान.एस.ए. (1980) [60] - इस अध्ययन में "बॉम्बे में काम करने वाले बच्चों द्वारा एक अध्ययन" जिसमें विभिन्न नमूनाकरण विधियों के पक्ष और विपक्ष की जांच की गई। मुस्तफा सिंह

एट अल। उनके अध्ययन के लिए एक बहुस्तरीय नमूनाकरण प्रक्रिया अपनाई गई थी। यह मानते हुए कि कामकाजी बच्चे बॉम्बे शहर की झुग्गियों में रहते हैं, उन्होंने नौ प्रतिनिधि क्षेत्रों से दस झुग्गियों का चयन किया। प्रत्येक झुग्गी में काम करने वाले बच्चों की एक सूची इन क्षेत्रों के सभी घरों की जनगणना और नियमित अंतराल पर ब्रह्मांड के आकार के लगभग एक-तिहाई के आधार पर तैयार की गई थी। इस प्रकार अध्ययन के उद्देश्य के लिए 300 बच्चों (5-15 वर्ष की आयु के पुरुष और महिला) का चयन किया गया। बच्चों, माता-पिता और/या अभिभावकों के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार कार्यक्रम तैयार किए गए थे। कुछ नियोक्ताओं से भी पूछताछ की गई।

सिंह, आर. (1980) [61] - सिंह आर. द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला कि काम करने की स्थिति और बाल श्रम के कल्याण के लिए विभिन्न कानूनों के कार्यान्वयन "चिंतित हैं कि कर्मचारी मौजूदा कानूनों के बारे में बहुत अधिक जागरूक थे। केवल 20 बच्चे बच्चों के रोजगार को विनियमित करने वाले कानून के पक्ष में थे सिंह ने अध्ययन के लिए आंध्र प्रदेश का चयन किया

शर्मा, एस. (1982) [62] - शर्मा द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि काम करने वाले बच्चों को "बाल श्रम के शोषण और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की सीमा की जांच करने के लिए" पाया गया कि 565 उत्तरदाताओं को अपनी आजीविका सीखने के लिए प्रतिदिन 15 घंटे की आवश्यकता थी। 18 घंटे काम करना पड़ता था। 44% प्रतिदिन 10-15 घंटे काम करते थे। जहां तक मजदूरी के भुगतान का सवाल है, 815 उत्तरदाताओं को प्रति माह 50/- रुपये तक मिल रहे थे, जबकि केवल 35 उत्तरदाताओं को प्रति माह 100/- रुपये से अधिक मिल रहे थे।

शर्मा, एस. (1982) [63] - बाल श्रम के शोषण और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की जांच के लिए कामकाजी बच्चों पर किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि 565 उत्तरदाताओं को अपनी आजीविका कमाने के लिए 15 से 18 घंटे प्रति दिन काम करना पड़ा। मजदूरी के भुगतान के रूप में प्रति दिन 10-15 घंटे के लिए 44%, 815 उत्तरदाताओं को प्रति माह 50 रुपये तक मिल रहे थे, जबकि केवल 35 उत्तरदाताओं को प्रति माह 100 रुपये से अधिक प्राप्त हुए, शर्मा आंध्र राज्य में इसका अध्ययन करें। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO), (1986) : ने बाल श्रम को इस प्रकार परिभाषित किया है जिसमें "समय से पहले वयस्क जीवन जीने वाले बच्चे, अपने स्वास्थ्य और

शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हानिकारक परिस्थितियों में कम मजदूरी पर लंबे समय तक काम करना, कभी-कभी अपने परिवारों से अलग होना, अक्सर सार्थक जीवन से वंचित होना" शामिल हैं "बाल श्रम" की उनकी परिभाषा समय के साथ बदलती रहती है, आंशिक रूप से इस बात पर विवाद के कारण कि क्या हानिकारक माना जा सकता है। लेखन के समय, एक बाल मजदूर को सिम्पोक द्वारा 12 वर्ष से कम आयु के आर्थिक रूप से सक्रिय बच्चे के रूप में परिभाषित किया गया है जो प्रति सप्ताह 1 या अधिक घंटे काम करता है, एक आर्थिक रूप से सक्रिय बच्चा '14 और उससे कम' जो प्रति सप्ताह कम से कम 14 घंटे या प्रति सप्ताह 1 या अधिक घंटे ऐसी गतिविधियों में काम करता है जो "प्रकृति या परिस्थिति से खतरनाक" हैं, और एक बच्चा '17 और उससे कम' जो "बाल श्रम के बिना शर्त सबसे खराब रूप" (तस्करी किए गए बच्चे, बंधन या जबरन श्रम में बच्चे, सशस्त्र संघर्ष, वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी, अवैध गतिविधियाँ, ILO 2002) में काम करता है। ILO (2006a) का अनुमान है कि इस परिभाषा के तहत 2004 में दुनिया भर में 218 मिलियन बाल मजदूर थे।

त्रिपाठी, एन. (1991) [63] - यह अध्ययन "आदिवासी भारत में बाल श्रम का शोषण" इन बच्चों द्वारा सामना किए जाने वाले दुर्व्यवहार और शोषण के बारे में बात करता है, जहाँ वे प्रतिदिन 12 घंटे काम करते हैं और उन्हें रु. 1 से रु. 4 तक का भुगतान किया जाता है। प्रतिज्ञा की गई राशि के आधार पर और माता-पिता को प्रतिज्ञा किए गए लड़के की जगह एक और परिवार के सदस्य को प्रदान करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप शराब और धूम्रपान की दर अधिक होती है, लड़कों में शराब और धूम्रपान की दर अधिक होती है क्योंकि वे अपने जीवन के इस चरण में निराश हो जाते हैं।

पांडे, राजेंद्र (1991) [64] - पांडे ने कानपुर में स्ट्रीट चिल्ड्रन पर "स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडिया: ए सिचुएशनल एनालिसिस" का अध्ययन किया। जांच एक खोजपूर्ण-सह-वर्णनात्मक डिजाइन थी। कानपुर को चार क्षेत्रीय क्षेत्रों और 49 वार्डों में विभाजित किया गया था। तीन वार्डों को दो में विभाजित किया गया, व्यावहारिक रूप से वार्डों की संख्या 52 में से 52 हो गई, जिसमें 15 प्रतिशत वार्ड चुने गए। वार्डों का चयन इस तरह से किया गया कि उनमें सड़क पर रहने वाले बच्चों की संख्या अधिक हो और वे सभी प्रकार के क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हों। पता लगाने के बाद, यह पाया गया कि 5000 सीधे बच्चे थे और इस प्रकार ब्रह्मांड के 1250 (25%) (1234 लड़के और 216 लड़कियाँ) को अध्ययन के लिए नमूने के रूप में चुना गया।

पणिक्कर, रीता और नांगिया, प्रवीण (1992) [65] - इस पुस्तक "वर्किंग एंड स्ट्रीट चिल्ड्रन ऑफ़ दिल्ली" में, पणिक्कर और नांगिया सामाजिक-आर्थिक कारकों का पता लगाने की कोशिश करते हैं। वे बच्चों को श्रम बल में धकेलने और जल्दी रोजगार के परिणामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर उन लोगों को जिन्हें मजबूर किया जाता है। उनका अध्ययन विभिन्न कारकों को सामने लाता है जो बच्चे की छद्म-परिपक्व प्रकृति और दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में इसके परिणामस्वरूप होने वाले दुष्प्रभावों में योगदान करते हैं। लेकिन उन्होंने बाल श्रम की निम्न शैक्षिक स्थिति के बारे में हल्के ढंग से बात की है और विस्तार से नहीं क्योंकि अंत में यह बात सामने आई कि बाल श्रम एक सामाजिक-आर्थिक जनसांख्यिकीय घटना है जिसे कम किया जा सकता है और गुणा किया जा सकता है। सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर सरकार और जनता।

डी. लीमा, हेज़ल और रीमा, गोरालिया (1992) [66] - इस अध्ययन में हेज़ल और गोरालिया ने तीन वार्ड चुने (यानी, "बॉम्बे के स्ट्रीट चिल्ड्रेन" का प्रतिशत)। इन तीन वार्डों यानी ए, जी और ई में स्ट्रीट चिल्ड्रेन की सबसे बड़ी संख्या पाई जाती थी। सैंपल चुनने से पहले, ऐसे बच्चों की पूरी गिनती तैयार की गई और प्रत्येक चुने गए वार्ड से 25% बच्चों का चयन किया गया। इस प्रकार, अध्ययन के लिए 2169 ऐसे बच्चों का चयन किया गया।

लोरी शिमट, मराठा फ्रेंडली, जेन बीच (1993) [67]: पहचाने गए युवा श्रमिकों के लिए जोखिम कारक उनके अनुभव में सापेक्षता, प्रशिक्षण की कमी, परिपक्वता के स्तर और उनकी शैक्षिक प्रतिबद्धताओं के लिए उनके शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास संबंधी विशिष्ट जोखिम थे।

बदीवाला, मितेश (1996) [68]: बाल श्रम का मुद्दा अध्ययन के लायक एक विकासात्मक मुद्दा है। यह विचार कि बच्चों को श्रम में मजबूर किया जा रहा है, कई लोगों को चिंतित करता है। भारत एक ऐसे राष्ट्र का अच्छा उदाहरण है जो श्रम से पीड़ित है।

सनन, चंद्र गुप्ता एस (1998) [69] - यह अध्ययन "कामकाजी बच्चे: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण" क्षेत्र के आंकड़ों के साथ-साथ दस्तावेजी स्रोतों पर आधारित है। बाल श्रमिकों का चयन झुग्गी-झोपड़ियों और उन इलाकों

से किया जाता है जहाँ केवल छोटे पैमाने के उद्योग हैं और जो अहमदाबाद में केंद्रित हैं। द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित सामग्री ने अध्ययन को एक व्यापक रूपरेखा और परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार तकनीक का उपयोग किया गया है। गुजराती भाषा में तीन अलग-अलग कार्यक्रम तैयार किए गए थे। डेटा को मैन्युअल रूप से कोड किया गया और सितंबर-अक्टूबर 1992 के मध्य में सूरत के सामाजिक अध्ययन केंद्र में कंप्यूटर पर संसाधित किया गया और केंद्रीय प्रवृत्ति की आवृत्ति, प्रतिशत और माप प्राप्त किया गया। चंद्र गुप्ता ने कामकाजी बच्चों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। अधिकांश नियोक्ता (93.6%) पुरुष हैं और उनकी औसत आयु 39.40 वर्ष है। उनमें से, 3/4 से थोड़ा अधिक (79.89%) हिंदू हैं, शेष मुस्लिम हैं। हिंदुओं का एक बड़ा हिस्सा (46.79%) उच्च जातियों से संबंधित है। बहुत बड़ी संख्या (90.65%) के पास शिक्षा है और 2/3 से थोड़ा अधिक (69.0%) के पास माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर तक शिक्षा है। लगभग एक चौथाई ने कॉलेज स्तर तक पढ़ाई की है।

पाटिल, बी.आर. (1998) [70] - "शहरी भारत में कामकाजी बच्चे" में कामकाजी बच्चों के व्याख्यात्मक-सह-वर्णनात्मक अध्ययन में, पाटिल ने विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत 600 बच्चों के नमूने लेने की गैर-संभाव्य विधि का उपयोग किया क्योंकि जनसंख्या में नमूना ढांचा बड़ा था। कामकाजी बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं था। डेटा के संग्रह के लिए, निर्धारित विस्तृत साक्षात्कार का उपयोग नहीं किया जा सका क्योंकि बच्चे और नियोक्ता ईवॉर्ड जाने के लिए बहुत इच्छुक नहीं थे। साक्षात्कारकर्ताओं को संरचित अनुसूचित का उपयोग करने की समस्या का सामना करना पड़ा। इसलिए, अनुसूची के प्रासंगिक भाग का चयन करके और इस प्रकार इसे एक साक्षात्कार मार्गदर्शिका में परिवर्तित करके डेटा एकत्र किया गया था, लेकिन अधिक एक केस इतिहास के रूप में।

बालहोत्रा, सोनिया (2000) [71]: बच्चों का काम करना आवश्यक है क्योंकि घर के निर्वाह व्यय को पूरा करने के लिए उनकी आय का योगदान होता है। तथ्य यह है कि इस परिकल्पना का एक परीक्षण योग्य निहितार्थ यह है कि बाल श्रम आपूर्ति की मजदूरी लोच नकारात्मक है। पिछले काम ने नकारात्मक आय से यह अनुमान लगाने की कोशिश की है कि गरीबी बच्चों को काम करने के लिए प्रेरित करती है। यहाँ तर्क दिया गया है कि नकारात्मक आय लोच हमें केवल यह बताती है कि बाल अवकाश (या शिक्षा) एक सामान्य वस्तु है। ग्रामीण पाकिस्तान के

लिए एक बड़े घरेलू सर्वेक्षण का उपयोग करके, मजदूरी कार्य में लड़कों और लड़कियों के लिए श्रम आपूर्ति मॉडल का अनुमान लगाया गया है।

डोनेल, ओ और रोसाती, (2000) [72]: बाल श्रम के सबसे बुरे रूपों की ILO परिभाषा में ऐसे काम शामिल हैं जो स्वास्थ्य और सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं। स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक हानिकारक उन बाल कार्य गतिविधियों को प्रभावी ढंग से लक्षित करने के लिए बाल श्रम और स्वास्थ्य के बीच संबंधों की वैचारिक समझ और अनुभवजन्य साक्ष्य दोनों की आवश्यकता होती है।

एनली, गटसफसन, राइट (2002) [73]: दुनिया भर में, बाल श्रम और सड़कों पर बच्चों की वास्तविकता दर्ज इतिहास से पहले की है। बाल श्रम में आम तौर पर गिरावट देखी गई है क्योंकि प्रौद्योगिकी में सुधार हुआ है, शिक्षा अधिक सुलभ हो गई है, और बच्चों के अधिकारों की रक्षा करने वाला एक कानूनी ढांचा स्थापित किया गया है।

भालोत्रा सोनिया (2003) [74]: उप-सहारा अफ्रीका में बाल श्रम की घटना दुनिया के किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक है (ILO, 1998)। अनुमान है कि उप-सहारा अफ्रीका में 5 से 14 वर्ष की आयु के 41% बच्चे काम करते हैं जो लगभग 80 मिलियन बच्चे हैं, भागीदारी दर पूर्वी अफ्रीका में सबसे अधिक है, उसके बाद पश्चिम अफ्रीका और फिर मध्य अफ्रीका का स्थान है। समान आयु-सीमा और काम की समान परिभाषा के लिए बाल श्रम की घटना एशिया में 21% और लैटिन अमेरिका में 17% होने का अनुमान है (अशाग्री, 1998)। हालाँकि, अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण एशिया में काम करने वाले बच्चों की संख्या अधिक है। अनुमानित 250 मिलियन बच्चों में से 61% एशिया में, 32% अफ्रीका में और 7% लैटिन अमेरिका में हैं। इन 250 मिलियन बच्चों में से 120 मिलियन पूर्णकालिक काम कर रहे हैं (ILO, 1996a)। फिट्ज़सिमोंस, एमला (2003) वयस्कों के बीच "बाल श्रम" शब्द एक विशेष छवि को जन्म देता है - अंधेरे में करघों से बंधे बच्चे, मिलें और मिठाई की दुकानें, जैसे कि 1830 के दशक में लंकाशायर से लेकर आज के दक्षिण एशिया तक एक लंबी दुःस्वप्न जैसी कतार चल रही हो।

फ्रेजर एलिजाबेथ (2005) [75]: ऑस्ट्रेलिया में अन्य विकसित देशों की तुलना में बच्चों और युवा लोगों के लिए रोजगार की दर अधिक है, उदाहरण के लिए 15 से 19 वर्ष आयु वर्ग के 45.6% लोग भुगतान वाले रोजगार में हैं (आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के देशों के लिए 26.2% के औसत की तुलना में) इस रोजगार का अधिकांश हिस्सा खुदरा और सेवा उद्योगों में आकस्मिक और अंशकालिक काम में है।

पटेल, एन. हितेश कुमार (2005) [76] - पटेल, एन. हितेश कुमार ने अठारह वर्ष और उससे कम आयु वर्ग की सौ लड़कियों पर "रक्षा उद्योग में बालिका श्रम" का अध्ययन किया, आपको अध्ययन के लिए यादृच्छिक रूप से चुना गया है। नमूना पद्धति से, पटेल ने बालिका श्रमिकों के रोजगार का कारण पता लगाया - गुजरात राज्य के शहरी क्षेत्रों में शहरी विनिर्माण उद्योग में निर्माण उद्योग में कार्यरत 88 प्रतिशत बालिका श्रमिक। डेटा एकत्र करने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था। तथ्य और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए अनुसूची का उपयोग किया गया था। तथ्य और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई थी। अधिकांश बालिका श्रमिक 11 से 15 वर्ष की आयु वर्ग में पाई गई। गरीब परिवारों के कारण बालिका श्रमिकों को काम पर जाना पड़ता है।

शोल्टेन, वर्नर (2005) [77], ने बहुत सही टिप्पणी की, "भारत एक अद्भुत देश है, हालांकि, भारत में न केवल अच्छे चेहरे हैं, बल्कि सभी प्रगति के बावजूद बहुत बदसूरत भी हैं। इनमें से एक है बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम की चौंकाने वाली डिग्री।" उनका कहना है कि "बच्चों द्वारा किया गया काम उन्हें उनके बचपन और गरिमा से वंचित करता है, उन्हें शिक्षा और पेशेवर कौशल हासिल करने से वंचित करता है और ऐसी परिस्थितियों में काम करता है जो उनके स्वास्थ्य और विकास को नुकसान पहुंचाते हैं।

एडमंड्स वी. एरिक (2007) [78]: "बाल श्रम" वाक्यांश कारखानों में जंजीरों से बंधे बच्चों की छवि को दर्शाता है जिन्हें गुलामों के रूप में बेचा जाता है या वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है (ILO 2006)। कुछ देशों के अधिकारी बाल श्रम को मजदूरी कार्य (पाकिस्तान) या बाजार कार्य के रूप में परिभाषित करते हैं जो बच्चों के भविष्य की भलाई के लिए हानिकारक है (वियतनाम) यह बाद का मानक ILO अनुच्छेद 1, 136 (सी) के उदाहरण पर आधारित है।.. अर्थात, रोजगार में प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु 1973 में पारित की गई थी और अब

तक 135 देशों द्वारा इस पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। हस्ताक्षरकर्ता बाल श्रम को समाप्त करने और रोजगार की न्यूनतम आयु को "युवा व्यक्तियों के पूर्ण शारीरिक और मानसिक विकास के अनुरूप स्तर अनुच्छेद 1, 138 (सी)" तक बढ़ाने के लिए एक राष्ट्रीय नीति का पालन करने के लिए सहमत हैं।

सकुराई रिहो (2006) [79] का कहना है कि बाल श्रम कोई हाल की घटना नहीं है। यह न केवल विकासशील देशों के गरीब क्षेत्रों में बल्कि 20वीं सदी की शुरुआत तक विकसित देशों में भी सदी से मौजूद है (कनिंग हैम और वियाज़ो, 1996; वीनर, 1991)। वहबा, (2001) टिप्पणी करते हैं कि बाल श्रम गरीबी का कारण और परिणाम दोनों है।

पटेल, एन. हितेश कुमार (2006) [80] - पटेल, एन. हितेश कुमार ने एक अध्ययन किया "रक्षा उद्योग में बाल श्रम" अठारह वर्ष और उससे कम आयु की सौ लड़कियों पर यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा अध्ययन के लिए चुना गया था। डेटा एकत्र करने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई थी। अधिकांश लड़की श्रमिक 11 से 15 वर्ष की आयु वर्ग में हैं।

चौधरी, सरबजीत और द्विवेदी, जयंत कुमार (2006) [81] - यह शोधपत्र "विकसित देशों में कृषि में व्यापार उदारीकरण और अनौपचारिक क्षेत्रों के साथ तीन-क्षेत्रीय सामान्य संतुलन मॉडल के संदर्भ में विकासशील अर्थव्यवस्था में बाल श्रम की घटना" ने दिखाया कि कृषि व्यापार विकसित देशों में उदारीकरण शासन में बाल श्रम की घटनाओं को कम करने में प्रभावी हो सकता है। शोधपत्र कल्याण सुधार के अलावा अन्य कारणों से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के दृष्टिकोण से विकसित देशों में कृषि में व्यापार उदारीकरण की वांछनीयता की पुष्टि करता है। जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार तकनीक का उपयोग किया गया है।

मोहम्मद, आर. रॉबर्ट्स अल्बर्ट (2006) [82] ने अमेरिका में पुलिस सामाजिक कार्यकर्ताओं की कहानी का विश्लेषण किया। अध्ययन से पता चलता है कि दोनों प्रकार के जुलूसों ने अपने-अपने कार्यों का विस्तार किया है, जो कि 1900 की शुरुआत में थे। सामाजिक कार्य सेवाएँ हैं और जारी रहनी चाहिए, जो कि ज्यादातर सामाजिक

कार्य एजेंसियों द्वारा प्रदान की जाती हैं और कम प्रवर्तन कार्य उचित रूप से पुलिस विभागों के प्रांत हैं और अंतर्राष्ट्रीय के विकास के लिए। चूंकि पुलिस महिलाओं का जुड़ाव धीमा था, क्योंकि पुलिस सामाजिक कार्यकर्ता आंदोलन खुद बड़े शहरी क्षेत्र तक ही सीमित था।

द्विवेदी, जयंत कुमार और चौधरी, सरबजीत (2007) [83] - इस अध्ययन "वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और बाल श्रम" ने दिखाया कि यद्यपि उपभोक्तावाद गरीब परिवारों की आय बढ़ाता है और बच्चों के कमाई के अवसरों को कम करता है, लेकिन यह प्रवाह को भी धीमा कर देता है। बच्चों को कार्यस्थल पर ले जाया जाएगा और बाल श्रम की स्थिति खराब होने की संभावना है। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई।

एलम, अताले, जिराफ़, अबाबिक ज़र्गा, केबेडे, डेरेज, अराया, मेसफिन और अन्य (2007) [84] - "इथियोपिया में बाल श्रम और बचपन की व्यवहारिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं" अध्ययन से पता चला है कि 2000 में, 400 बाल मज़दूर और 50% मज़दूर गैर-मज़दूर थे और 42% गैर-मज़दूर पुरुष थे। पुरुषों की तुलना में ज़्यादा महिलाएँ (76.8%) घरेलू मज़दूरी में लगी पाई गईं। 9.4% बच्चे (14.0% गैर-मज़दूर और 8.5% मज़दूर) मानसिक/व्यवहार संबंधी विकारों के संभावित मामले हैं। दूसरे चरण के DICA साक्षात्कार ने 5.5% (मज़दूरों में 4.9% और गैर-मज़दूरों में 8.8%) की समग्र व्यापकता दी। अध्ययन के लिए, शोधकर्ताओं ने बच्चों में व्यवहारिक और मानसिक समस्याओं के संकेतों और लक्षणों का पता लगाने के लिए बच्चों की रिपोर्ट की गई प्रश्नावली के रूप में जाना जाने वाला एक स्क्रीनिंग टूल और बच्चों और किशोरों के लिए नैदानिक साक्षात्कार के रूप में जाना जाने वाला एक नैदानिक उपकरण इस्तेमाल किया।

देवी, के. और रॉय, गौतम (2008) [85] - इस अध्ययन "पांडिचेरी के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूली बच्चों के बीच बाल श्रम का अध्ययन" ने दिखाया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने की स्थिति कम थी जहाँ अध्ययन किया गया था। या अधिक था। एक ही और इसलिए बच्चे की कामकाजी स्थिति से जुड़े जोखिमों में बहुत अंतर नहीं था। जांच एक खोजपूर्ण-सह-वर्णनात्मक डिजाइन थी।

भारती, प्रेमानंद, चक्रवर्ती, सुमन, बनर्जी, पृथ्वीविश, वसुलु, टीएस और बनर्जी, एसआर (2008) [86] - "कोलकाता महानगर में पूर्णकालिक घरेलू बाल श्रम" के इस अध्ययन से पता चला है कि घरेलू नौकरों के रूप में काम करने वाले अधिकांश बच्चे लड़कियाँ हैं और ये बच्चे ज़्यादातर अशिक्षित परिवारों से हैं। इन बच्चों को घर के मालिकों द्वारा शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण किया जाता था। ये बच्चे एनीमिया, जठरांत्र संबंधी मार्ग के संक्रमण, विटामिन की कमी, श्वसन पथ के संक्रमण, हाथ की त्वचा की बीमारियों के साथ-साथ कुपोषण के उच्च प्रसार से पीड़ित थे। डेटा एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार, मरीज़, मानवशास्त्रीय माप और शारीरिक परीक्षाओं का उपयोग किया गया है।

दलाल कौस्तुव, रहमान फ़ज़लुर और जॉनसन बजरने (2008) [87] - "भारत में बाल श्रमिकों के बीच हिंसक व्यवहार की उत्पत्ति" के इस अध्ययन से पता चला है कि बच्चों की ओर से इस हिंसक और आक्रामक व्यवहार का कारण दोहरा है; इसका एक अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य है। अल्पावधि में, व्यवहार सामाजिक-आर्थिक दबावों, सांस्कृतिक विचलनों और मनोवैज्ञानिक दबावों पर आधारित होता है। दीर्घकालिक दृष्टिकोण से, हिंसक और आक्रामक व्यवहार बच्चों और उनके परिवार के सदस्यों दोनों में स्थापित होता है। डेटा एकत्र करने के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्धति का उपयोग किया गया है।

कंभमपति, उमा (2009)[88] - अध्ययन "भारत में बाल विद्यालय और कार्य निर्णय: घरेलू और क्षेत्रीय लैंगिक समानता की भूमिका" ने दिखाया कि भारत में, माता और पिता लड़कों की तुलना में लड़कियों के लिए अलग-अलग निर्णय लेते हैं और माता की स्वायत्तता को दर्शाने वाले चर उनके प्रभाव में भिन्न होते हैं, इसलिए पिता की तुलना में माँ की शिक्षा का स्तर अक्सर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं होता है, जबकि घरेलू व्यय में माँ का बढ़ा हुआ योगदान स्कूली शिक्षा और बालिका शिक्षा की आवश्यकता से संबंधित है। संभावनाएँ कम हो जाती हैं। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई।

हाशिमज़ादे, निगार और कंबम्पति, उमा (2010) [89]- अध्ययन "बढ़ी हुई बाल मजदूरी और उलटा यू: एक दोहरी अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण" ने दिखाया कि 1993 और 2004 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों और काम में बच्चों का अनुपात बढ़ा है। जबकि वर्तमान में स्कूल में उपस्थिति बढ़ी है, उन बच्चों का अनुपात जिनकी प्राथमिक गतिविधि

स्कूल है, कम हो गया है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि बढ़ती अर्थव्यवस्था में नौकरी के अधिक अवसर होते हैं और इसलिए बड़ी संख्या में बच्चे काम और स्कूली शिक्षा को एक साथ करने की संभावना रखते हैं। अध्ययन के लिए शेड्यूल विधि का उपयोग किया गया था।

बानिक, अरिंदम और नियोगी, देबासिस (2011) [90] - अध्ययन "गरीबी और परिवार के लिए कमाई की मजबूरी आदिवासी बच्चों को स्कूल से बाहर निकालती है: पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा के स्तर पर ड्रॉपआउट अध्ययन" ने दिखाया कि परिवार के स्तर पर मजबूरी, कम उम्र में शादी, शिक्षक जो उसी आदिवासी समुदाय से नहीं हैं, जैसे कमाई के कारक प्रमुख चर प्रतीत होते हैं। स्कूल छोड़ने की दर में लड़कियाँ सबसे ज़्यादा हैं। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी को एकत्रित करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की विधि अपनाई गई।

खानम, रशीदा और रहमान, मोहम्मद माफ़ीज़ुर (2012) [91] - इस अध्ययन "बाल श्रम: वैश्वीकरण के प्रभाव" से पता चला है कि बाल श्रम बच्चे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक परिणामों, वयस्क रोजगार, वयस्क आय और वयस्क श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। बाल श्रम पर वैश्वीकरण के प्रभावों के बारे में सैद्धांतिक तर्क अस्पष्ट हैं।, जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार शेड्यूलिंग तकनीक का उपयोग किया गया है।

लिमये, सुदीप और पांडे, मिलिंद एस. (2013) 92 - अध्ययन "भारत में बाल श्रम का एक अध्ययन - मात्रा और चुनौतियाँ" ने सरकारी नीति दस्तावेजों की जाँच की और उन कार्यों को सूचीबद्ध किया जिन्हें 11 में भारतीय सरकार द्वारा प्रस्तावित और कार्यान्वित किया गया है। पाँचवीं डर योजना जो अभी 2012 में समाप्त हुई है। लेखक मानते हैं कि बहुत सारी नीतिगत योजनाएँ बनाई गई हैं लेकिन इस मुद्दे को वास्तव में संबोधित करने और हल करने के लिए एक सामाजिक आंदोलन की तत्काल आवश्यकता है। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली सह साक्षात्कार पद्धति का उपयोग किया गया है।

जैदी, नोशीन, जावेद, नजमा और खान, मोहम्मद शोएब (2013) [93] - इस अध्ययन "पाकिस्तान में बाल श्रम – एक हिमखंड की नोक" का उद्देश्य बाल श्रमिकों की बुनियादी जनसांख्यिकीय विशेषताओं और वहां काम करने की स्थितियों का पता लगाना है। जनसांख्यिकीय और नौकरी विवरण की जानकारी एक संरचित कास्ट पर दर्ज की गई थी। इस अध्ययन से पता चला कि अधिकांश बाल मजदूर पुरुष हैं जिनके परिवार का आकार 5-8 सदस्यों का है, कभी कोई स्कूल नहीं गए और ऐसे परिवार में रहते हैं जिनकी मासिक आय 8000 पाकिस्तानी रुपये से कम है। काम का मुख्य कारण परिवार की कम आय और गरीबी थी।

बोनल, माइकल (2014) [94] - इस अध्ययन "बाल श्रम का 'सुधार', 'एक मामूली प्रस्ताव'" ने दिखाया कि व्यापार में खुलापन, मानव पूंजी में निवेश और वित्तीय विकास बाल श्रम में कमी के साथ जुड़े हुए हैं। बाल श्रम जारी है लेकिन व्यापार, निवेश और वित्तीय सुधार पर तैयार की गई नीतियों से आर्थिक विकास, बेहतर स्वास्थ्य और जीवन स्तर में वृद्धि के साथ बाल श्रम में कमी आ सकती है। अध्ययन के लिए शेड्यूल तकनीक का उपयोग किया गया है।

मोहम्मद, इमानु समेह, एविस, अशरफ अब्देल अजीम और महफूज, इमानु मोहम्मद (2014)[95] - अध्ययन "ग्रामीण मिस्र के समुदाय में बाल श्रम: एक महामारी विज्ञान अध्ययन" ने दिखाया कि कुल बच्चों में से नब्बे (45.2%) ने कहा कि वे किसी काम में लगे हुए थे। ये बच्चे क्रमशः 65.6% और 85.6% निरक्षर पिता और माता थे। अधिकांश कामकाजी बच्चे खदानों में (58.9%), फिर कृषि में (21.1%) और फिर बच्चों का एक छोटा हिस्सा अन्य नौकरियों में काम कर रहा था। ये बच्चे गरीबी, बड़े परिवार और अपर्याप्त पारिवारिक आय जैसे कारणों से (80%) काम करते हैं। इन कामकाजी बच्चों में स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें अधिक थीं। नमूना लेने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया है। डेटा एकत्र करने के लिए साक्षात्कार प्रश्नावली विधि और चिकित्सा परीक्षा का उपयोग किया गया है।

वेबिनक, एलेन, स्मिट्स, जेरोन और जोंग, एल्के डे (2015) [96] - इस अध्ययन से "अफ्रीका और एशिया में बाल श्रम: 16 कम आय वाले देशों में छोटे बच्चों द्वारा भुगतान किए गए श्रम में काम के घंटों के घरेलू और प्रासंगिक निर्धारक" ने पाया कि भिन्नता मुख्य रूप से घरेलू स्तर के कारकों (एशिया में 95% और अफ्रीका में 77%) के कारण है, जिसमें बच्चे भुगतान के लिए काम करते हैं, जबकि गरीबी अभी भी एक प्रमुख प्रेरक कारक

है। माता-पिता की शिक्षा और जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक कारक भी एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि अफ्रीका में ये कारक कम महत्व के हैं। अध्ययन के लिए तुलनात्मक विधि का उपयोग किया गया है।

श्रीमाली, राजेश्वरी और किसान, डॉ. मयूरी (2015) [97] - इस अध्ययन "गुजरात राज्य में बाल श्रम पर एक अध्ययन (गुजरात राज्य के २ ब्लॉकों पर विचार करते हुए)" से पता चला कि ये बच्चे बहुत कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं। वे पर्याप्त आराम अंतराल के बिना लंबे समय तक काम करते हैं। इसके अलावा, उन्हें आय में किसी भी नियमित वृद्धि के बिना बहुत कम राशि का भुगतान भी किया जाता है। इसके अलावा, इनमें से अधिकांश बच्चों को बाल श्रम के संबंध में मौजूदा कानूनों की जानकारी नहीं है। 30% बाल मजदूरों को श्रम कार्य से मुक्त माना जाता था, लेकिन वहां की आर्थिक स्थिति ने उनके निर्णय का समर्थन नहीं किया। गरीबी बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करने का सबसे बड़ा कारण है। 54% बाल मजदूर अपनी मर्जी, परिवार की आय और अपने माता-पिता की इच्छा से किसी न किसी तरह का श्रम कार्य कर रहे हैं, 46% बाल मजदूर हैं जो स्वेच्छा से श्रम कार्य में संलग्न नहीं होना चाहते हैं, 42% बाल मजदूर शिक्षा के लिए स्कूल जाना चाहते हैं और बाकी किसी भी तरह की शिक्षा लेने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। केवल 17 प्रतिशत बाल मजदूरों को शिक्षा के अधिकार अधिनियम के बारे में पता है। इसके लिए साक्षात्कार पद्धति का इस्तेमाल किया गया है।

अल्फा, अब्दुलमुमिनी बाबा और करीम, मोहम्मद जैनिक अब्द (2016) [98] - यह अध्ययन "नाइजर राज्य, नाइजीरिया के ग्रामीण क्षेत्रों में मुखियाओं के साथ बाल संबंधों पर बाल श्रम और प्रदर्शन का प्रभाव" बाल श्रम के प्रभाव का आकलन करना है। मुखिया और मुखिया के साथ बाल संबंधों पर शैक्षिक प्रदर्शन। बसु और वैन (1998) और फैन (2011) के सिद्धांतों के आधार पर इस अध्ययन के लिए एक विश्लेषणात्मक मॉडल विकसित किया गया था। अनुभवजन्य डेटा शो सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण (एसईएस) 2014 से प्राप्त किया गया था, जिसमें 435 घरों से 10 से 14 वर्ष की आयु के 845 प्राथमिक विद्यालय के छात्रों का नमूना आकार था। अध्ययन के लिए लॉगिट विश्लेषण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि गैर-जैविक बच्चा जैविक बच्चे की तुलना में अधिक घंटे काम करता है। समान रूप से, निर्वाह स्तर से नीचे कमाने वाले परिवारों के बच्चे निर्वाह स्तर से ऊपर कमाने वाले परिवारों की तुलना में अधिक घंटे काम करते हैं, जो प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित

करता है। इसलिए सामाजिक पूंजी के लिए पाठ्येतर गतिविधियों के उपयोग की सिफारिश की गई ताकि श्रम में बच्चों की भागीदारी कम हो और बच्चों का स्कूल प्रदर्शन बेहतर हो।

ज़फ़र, ज़ुबैदा, सरवर, इसरा और हैदर, सैयद इमरान (2016) [99] - इस अध्ययन "बाल श्रम के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारण: पाकिस्तान का मामला" ने दिखाया कि बाल श्रम के लिए कई सामाजिक-आर्थिक कारक ज़िम्मेदार हैं। मूल कारण के रूप में गरीबी, माता-पिता की आर्थिक स्थिति, बड़े परिवार का आकार, संस्कृति, ग्रामीण-शहरी प्रवास, शिक्षा पर अविश्वास, शिक्षित बेरोजगार थोक, मुफ़्त शिक्षा के प्रावधान में सरकार की विफलता, कानूनों के कार्यान्वयन में निगरानी की कमी, राजनीतिक नेतृत्व की भागीदारी शामिल है। अध्ययन के लिए, शोधकर्ताओं ने एक बहु-परिप्रेक्ष्य लेंस के साथ एक मिश्रित-विधि अभिसरण तकनीक को चुना। मात्रात्मक तथ्यों को इकट्ठा करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है और गुणात्मक तथ्यों को इकट्ठा करने के लिए साक्षात्कार गाइड का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया गया है।

अली, दयांगी हेज़ेलिना बिंती अबांग और अरबशिबानी, जी। रेजा (2016) [100] - अध्ययन "इंडोनेशिया में बाल श्रम: आपूर्ति-पक्ष निर्धारक" ने दिखाया कि बच्चों के बड़े होने पर काम करने की संभावना अधिक होती है क्योंकि बड़े बच्चे आर्थिक कार्यों के लिए अधिक समय देते हैं। सकारात्मक आयु-समूह यह दर्शाता है कि बच्चों के कार्यबल में शामिल होने की संभावना अधिक होती है या उम्र बढ़ने के साथ बढ़ सकती है। 2005 में लड़कियों ने लड़कों की तुलना में लगभग 3% कम काम किया और 2007 में यह प्रतिशत 4% था। घर के मुखिया के साथ जैविक संबंध न होने से बच्चे के काम करने की संभावना बढ़ जाती है। 2005 और 2007 में घर के अन्य बच्चों की तुलना में जैविक बच्चों के काम करने की संभावना 6.9% कम है। इस अध्ययन के लिए डेटा इंडोनेशियाई राष्ट्रीय सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण (SUNAS), 2005 और 2007 के द्वितीयक स्रोत से एकत्र किया गया है। प्रश्नावली पद्धति का उपयोग किया गया है।

अब्दुल्लाही, इदरीस इस्याकू, नूर, ज़लेहा मोहम्मद, सईद, रुसमावती और बहरूमशाह, अहमद जुबैदी (2016) [101] - यह अध्ययन "क्या गरीबी विकासशील देशों में बाल श्रम की व्यापकता को प्रभावित करती है?" पता चला कि बाल श्रम और गरीबी के बीच का संबंध मौजूदा साहित्य के अधिकांश भाग में प्रचलित इस धारणा

से अलग है कि गरीबी बाल श्रम के प्रचलन का कारण बनती है। इस अध्ययन ने संकेत दिया कि दुर्व्यवहार बाल श्रम के प्रचलन से नकारात्मक रूप से संबंधित है, इस अर्थ में कि गरीबी जितनी अधिक होगी, विकासशील देशों में बाल श्रम का प्रचलन उतना ही कम होगा। अध्ययन के लिए सिस्टम-जनरलाइज्ड मेथड ऑफ मोमेंट (S-GMM) तकनीक का उपयोग किया गया है।

अब-रहीम, रोज़ाना और तारिक, बिलाल (2016) [102] - अध्ययन "बाल श्रम पर व्यावसायिक खुलेपन का प्रभाव: विकासशील अर्थव्यवस्थाओं से अनुभवजन्य साक्ष्य" ने दिखाया कि मूल्य वर्धित में वृद्धि के साथ बाल श्रम कम हो जाता है। व्यापार बाल श्रम प्रेरित प्रभाव और साथ ही व्यापार का समग्र प्रभाव बाल श्रम में कमी के लिए अनुकूल है। परिणाम का अर्थ है कि व्यापार उदारीकरण बाल श्रम में कमी के रूप में विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक लाभ है। इस अध्ययन के लिए सामान्यीकृत न्यूनतम वर्ग (GLS) तकनीक का उपयोग किया गया है।

अशफाक, एशिया, अली, राबिया, हबीबा, उमे और अशफाक, मरियम (2017) [103] - अध्ययन "पाकिस्तान में बाल श्रम: बच्चों के स्वास्थ्य पर परिणाम" से पता चला कि बच्चों को परिवार की आय में योगदान देने के लिए कमाने के लिए मजबूर किया जाता है। ऐसा किया गया। दूसरे परिणाम से पता चला कि श्रम में लगे बच्चों को अस्वस्थ वातावरण, खरीदार का शोषण, नौकरी की असुरक्षा और स्वास्थ्य समस्याओं सहित कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले बच्चे विभिन्न शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे थे जो उनके बौद्धिक और शारीरिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। डेटा एकत्र करने के लिए मात्रात्मक विधि और यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। अध्ययन के लिए प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया और SPSS का उपयोग करके विश्लेषण किया गया।

बसु, कौशिक (2017) [104] - यह अध्ययन "बाल श्रम और शिक्षा पर नोट्स: एक व्यक्तिगत बयान" क्षेत्र के आंकड़ों के साथ-साथ दस्तावेजी स्रोतों पर आधारित है। बसु कौशिक ने खुलासा किया कि एक कुंद, कानूनी हस्तक्षेप, जैसा कि अक्सर प्रस्तावित किया जाता है, बाल श्रम को कम कर सकता है, लेकिन केवल बाल गरीबी को बढ़ाकर। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को शामिल करते हुए हस्तक्षेप

करना होगा। जब तक हमारे समय की इस गंभीर समस्या पर ध्यान नहीं दिया जाता, तब तक हम असमानता, अभाव और संघर्ष को बढ़ता हुआ देख सकते हैं। द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित सामग्री ने अध्ययन को एक व्यापक रूपरेखा और परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार तकनीक का उपयोग किया गया है।

मखदूम, तैय्यबास रफीक, पटोली, अब्दुल कादिर, नवाज, मुहम्मद और खट्टी, इलअमदीन (2017) [105] - अध्ययन "व्यवसाय में बाल श्रम का उपयोग: क्या यह शोषण है या रोजगार?" यह पता चला है कि बच्चे रुचि की कमी के कारण स्कूल छोड़ देते हैं। उनमें से अधिकांश को कार्यस्थल पर उनके अभिभावकों के रूप में पेश किया गया था और उनमें से अधिकांश के अभिभावक माता-पिता हैं, अधिकांश माता-पिता स्वयं श्रमिक हैं और बहुत कम अशिक्षित हैं। उनमें से अधिकांश को 50-80 रुपये और 100-250 रुपये का भुगतान किया जाता है। उनमें से अधिकांश दो साल या दो साल से कम समय से वहां काम कर रहे हैं और अपनी आय खुद और परिवार दोनों पर खर्च करते हैं। उनमें से अधिकतर लोग रात 8 या 9 बजे काम से घर चले जाते हैं, और अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि वे 2014 में अपने काम में योगदान दे रहे हैं। व्यवसायिक चिंता की आय का 5%। शिक्षा की कमी और गरीबी बाल श्रम के निर्धारक पाए गए। चूंकि माता-पिता गरीब हैं, इसलिए बच्चों को काम करना पड़ता है और अधिकांश स्कूल छोड़ देते हैं और अंततः अपने जीवन के बाकी समय गरीब ही रहते हैं। इसके अलावा, माता-पिता भी उन्हें काम करवाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। अध्ययन के लिए क्लोज एंडेड प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

दास, बिष्णु मोहन, प्रसाद, लोकेंद्र और दत्ता, मिल्ली (2018) [106] - व्याख्यात्मक-सह-वर्णनात्मक अध्ययन "भारत में बाल श्रम के जनसांख्यिकीय रुझान: नीति सुधार के लिए निहितार्थ" बाल श्रम की वृद्धि दर और सामाजिक प्रकटीकरण के साथ इसके वितरण का अवलोकन प्रदान करता है। भारत में बाल श्रम की आर्थिक विशेषताएँ और कार्य सहभागिता दर। साक्षात्कारकर्ताओं को संरचित अनुसूचित का उपयोग करने की समस्या का सामना करना पड़ा। इसलिए, अनुसूची के प्रासंगिक भाग का चयन करके और इस प्रकार इसे एक साक्षात्कार गाइड में परिवर्तित करके डेटा एकत्र किया गया था, लेकिन अधिक केस इतिहास के रूप में।

हेमेनु, एम्मा सेराम, द्वोमोह, इमैनुएल अप्राक्रू और गेके, माविस डाको (2018) [107] - अध्ययन "घाना में बाल श्रम: बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए निहितार्थ" ने खुलासा किया कि गरीबी, माता-पिता की

अनुपस्थिति और खराब शिक्षा और बाल श्रम कानून बाल श्रम और राजमार्ग पर चीजें बेचने के मुख्य कारण हैं। प्रवर्तन है। अध्ययन से पता चला कि राजमार्ग पर बच्चों की बिक्री की व्यस्तता उनके स्वास्थ्य और शिक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। अध्ययन में यह भी पता चला कि हाईवे पर सामान बेचना बच्चों के लिए खतरनाक है क्योंकि ट्रैफिक में वाहनों के बीच दौड़ते समय बच्चों का वाहनों से टकराना और उनसे टकराना संभव है। इस अध्ययन से एक और तथ्य यह सामने आया कि बाल श्रम शोषणकारी है और बच्चों को उनके स्वास्थ्य और शिक्षा से वंचित करता है। अध्ययन के लिए गुणात्मक शोध दृष्टिकोण और साक्षात्कार पद्धति का उपयोग किया गया है।

इब्राहिम, अब्दुल्ला, अब्दुल्ला, सलमा एम, जाफर, मोहम्मद, अब्देलगादिर, जिहाद और व्रीस, नान डे (2018) [108] - यह अध्ययन "बाल श्रम और स्वास्थ्य: निम्न और मध्यम आय वाले देशों में बाल स्वास्थ्य पर बाल श्रम के प्रभावों की एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा" बाल श्रम का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य। PubMed और Science Direct ने उन अध्ययनों की खोज की जिनमें 18 वर्ष या उससे कम उम्र के प्रतिभागी शामिल थे, कानून और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में आयोजित किए गए और मात्रात्मक डेटा की रिपोर्ट की। दो स्वतंत्र समीक्षकों ने डेटा निष्कर्षण किया और अध्ययन की गुणवत्ता का आकलन किया। अध्ययन के परिणाम कुल 25 छात्रों की पहचान की गई, जिनमें से अधिकांश शब्द क्रॉस-सेक्शनल हैं। बाल श्रम कई प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों से जुड़ा पाया गया है, जिसमें खराब विकास, कुपोषण, संक्रामक और प्रणालीगत विशिष्ट बीमारियों की उच्च घटना, और कम व्यवहारिक और भावनात्मक विकार शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं।

सी., चित्रा (2018) [109] - पेपर "भारत में बाल श्रम पर एक अध्ययन: बच्चों को उपकरण उठाने के लिए न कहें, इसके बजाय उन्हें स्कूल भेजें" बाल श्रम, विधायी विकास और बाल श्रम की श्रेणियों, संवैधानिक प्रावधानों और चर्चाओं के बारे में। बाल श्रम के खिलाफ पहल यह पेपर वर्णनात्मक है और गैर-अनुभवजन्य डिजाइन पर आधारित है। डेटा अनुसंधान एकत्र करने के लिए एक उपकरण तैयार किया गया था। अध्ययन डेटा पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं, ई-स्रोतों, सिद्धांतों के द्वितीयक स्रोत और निश्चित केस कानूनों के साथ प्रासंगिक प्रावधानों पर आयोजित किया गया था। इस अध्ययन से पता चला कि बच्चों को बाल श्रम को रोकने के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए।

अल्फा, अब्दुलमुमिनी बाबा और करीम, मोहम्मद, ज़ैनिक अब्द (2018) [110] - "बाल श्रम, नाइजर राज्य, नाइजीरिया में सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालयों की दक्षता का प्रदर्शन" अध्ययन ने नाइजीरिया में स्कूलों के दक्षता स्तर और बाल श्रम और शैक्षणिक प्रदर्शन पर इसके प्रभावों की जांच की है। अध्ययन के लिए डेटा स्कूल जनगणना (एससी 2014/15 सत्र) और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण (एसईएस 2014) से प्राप्त किए गए थे, जिसमें कुल 117 स्कूलों और 10 से 14 वर्ष की आयु के 1125 विद्यार्थियों का अवलोकन किया गया था। अध्ययन के लिए डीईए और टोबिट मॉडल का उपयोग किया गया है। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि बाल दक्षता स्कोर का बच्चे के कार्य के साथ नकारात्मक संबंध है, जबकि बच्चे के प्रदर्शन के साथ सकारात्मक संबंध है। यानी, कुशल स्कूलों के छात्रों को हमेशा बाल श्रम में कमी और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में वृद्धि का अनुभव होता है, क्योंकि वे ज्यादातर पूरी शैक्षिक सामग्री के साथ पाए जाते हैं और हमेशा अपने शिक्षकों द्वारा उन्हें दिए गए होमवर्क में लगे रहते हैं।

काकर, बशीर अहमद, आलम, मुहम्मद और वदूद, अब्दुल (2019) [111] - यह अध्ययन "बाल विवाह की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण और कारक" पाकिस्तान में श्रम - एक खोजपूर्ण शोध" का उद्देश्य उन कारणों का पता लगाना है जो झुकाव से जुड़े हैं। पाकिस्तान में बाल श्रम प्रथाओं के डेटा के संग्रह के लिए असंरचित साक्षात्कार और बातचीत की गुणात्मक शोध पद्धति और स्नोबॉल सैंपलिंग तकनीक का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में पाया गया कि लगभग 30 बच्चों (20 लड़के और 10 लड़कियाँ, जिनकी उम्र 6 से 17 वर्ष है) से संपर्क किया गया और उन्हें पैसे दिए गए ताकि वे अपना समय बर्बाद न करें और थोड़ी-बहुत कमाई करें। इस अध्ययन में पाया गया एक और कारक यह था कि दुनिया में लड़कियों की तुलना में लड़के बाल श्रम में अधिक शामिल पाए गए क्योंकि लड़कियाँ ज़्यादातर घर के कामों में मदद करने और जानवरों की देखभाल करने में लगी रहती थीं जो भोजन के स्रोत भी थे।

आहूजा, दमन और कल्पना, बी. (2019) [112] - अध्ययन "बाल श्रम की व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ - दिल्ली की मलिन बस्तियों में स्कूल जाने वाले और काम करने वाले बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन" से पता चला है कि बाल श्रम का उन बच्चों के व्यवहार और भावनात्मक पहलुओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले स्कूल जाने वाले बच्चों की तुलना में। निष्कर्षों से पता चला कि बाल श्रम में कुल

कठिनाई (45.2%) स्कूल जाने (36%) की तुलना में अधिक थी। सामाजिक आचरण समस्या बाल श्रम में पाई जाने वाली सबसे प्रचलित व्यवहारिक समस्या (43.2%) है। कार्य स्थितियों और उच्च आचरण समस्याओं के बीच संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। कार्य स्थितियों और कठिनाई स्कोर के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीक और प्रश्नावली पद्धति का उपयोग किया गया है।

लाल, बी. सुरेश (2019) [113] - यह अध्ययन "भारत में बाल श्रम: कारण और परिणाम" भारत के शीर्ष पांच राज्यों अर्थात् उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में बाल श्रम की घटना कुल का लगभग 55% है। भारत में काम करने वाले बच्चे। दूसरा परिणाम यह है कि भारत में कृषि किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक बाल श्रम को रोजगार दे रही है। डेटा एकत्र करने के लिए विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, सेव द चिल्ड्रन और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष और विभिन्न अध्ययनों जैसे माध्यमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

खताब, खालिद, रहीम, मारूफ ए, सार्टोरियस, बेन और इस्माइल, मुबारक (2019) [114] - "ब्येसियन जियोस्पेशियल मॉडलिंग का उपयोग करके मिस्र में बाल श्रम और बच्चों के खिलाफ हिंसा के लिए व्यापकता और जोखिम कारक" इस अध्ययन से पता चला है कि 5-10 वर्ष की आयु के कम से कम 31.6% बच्चे काम कर रहे थे, 11-17 वर्ष की आयु के 68.5% बच्चे मजदूरी के लिए बाल श्रम में लगे हुए थे और 5-10 वर्ष की आयु के 50 वर्ष की आयु के 44.7% बच्चे खतरनाक गतिविधियों में लगे हुए थे। काम। औपचारिक शिक्षा के बिना, गैर-खतरनाक नौकरियों में महिलाओं से पैदा हुए बच्चे, कुछ स्तर के काम वाली माताओं के बच्चों की तुलना में बाल श्रम में संलग्न होने की अधिक संभावना रखते हैं, भले ही काम पर बिताए गए घंटे कितने भी हों (52.9 प्रतिशत, 56.8%, 62.4 प्रतिशत)। जिन बच्चों ने मनोवैज्ञानिक आक्रामकता और शारीरिक दंड का अनुभव किया है, उन्हें बाल श्रम के रूप में इस्तेमाल किए जाने की संभावना उन बच्चों की तुलना में अधिक है, जिन्हें काम के प्रकार और घंटों में ऐसा अनुभव नहीं है। उत्तर-पूर्वी मिस्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में बाल श्रम की संभावना अधिक है, जबकि डेल्टा में रहने वाले बच्चों के खतरनाक काम में शामिल होने की संभावना अधिक है। अध्ययन के लिए बायेसियन जियो-एडिटिव मॉडल का उपयोग किया गया था ताकि प्रतिदिन 16 घंटे से कम काम करने वाले बच्चों के लिए जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक कारकों की जांच की जा सके; 16 से 45 घंटे से कम; और साप्ताहिक 45 घंटे से अधिक।

अल्फा, अब्दुलमुमिनी बाबा, कोलो, पॉल बोकू, बेलो, मूसा कासिम और अहमद, अमीनू (2019) [115] - अध्ययन "बाल श्रम का समय और बाल स्वास्थ्य पर घरेलू व्यय: नाइजर राज्य के लापाई स्थानीय सरकार क्षेत्र का केस स्टडी" नाइजर राज्य के लापाई के ग्रामीण क्षेत्रों में बाल स्वास्थ्य पर घरेलू मुखिया के व्यय के योगदान की जांच करता है। अध्ययन के लिए प्राथमिक डेटा को 382 अवलोकनों के साथ एकत्रित किया गया है और एक लॉगिट और दो-चरण-सूची-वर्ग लागू किया गया है। अध्ययन से पता चला है कि एक बच्चे के घरेलू खर्च, काम की प्रकृति और बच्चे के श्रम घंटे सकारात्मक रूप से बाल स्वास्थ्य की स्थिति की भविष्यवाणी करते हैं, जबकि घर के मुखिया का शैक्षिक स्तर नकारात्मक रूप से बाल स्वास्थ्य की स्थिति की भविष्यवाणी करता है।

मजीद, मुहम्मद तारिक और किरण, फैजा (2019) [116] - यह अध्ययन "महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति और बाल श्रम: पाकिस्तान से साक्ष्य" ने दिखाया कि इसलिए, पारिवारिक जीवन की निर्णय लेने की प्रक्रिया के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना समाज में बाल श्रम को कम करने में मदद कर सकता है। जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार शेड्यूलिंग तकनीक का उपयोग किया गया है।

रहमान, सैयद महबूबर, हुसैन, मनोवर, आलम, मोहम्मद शाहदुल, शहरियार, मोहम्मद हसन, रसूल, इम्तियाज और जुबैर, एबीएम (2019) [117] - यह अध्ययन "दीर्घकालिक (सार्वजनिक) लाभों की कीमत पर अल्पकालिक (निजी) लाभ: बांग्लादेश" है। "अमेरिका की बीड़ी फैक्ट्रियों में बाल श्रम से पता चला कि लगभग 50-70% श्रमिक बच्चे थे, जबकि वास्तविक संख्या अनिर्णायक थी। दूसरे तथ्य से पता चला कि गरीबी और तंबाकू उद्योग के कारण, परिवार को अक्सर बच्चे मिलते हैं। आर्थिक लाभ के लिए किशोरों को बीड़ी कारखानों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। डेटा एकत्र करने के लिए गुणवत्ता तकनीक, अवलोकन विधि, साक्षात्कार और गहन साक्षात्कार विधि और केस स्टडी विधि का उपयोग किया गया है।

मेहता, नीति और मोहंती, स्मृतिरेखा (2020) [118]- इस अध्ययन "बाल श्रम की सीमा और कारणों पर विचार" से पता चला है कि सामाजिक और आर्थिक कारकों की एक विविध श्रेणी बाल श्रम में वृद्धि में योगदान करती है। गरीबी उन्मूलन के अलावा, बच्चों के लिए स्कूल में बने रहना और अनिवार्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, उत्पादक रोजगार के अवसर और माता-पिता के लिए शिक्षा जैसे हस्तक्षेपों का एक समग्र संयोजन अधिक

यथार्थवादी नीति प्रतिक्रिया की ओर ले जाने की संभावना है। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तकनीक का उपयोग किया गया है।

साहू, बरसा (2020) [119]- ने अपने अध्ययन "बिना बचपन के बच्चे: भारत में बाल श्रम के पैटर्न और घटनाओं का विश्लेषण" में खुलासा किया कि बाल श्रम पर एनएसएस के अनुमान में केवल आर्थिक रूप से सक्रिय बच्चे शामिल थे, जबकि उनके अनुमान से पता चला कि अधिक बच्चे (श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की तुलना में) घरेलू काम में लगे हुए हैं और उन्हें भारत में बाल श्रम के आकलन में शामिल किया जाना चाहिए। लिंग पहलू के संबंध में, इस शोधपत्र ने खुलासा किया कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, आर्थिक गतिविधियों में लड़कों की भागीदारी अधिक है, जबकि लड़कियों की भागीदारी अन्य गतिविधियों में अधिक है और यह पैटर्न सभी उम्र में समान रहता है। एक और निष्कर्ष यह है कि जिस सामाजिक समूह से बच्चा संबंधित है, उसका कामकाजी बच्चों के साथ अधिक मजबूत संबंध है क्योंकि कामकाजी बच्चों में एसटी बच्चों का प्रतिशत अधिक है। अध्ययन के लिए भारत की जनगणना के आंकड़ों और एनएसएसओ के 66वें दौर के आंकड़ों (2009-10) में भारत में रोजगार और बेरोजगारी जैसे माध्यमिक स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया।

मेहता, नीति और मोहंती, स्मृतिरेखा (2020) [120] - इस अध्ययन "बाल श्रम की सीमा और कारणों पर विचार" से पता चला है कि सामाजिक और आर्थिक कारकों की एक विविध श्रेणी बाल श्रम में वृद्धि में योगदान करती है। गरीबी उन्मूलन के अलावा, बच्चों के लिए स्कूल में बने रहना और अनिवार्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, उत्पादक रोजगार के अवसर और माता-पिता के लिए शिक्षा जैसे हस्तक्षेपों का एक समग्र संयोजन अधिक यथार्थवादी नीति प्रतिक्रिया की ओर ले जाने की संभावना है। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तकनीक का उपयोग किया गया है।

रमज़ान, नाज़ीह, ज़गालौल, नैन्सी मोहम्मद और हेट्टा, शेरिफ़ अहमद (2020) [121] - इस अध्ययन "ग्रेट काहिरा गवर्नरेट, मिस्र में बाल शोषण और बाल श्रम के बीच चिकित्सा-कानूनी संबंध" से पता चला है कि काम करने वाले अधिकांश बच्चे निरक्षर (68%) थे और निरक्षर पिता और माता क्रमशः 48.67% और 45.67% थे। अध्ययन में यह भी पता चला कि अधिकांश बच्चे फेरीवाले (33.33%) के रूप में कार्यरत थे, उसके बाद दूसरे नंबर

पर गैरेज में गार्ड के रूप में काम करने वाले बच्चे (16.67%) थे। एक अन्य कारक ने दिखाया कि 11-15 वर्ष की आयु के बच्चे काम में शामिल बच्चों का सबसे आम समूह हैं, जो सभी प्रतिभागियों का 81% हिस्सा हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 54% भावनात्मक शोषण से पीड़ित हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 24% बच्चे शारीरिक शोषण के शिकार हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 15% लापरवाही के शिकार हैं और कुल बच्चों में से 7.5% यौन शोषण के शिकार हैं। नमूने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए साक्षात्कार प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

सैंड्रा, हेरी, माजिद, एम। शब्रिक अब्द।, दाऊद, तौफीक सी। और हामिद, अब्दुल (2020) [122] - अध्ययन "इंडोनेशिया में बच्चों के काम करने का क्या कारण है" ने उन कारकों का खुलासा किया जिनमें गरीबी दर, औसत मजदूरी, शिक्षा में भागीदारी और शिक्षा की गुणवत्ता शामिल है। अध्ययन में बाल श्रम पर गरीबी के सकारात्मक प्रभाव का पता चला। अध्ययन में इंडोनेशिया में बाल श्रम पर औसत मजदूरी के प्रतिकूल प्रभाव का भी पता चला। अध्ययन से पता चला एक और तथ्य यह है कि शिक्षा प्रणाली में भागीदारी ने भी बाल श्रम में नकारात्मक योगदान दिया है। अध्ययन में एक और तथ्य यह भी है कि शिक्षा सेवाओं की गुणवत्ता का इंडोनेशिया में बाल श्रम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय श्रम बल सर्वेक्षण (इंडोनेशिया गणराज्य के केंद्रीय सांख्यिकी ब्यूरो) और राष्ट्रीय विद्यालय/मदरसा प्रत्यायन बोर्ड के द्वितीयक स्रोतों पर आधारित अध्ययन। अध्ययन के लिए सरल न्यूनतम वर्ग (OLS) पद्धति का उपयोग किया गया है।

शाहिद, सुंबल और खान, राणा एजाज अली (2020) [123] - अध्ययन "अनौपचारिक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, बाल श्रम और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास: अंतर्संबंधों की खोज" से पता चला है कि अनौपचारिक क्षेत्र बाल श्रम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है और बाल श्रम अनौपचारिक क्षेत्र को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अविकसितता और गरीबी का एक दुष्चक्र बनाएँ। बाल श्रम आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान देता है और आर्थिक विकास विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में बाल श्रम को बढ़ाता है। हालाँकि अनौपचारिक क्षेत्र आर्थिक विकास को बढ़ाता है, अनौपचारिक क्षेत्र आर्थिक विकास को कम करता है। इसलिए अनौपचारिक क्षेत्र, बाल श्रम और आर्थिक विकास के बीच एक जटिल और प्रेरक अंतर्संबंध उभरा विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ। अनौपचारिक क्षेत्र जनसंख्या वृद्धि से सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। बाल श्रम

भी जनसंख्या वृद्धि और आयु निर्भरता से सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है, लेकिन वैश्वीकरण से नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। इस अध्ययन के लिए तीन चरण कम से कम वर्ग तकनीक (3SLS) का उपयोग किया गया है।

मोहम्मद महमूदुल (2021) [124] - महमूदुल ने अपने अध्ययन "बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थी बच्चों की जबरन मजदूरी और शिक्षा तक पहुँच: मानवीय संकट से परे" में उल्लेख किया कि औपचारिक पहचान की कमी, औपचारिक श्रम बाजार तक सीमित पहुँच, बाल रोजगार के खिलाफ सामाजिक प्रतिबंधों की अनुपस्थिति, आकांक्षाएँ खराब घरेलू संरचना और जीवन स्तर का खराब होना कुछ प्रमुख कारक हैं जो बच्चों को विभिन्न प्रकार के श्रम करने के लिए प्रेरित करते हैं, खासकर शिविरों के बाहर। वे अक्सर छोटी कार्यशालाओं में मजदूरों के रूप में और मेजबान समुदाय के घरों में घरेलू कामगारों के रूप में काम करते हैं। इस क्षेत्र में बिना दस्तावेज वाले बच्चों को बंधुआ मजदूरी, वेश्यावृत्ति और तस्करी का शिकार भी बताया जाता है। डेटा एकत्र करने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण, बातचीत, अर्ध-संरचित साक्षात्कार और गैर-प्रतिभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

फातफुम, चक्रफान, नुशोर्न, नारोंगसाक और प्राजोंगजीप, अचरा (2021) [125] - इस अध्ययन "निचले उत्तरी थाईलैंड में बरली किसानों के बीच तम्बाकू की खेती और उत्पादन में बाल श्रम से जुड़े कारक" से पता चला है कि 720 श्रमिकों में से 83 (12.4) % घरेलू श्रमिकों ने युवाओं को तम्बाकू की खेती में लगाया है। बाल श्रम से जुड़ी सबसे आम प्रक्रिया तम्बाकू के पत्तों को इकट्ठा करना, काटना और सुखाना था। परिणामों से पता चला कि बाल श्रम की कभी जांच नहीं की गई (95%), बाल श्रम पर नकारात्मक स्वास्थ्य परिणामों के बारे में ज्ञान का निम्न स्तर (95%) और बाल श्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का उच्च स्तर (95%)। श्रम व्यवहार से जुड़े थे। नमूनाकरण के लिए व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया है। डेटा एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। डेटा विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ़्टवेयर और ची-स्क्वायर परीक्षण का उपयोग किया गया।

ओकपा, जॉन थॉम्पसन, एशियोट्स, इमैनुएल, ओफेम, नाना ओकोई, सिल्वेस्टर, अकोमाये और एंड्रयू, उबोंग स्टीफन (2021) [126] - यह अध्ययन "नाइजीरिया में बाल श्रम और अपराधी व्यवहार: एक जोखिम कारक

विश्लेषण" बाल श्रम और अपराधी व्यवहार के आसपास के मुद्दों का विश्लेषण करता है, समस्या की उत्पत्ति का पता लगाता है माँ-बच्चे को। पिता के वित्त से जोड़ता है। स्थिति, सांस्कृतिक प्रथाएँ और माता-पिता की निरक्षरता। इस अध्ययन में यह देखा गया है कि आयु कारक महत्वपूर्ण मुद्दा है - किशोर श्रम और वैध श्रम के बीच का अंतर कार्यकर्ता की आयु है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बचपन एक इंसान के लिए विकास की सभी आवश्यक प्रक्रियाओं से गुजरने और एक पूर्ण वयस्क प्रक्रिया में विकसित होने की प्रारंभिक अवधि है, जिसमें औपचारिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अच्छी नैतिक परवरिश और एक उचित और सभ्य समाजीकरण प्रक्रिया शामिल है। इस शोधपत्र में पाया गया कि एक बच्चा जिसे विकास की इस समयबद्ध प्रक्रिया तक पहुँच से वंचित किया गया है, वह निश्चित रूप से कुछ अपराधी व्यवहार प्रदर्शित करेगा। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि क्या वयस्क श्रम के परिणामस्वरूप बच्चे में वयस्कता की झूठी भावना किशोर अपराध में योगदान देने वाला कारक है।

दुआ, शिखा, मेहता, ऋचा और त्यागी, अंशु (2021) [127] - इस अध्ययन "बाल श्रम का आंशिक मूल्यांकन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य" से पता चला है कि बाल श्रम का मुख्य कारण व्यापक बेरोजगारी और आबादी के वयस्क गरीब वर्ग में बेरोजगारी है। जिसने जनसंख्या वृद्धि के कारण विकराल रूप धारण कर लिया है। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई।

अहद, मोहम्मद अब्दुल, पैरी, यवोन करेन और विलिस, एलीन एम. (2021) [128] - इस अध्ययन "चार दक्षिण एशियाई देशों के संदर्भ में बाल श्रम दुरुपयोग की व्यापकता और प्रभाव: एक स्कोपिंग समीक्षा" से पता चला है कि बाल श्रमिकों के खिलाफ शारीरिक शोषण (15.14%) सभी अध्ययनों (2.3% -73.27%) में असमानता थी। भावनात्मक शोषण की व्यापकता शारीरिक शोषण की तुलना में तीन गुना अधिक थी। यौन शोषण (16.82%) की दर मापी गई, उसके बाद बाल श्रम की उपेक्षा (12.9%) की दर मापी गई। पीड़ितों और देखभाल करने वालों की विशेषताएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाएँ दुर्व्यवहार के प्रबल भविष्यवक्ता हैं। माता-पिता की टालमटोल भी गरीबी के बाद बाल श्रम की दरों से जुड़ी थी। PRISMA ढांचे के अनुसार, अध्ययन के लिए स्कोपिंग समीक्षा का उपयोग किया गया था। डेटा को स्कोपस, मेडलाइन, साइकइनफ़ो, प्रोक्वेस्ट, वेब ऑफ़ साइंसेज और ग्रे लिटरेचर जैसी प्रासंगिक संस्थागत वेबसाइटों से एकत्र किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए विषयगत संश्लेषण और अनुपात परीक्षण का उपयोग किया गया।

दुआ, शिखा, मेहता, ऋचा और त्यागी, अंशु (2021) [129] - इस अध्ययन "बाल श्रम का आंशिक मूल्यांकन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य" से पता चला कि बाल श्रम का मुख्य कारण आबादी के वयस्क गरीब वर्ग में व्यापक बेरोजगारी और बेरोजगारी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण इसने विकराल रूप धारण कर लिया है। तथ्य और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई।

अहाद, मोहम्मद अब्दुल, पैरी, यवोन करेन और विलिस, एलीन एम. (2021) [130]- इस अध्ययन "चार दक्षिण एशियाई देशों के संदर्भ में बाल श्रम दुरुपयोग की व्यापकता और प्रभाव: एक स्कोपिंग समीक्षा" से पता चला कि बाल श्रमिकों के खिलाफ शारीरिक शोषण (15.14%) सभी अध्ययनों (2.3% -73.27%) में असमानता थी। भावनात्मक शोषण का प्रचलन शारीरिक शोषण से तीन गुना से अधिक था। यौन शोषण की दर (16.82%) मापी गई, उसके बाद बाल श्रम की उपेक्षा (12.9%) मापी गई। पीड़ितों और देखभाल करने वालों की विशेषताएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार दुर्व्यवहार के प्रबल भविष्यवक्ता हैं। माता-पिता की टालमटोल भी गरीबी के बाद बाल श्रम की दरों से जुड़ी थी। PRISMA ढांचे के अनुसार, अध्ययन के लिए स्कोपिंग समीक्षा का उपयोग किया गया था। डेटा को स्कोपस, मेडलाइन, साइकइनफ़ो, प्रोक्वेस्ट, वेब ऑफ़ साइंसेज और ग्रे लिटरेचर जैसी प्रासंगिक संस्थागत वेबसाइटों से एकत्र किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए एक विषयगत संश्लेषण और अनुपात परीक्षण का उपयोग किया गया था।

भारत में दुनिया में सबसे अधिक बाल श्रमिक हैं। स्वतंत्रता के 75 साल बाद भी विभिन्न कानूनों और नीतियों के अस्तित्व में आने के बाद भी, भारत में गरीबी की समस्या अभी भी चिंताजनक अनुपात में बनी हुई है। बड़ी संख्या में बच्चे कुटीर उद्योगों और बीड़ी, कालीन, पटाखे, माचिस, चूड़ियाँ आदि जैसे उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करने वाली छोटी-छोटी इकाइयों में काम करना जारी रखते हैं। हालाँकि, भारत में बाल श्रमिकों की संख्या के अनुमान में, विभिन्न शोध निकाय अलग-अलग आँकड़ों पर पहुँचे हैं। ऐसा मुख्य रूप से बाल श्रम का अनुमान लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कार्यप्रणाली में अंतर के कारण होता है और साथ ही 'बाल श्रम' और 'काम' की परिभाषा से संबंधित अंतरों के कारण भी होता है। उदाहरण के लिए, जब बच्चे परिवार की इकाई के हिस्से के रूप में काम करते हैं तो बाल श्रम को मान्यता नहीं दी जा सकती है। यह विशेष रूप से कृषि और संबद्ध उद्योगों में आम है जहाँ पूरा परिवार एक साथ काम कर सकता है और अपनी आजीविका कमा सकता है।

2.2. बुनियादी मुद्दे:

- बाल श्रम, काम करने की स्थितियों के लिए मौजूदा कानूनों के बारे में कर्मचारियों की अज्ञानता है।
- बाल मजदूर झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं।
- बाल श्रम बल को अपनी आजीविका सीखने के लिए प्रतिदिन 15 से 18 घरों में काम करना पड़ता है।
- बाल श्रम बल गरीब किसानों के वर्ग से आता है।
- परिभाषित उद्योग में कार्यरत लड़कियाँ गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों से आती हैं।
- परिणामस्वरूप बाल मजदूरों में शराब और धूम्रपान की दर बहुत अधिक है।
- मध्यम आयु का कोई भी बच्चा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घर या बाहर काम करने के लिए मजबूर होता है, वह बाल श्रमिक है।
- सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय के बच्चे लगे हुए थे और बच्चों की आर्थिक गतिविधि अत्यधिक गतिशील है, मुख्य रूप से अनौपचारिक क्षेत्र में अव्यवस्थित है।
- बाल श्रम की भयावहता के बारे में श्रम विभाग और बाल श्रम पर अंकुश लगाने के लिए।
- बाल श्रम का मुख्य कारण अत्यधिक गरीबी है और कृषि अधिकांश आबादी का मुख्य व्यवसाय है जिसके लिए अधिक हाथों की आवश्यकता होती है।
- काम करने वाले बच्चों का चयन सात व्यवसायों से किया गया, जैसे चाय की दुकान और ढाबा, घरेलू सेवाएँ, जूता पॉलिश, ऑटोमोबाइल, साइकिल मरम्मत, चिथड़े और अन्य अपशिष्ट पदार्थों का संग्रह, समाचार पत्र/विक्रेता और दूध की बोतल बाँटने वाले लड़के।
- श्रम की घटनाओं को कम करने में प्रभावी हो सकता है।
- कार्यस्थल में बच्चों के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए उपभोक्तावाद पर्याप्त नहीं है।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एक बच्चे की कामकाजी स्थिति समान थी।
- भारत में, माता-पिता लड़कियों के काम के बारे में अलग-अलग निर्णय लेते हैं।
- बढ़ती अर्थव्यवस्था के कारण जिन बच्चों का प्राथमिक कार्य स्कूल है, उनका अनुपात कम हो गया है, जहाँ रोजगार के अधिक अवसर हैं,
- गरीबी और परिवार की आय कमाने की मजबूरी ने आदिवासी बच्चों को स्कूलों से बाहर कर दिया। • बाल श्रम पर वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट नहीं है।

- बाल श्रम को कम करने के लिए एक सामाजिक आंदोलन की तत्काल आवश्यकता है।
- व्यावसायिक खुलापन, मानव पूंजी में निवेश और वित्तीय विकास बाल श्रम में कमी से जुड़े हैं।
- बच्चों की मजदूरी के लिए काम के घंटों में भिन्नता मुख्य रूप से घरेलू स्तर के कारकों के कारण होती है।
- बाल श्रम पर व्यापार के खुलेपन का प्रभाव बाल श्रम में कमी के अनुरूप है।
- नीति सुधारों के निहितार्थ जो बाल श्रम को कम करने में मदद करते हैं।
- बाल श्रम की समस्या को सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को शामिल करते हुए हस्तक्षेप के कॉकटेल के माध्यम से निपटना होगा।
- पारिवारिक जीवन की निर्णय लेने की प्रक्रिया के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना समाज में बाल श्रम को कम करने में मदद कर सकता है।
- सामाजिक और आर्थिक कारकों की एक विविध श्रेणी बाल श्रम को बढ़ाती है।
- बाल श्रम का मुख्य कारण व्यापक बेरोजगारी और अल्परोजगार है।

2.3. पद्धतिगत मुद्दे:

कई बाल श्रम में विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया गया है जैसे साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली, सह-अनुसूची, केस स्टडी, तुलनात्मक विधि, साक्षात्कार विधि, क्षेत्र अध्ययन विधि और द्वितीयक स्रोत तिथि संग्रह तकनीक।

अध्याय-3

अध्ययनाधीन क्षेत्र और शोध पद्धति

कार्यप्रणाली सामाजिक अनुसंधान है जो आज भी सामाजिक अनुसंधान का अभिन्न अंग बना हुआ है, यह माना जाता है कि सभी सामाजिक समस्याओं की पहचान और समाधान सामाजिक अनुसंधान कार्यप्रणाली के व्यापक और उचित उपयोग में निहित है। वे विधियाँ एक सैद्धांतिक ढाँचा प्रदान करने में मदद करती हैं जिससे अध्ययन किए जाने वाले दोष की सीमा को कम किया जा सके।

3.1. उद्देश्य

1.समाज में बाल श्रम की मात्रा को मापना।

2. बाल श्रम की संरचना को समझना –

(ए) सामाजिक संरचना: धर्म के अनुसार, मामले के अनुसार, क्षेत्र के अनुसार और आयु के अनुसार।

(बी) आर्थिक संरचना: माता-पिता का व्यवसाय और आय संरचना।

3. बाल श्रम पर प्रवास का प्रभाव।

4. बाल श्रम के कारणों का विश्लेषण करना - सामाजिक बनाम आर्थिक कारण।

5. बच्चों के मनोविज्ञान, उनके स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा और उनके पारिवारिक जीवन आदि पर बाल श्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

3.2. परिकल्पनाएँ

अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण करने का प्रस्ताव है

1. अधिनियम बच्चों को श्रम के रूप में काम पर रखने की छोटी प्रथा को नियंत्रित करने में विफल रहे हैं।

2. बाल श्रम बहुत ज़्यादा है और आधिकारिक आँकड़े अवास्तविक हैं।

3. छोटे उत्पादकों और छोटे व्यवसायों में बाल श्रम की घटनाएँ बड़ी इकाइयों की तुलना में ज़्यादा हैं।

4. बच्चों को रोज़ी-रोटी कमाने के लिए घर से दूर धकेलने में सामाजिक परिस्थितियाँ ज़्यादा शक्तिशाली हैं।

5. स्वयं सहायता समूहों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा दी जाने वाली सेवाएँ वास्तविक लाभार्थी तक शायद ही पहुँच पाती हैं।

3.3. शोध पद्धति

इस अध्ययन के लिए डेटा संग्रह निम्नलिखित तरीके से किया गया था। इसमें मुख्य सूचनादाता साक्षात्कार, बाल साक्षात्कार, फ़ोकस समूह चर्चा, अवलोकन, प्रश्नावली और इसी तरह के अन्य तरीके शामिल थे। नीचे, स्पष्टीकरण दिए गए हैं कि किस हद तक प्रत्येक विधि का उपयोग किया गया था और शोध डेटा प्राप्त करने में यह कितनी प्रासंगिक थी। फील्डवर्क शुरू होने से पहले, आगरा जिले के जूता उद्योग में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए साहित्य की समीक्षा बहुत महत्वपूर्ण थी।

यह जनगणना सर्वेक्षण (प्राथमिक डेटा) आधारित अध्ययन है जिसके लिए जानकारी शोधकर्ता द्वारा स्वयं एकत्र की गई है। जूता उद्योग का सर्वेक्षण करने के बाद बाल श्रम से आंकड़े एकत्र करने के लिए एक अनुसूची तैयार की गई है। द्वितीयक आंकड़े विभिन्न पुस्तकालयों और संस्थानों से लिए गए हैं, जैसे कि योजना आयोग का पुस्तकालय, एनएसएसओ, बाल श्रम संस्थान नोएडा, साथ ही लखनऊ, रतन टाटा लाइब्रेरी, दिल्ली, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट, भारत सरकार का एचआरडब्ल्यू प्रकाशन, सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करने में सहायक रहे हैं।

प्रारंभिक रूप से मौजूदा साहित्य की समीक्षा तैयार की गई है, इसके बाद आगरा जिले के सड़क किनारे के जूता उद्योग के लिए डेटा एकत्र किया गया है। संरचना में परिवर्तन का पता लगाने के लिए डेटा को कई तरीकों से वर्गीकृत किया गया है और उसके बाद तालिकाएं तैयार की गई हैं। नीतिगत परिवर्तनों का अध्ययन विभिन्न सरकारी प्रकाशनों के आधार पर किया गया है और बाल श्रम के आंकड़ों के आधार पर उनके प्रभाव की जांच की गई है।

मुद्दों की उचित जांच करने के बाद अवलोकन किया गया है और नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं।

मुद्दों की उचित जांच करने के बाद अवलोकन किया गया है और नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं।

- लिंग, आयु, धर्म, जाति समूह, परिवार का आकार, परिवार का प्रकार, बाल श्रम की शिक्षा, बाधित शिक्षा, शिक्षा की इच्छा, बाल श्रम में रुचि, शिक्षा और शिक्षा दोनों एक साथ, दूसरी नौकरी में जाना, अंशकालिक नौकरी करना चाहते हैं, माता-पिता का व्यवसाय, माता-पिता द्वारा किया जाने वाला वही काम, उनकी सुरक्षा के लिए कोई व्यवस्था, काम के घंटे, काम के घंटे, बाल श्रम के विरुद्ध शिकायत, परिवार की आय, श्रमिकों की श्रेणी, बाल श्रमिकों की संख्या, परिवार का प्रकार, बाल श्रमिकों के माता-पिता का शैक्षिक स्तर, बाल श्रम से संतुष्टि और बाल श्रम से मुक्त होने के संदर्भ में बाल श्रम की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का प्रयास।

- श्रमिक अनाथ हैं, परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, परिवार पर कोई कर्ज नहीं है, माता-पिता द्वारा बाल श्रम को प्रेरित किया जाता है, पढ़ाई में रुचि नहीं है, बाल श्रम के रूप में बाल श्रम के काम में शामिल होने के कारणों के बारे में जानना चाहते हैं। बेरोजगारी और अल्परोजगार के कारण बाल श्रम, मौजूदा कानूनों के बारे में बाल श्रमिकों की अज्ञानता और माता-पिता को पता है कि बाल श्रम एक अपराध है।

- तीसरे प्रश्न का उद्देश्य बाल श्रम की इच्छा, स्वास्थ्य की स्थिति, काम में आने वाली कठिनाइयाँ, खतरनाक काम का सामना करना, नियोक्ता के बुरे व्यवहार का सामना करना, खराब कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना, मानसिक, शारीरिक दबाव, गंदे वातावरण में काम करना, शारीरिक समस्याएँ, शरीर में दर्द, कभी-कभी बुखार, गंभीर बीमारी, शारीरिक दुर्बलता, अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ, बुरी लत, धूम्रपान की लत, तम्बाकू की लत, (शराब) पीना और धूम्रपान, तम्बाकू चबाना, (शराब) पीना जैसी सभी लतों के बारे में जानना है।

- मजदूर बनने के बाद परिवार की आय में वृद्धि, भाई-बहनों की शिक्षा का स्तर बढ़ना, स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार, परिवार के निर्णय लेने में भागीदारी में वृद्धि और माता-पिता पर निर्भरता कम होना, मैं जानना चाहता हूँ।

- पांचवें प्रश्न का उद्देश्य बाल श्रम की सामाजिक स्थिति के बारे में जानना है, बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति के व्यवहार के संदर्भ में बाल श्रम का सामाजिक प्रभाव आकलन, क्या बाल श्रमिकों को समाज में किसी भी सामाजिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है, सामाजिक अपमान का सामना करना पड़ता है, वित्तीय अपमान का सामना करना पड़ता है। मनोवैज्ञानिक दबाव और सामाजिक अपमान, वित्तीय अपमान, मनोवैज्ञानिक दबाव सभी अपमान का सामना करना पड़ता है। 9. कार्यप्रणाली- कार्यप्रणाली सामाजिक अनुसंधान है जो आज सामाजिक अनुसंधान का एक अभिन्न अंग के रूप में बनी हुई है, यह स्वीकार किया जाता है कि सभी सामाजिक समस्याओं की पहचान और समाधान सामाजिक अनुसंधान पद्धति के व्यापक और उचित उपयोग में निहित है। वे विधियां एक सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करने में मदद करती हैं जो अध्ययन किए जाने वाले दोष की सीमा को कम करती हैं।

- वर्तमान अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया: साक्षात्कार अनुसूची और गैर-प्रतिभागी अवलोकन ।

3.4. ब्रह्मांड:

वर्तमान अध्ययन के लिए विभिन्न डेटा संग्रह तकनीकों साक्षात्कार अनुसूची और गैर-प्रतिभागी अवलोकन का उपयोग करके 250 उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र किया जाएगा।

3.5. परिप्रेक्ष्य:

शोध अध्ययन निम्नलिखित दृष्टिकोणों, सैद्धांतिक और संरचनात्मक कार्यात्मक से काम करेगा।

3.6. डेटा संग्रह और विश्लेषण के तरीके और तकनीक:

शोध में उपयोग की जाने वाली विधियाँ और तकनीकें, साक्षात्कार अनुसूची और गैर-प्रतिभागी अवलोकन विधि। शोध को एक वस्तुनिष्ठ नमूने से उपलब्ध डेटा द्वारा समर्थित किया जाएगा। डेटा का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय विधि जैसे माध्य, माध्य और प्रतिशत आदि का विश्लेषण किया जाएगा।

3.7. अध्ययन का क्षेत्र:

भारत 28 राज्यों और 8 क्षेत्रों का एक संघ है।1 2011 से, 1.2 बिलियन की अनुमानित आबादी के साथ, भारत पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बाद दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत दुनिया के 2.4% क्षेत्र को कवर करता है और दुनिया की 17.5% आबादी का घर है।2 सिंधु-गंगा का मैदान दुनिया के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक है, जिसमें उपजाऊ सपाट गहरी जलोढ़ मिट्टी है और यह दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है। दक्कन पठार के पूर्वी और पश्चिमी तटीय क्षेत्र भी भारत में घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। पश्चिमी राजस्थान में थार रेगिस्तान दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले रेगिस्तानों में से एक है।3 हिमालय के साथ उत्तरी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में उपजाऊ घाटियों के साथ ठंडे शुष्क रेगिस्तान हैं। दुर्गम प्राकृतिक बाधाओं के कारण इन राज्यों में अपेक्षाकृत कम जनसंख्या घनत्व है।4

ब्रिटिश भारत में पहली जनगणना 1872 में की गई थी। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से हर 10 साल में जनगणना की जाती है, जिसमें से पहली 1951 में हुई थी।5 भारत में जनगणना गृह मंत्रालय के तहत रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त के कार्यालय द्वारा की जाती है, और यह संघीय सरकार द्वारा किए जाने वाले सबसे बड़े प्रशासनिक कार्यों में से एक है।6

नवीनतम जनसंख्या के आंकड़े भारत की 2011 की जनगणना पर आधारित हैं।7 2001-2011 के दशक में, भारत की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 2.15 प्रतिशत से घटकर 1.76 प्रतिशत हो गई। दशक की जनगणना के अनुसार, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव में सबसे अधिक 55.1% की वृद्धि दर है, इसके बाद मेघालय (27.8%) और अरुणाचल प्रदेश (25.9%) का स्थान है। नागालैंड में सबसे कम वृद्धि दर 0.5 प्रतिशत दर्ज की गई।8

भारत में 641,000 बसे हुए गांव हैं और कुल आबादी का 72.2% इन ग्रामीण इलाकों में रहता है।8 इनमें से 145,000 गांवों की आबादी 500 से 999 के बीच है। 130,000 गांवों में 1000-1999 लोग और 128,000 गांवों में 200-499 लोग रहते हैं। 3,961 गांव ऐसे हैं जिनकी आबादी 10,000 और उससे ज़्यादा है।2 भारत की 27.8% शहरी आबादी 5,100 से ज़्यादा शहरों और 380 से ज़्यादा महानगरीय इलाकों में रहती है। 1991–

200110, 11 अंतिम निवास स्थान के आधार पर शुद्ध प्रवासियों के आधार पर, महाराष्ट्र ने पिछले दशक में 2.3 मिलियन के साथ सबसे अधिक प्रवास किया, उसके बाद राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (1.7 मिलियन), गुजरात (0.68 मिलियन) और हरियाणा (0.67 मिलियन) का स्थान है। उत्तर प्रदेश (-2.6 मिलियन) और बिहार (-1.7 मिलियन) अंतरराष्ट्रीय आव्रजन की सूची में सबसे ऊपर हैं। 12 उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश के पांच राज्य भारत की कुल आबादी का लगभग आधा (47.90%) प्रतिनिधित्व करते हैं [2, 4, 5, 131-140]।

जबकि राष्ट्रीय औसत लिंग अनुपात 2001 में 933 से बढ़कर 2011 में 940 हो गया, 2011 की जनगणना बच्चों के लिंग अनुपात में तेज गिरावट दिखाती है,यानी, 0 से 6 वर्ष की आयु के समूह में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या। पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, मिजोरम और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह जैसे सात राज्यों ने लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की है। बच्चों का राष्ट्रीय लिंग अनुपात 2001 में 927 से घटकर 2011 में 914 हो गया।7 इसे 2 जून 2014 को तेलंगाना की आधिकारिक शुरुआत के बाद आंध्र प्रदेश की जनगणना के आंकड़ों से अलग कर दिया गया था [141]।

उत्तर प्रदेश की सीमा उत्तर पश्चिम में उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा और दिल्ली, दक्षिण पश्चिम में राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पूर्व और दक्षिण में छत्तीसगढ़ और झारखंड से लगती है। 23 ° 52'N और 31 ° 28'N और अक्षांश 77 ° 3' और 84 ° 39'पूर्व के बीच स्थित, यह क्षेत्र के हिसाब से देश का चौथा सबसे बड़ा राज्य और जनसंख्या के हिसाब से पहला राज्य है। उत्तर प्रदेश को तीन अलग-अलग ऊंचाई वाले क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है केंद्र में आनुवंशिक मैदान - बहुत उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी। समतल भूमि, जिसमें कई झीलें, तालाब और नदियाँ हैं। ढलान 2 मीटर/किमी। दक्षिण में विंध्य की पहाड़ियाँ और पठार कठोर चट्टानें हैं।

राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र आनुवांशिक मैदान है, जो पूर्व से पश्चिम तक राज्य की पूरी लंबाई में फैला हुआ है। संपूर्ण जलोढ़ मैदान को तीन उप-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। पहला पूर्वी मार्ग है, जिसमें 14 क्षेत्र शामिल हैं जो समय-समय पर बाढ़ और सूखे के अधीन हैं और अपर्याप्त क्षेत्रों के रूप में वर्गीकृत हैं। इन क्षेत्रों में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व है, जिससे प्रति व्यक्ति भूमि क्षेत्र सबसे कम है। अन्य दो क्षेत्र,

मध्य और पश्चिमी, विकसित सिंचाई प्रणाली के साथ तुलनात्मक रूप से बेहतर हैं। वे अतिप्रवाह और उपयोग के बड़े क्षेत्रों से ग्रस्त हैं। आनुवांशिक मैदान की सिंचाई यमुना, गंगा और रामगंगा, गोमती, गगरा और गंडक की मुख्य सहायक नदियों द्वारा की जाती है। पूरा मैदान जलोढ़ और बहुत उपजाऊ है। यहाँ उगाई जाने वाली मुख्य फ़सलें चावल, गेहूँ, बाजरा, चना और जौ हैं इसमें बुंदेलखंड जिले के झांसी, जालौन, बांदा और हमीरपुर के चार जिले, इलाहाबाद जिले में मेजा और करछखान तहसीलें, गंगा के दक्षिण में पूरा मिर्जापुर जिला और चंदौली जिले में चकिया तहसील शामिल हैं। यहाँ की ज़मीन मज़बूत है और यहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। बेतवा और केन नदियाँ इस क्षेत्र के दक्षिण-पश्चिम से यमुना में मिलती हैं। यहाँ चार अलग-अलग तरह की मिट्टी है, जिनमें से दो पर खेती करना मुश्किल है। यह काली कपास की मिट्टी है। वर्षा विरल और रुक-रुक कर होती है, और जल संसाधन दुर्लभ हैं। बड़े पैमाने पर सूखी खेती की जाती है।

3.8. जिले के बारे में

भारत जनसंख्या की दृष्टि से दुनिया में दूसरे स्थान पर है। भारतीय राज्यों में, उत्तर प्रदेश एक घनी आबादी वाला राज्य है, जिसकी अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है (भारत की जनगणना 2011)। आगरा गंगा और यमुना के मैदानों के बीच स्थित है। आगरा क्षेत्र का क्षेत्रफल 121 वर्ग किमी (46.71 वर्ग मील) है, हालाँकि, आगरा की जनसंख्या दिल्ली से दस गुना कम है। शहरी स्वास्थ्य सेवा में निवेश के लिए आगरा शहर प्राथमिकता वाला शहर है। शहरी गरीबी के मामले में देश का दूसरा सबसे बड़ा शहर आगरा, उत्तर प्रदेश की जूता उद्योग की राजधानी माना जाता है। आगरा दिल्ली से 210 किमी दूर स्थित है। आगरा क्षेत्र निर्देशांक के 28°98’ उत्तर को कवर करता है | घनत्व यू.पी. में जनसंख्या घनत्व 1084 है, जो देश से ज्यादा है। 2001 से 2011 तक जनसंख्या वृद्धि दर में 21 की वृद्धि हुई। आगरा क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर 21 है, लेकिन यू.पी. में लिंग अनुपात 912 और आगरा में 886 है। शिक्षा मंत्रालय में साक्षरता दर भी 75.2 % के करीब है, जो पहले से ही देश और आगरा क्षेत्र में संभव है उत्तर प्रदेश में केवल 0.6% चित्रित जनजाति रहती है।

3.9. स्वास्थ्य अवसंरचना: आगरा जिला

क्षेत्र का स्वास्थ्य अवसंरचना लाभार्थियों को सभी सेवाओं का कुशल प्रावधान सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तालिका 4 क्षेत्र में स्वास्थ्य अवसंरचना का विवरण प्रदान करती है। क्षेत्र में 1 प्रमुख जिला अस्पताल, ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा देने वाले 6-8 सी.एच.सी, विभिन्न ब्लॉकों में लगभग 30-40 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। क्षेत्र में 103 वितरण बिंदु थे। चिकित्सा संस्थान आरामदायक सरकारी भवनों में संचालित होते थे। हालाँकि, क्षेत्र में 108 एम्बुलेंस खराब गुणवत्ता की थीं, क्योंकि क्षेत्र में केवल 100 एम्बुलेंस थीं और 102 एम्बुलेंस में से केवल 36 थीं। क्षेत्र में 62 सहायता स्थानान्तरण थे। निगरानी के उद्देश्य से देखी गई सभी सुविधाएँ अच्छी तरह से सुसज्जित भवनों में रखी और संचालित की गई थीं, हालाँकि कुछ सुविधाओं में सफाई की समस्या थी। सामान्य तौर पर, देखी गई सुविधाओं का स्वास्थ्य अवसंरचना अच्छी तरह से बनाए नहीं रखी गई थी और प्रभावी रूप से काम नहीं कर रही थी। कुछ स्थानों पर सफाई और स्वच्छता की समस्याएँ थीं, कुछ सार्वजनिक सेवा केंद्रों के लिए आवंटित स्थानों का अकुशल उपयोग किया गया था।

3.10. जिला अस्पताल: आगरा का जिला महिला अस्पताल

आगरा क्षेत्र में सबसे बड़ा महिला स्वास्थ्य केंद्र में क्षेत्रीय महिला अस्पताल, जिसमें एक बड़ी जगह है। यह क्षेत्र का सबसे बड़ा सार्वजनिक अस्पताल है, जो सभी विशेषताओं और चिकित्सा उपकरणों से सुसज्जित है। आगरा जिला महिला अस्पताल आसानी से सुलभ था और एक अच्छी तरह से निर्मित सरकारी भवन द्वारा संचालित किया जाता था जिसमें कर्मचारियों के लिए जगह उपलब्ध थी। अस्पताल साफ और स्वस्थ था। आगरा में क्षेत्रीय महिला अस्पताल ने आबादी के बड़े हिस्से की सेवा की क्योंकि निचले केंद्रों में बुनियादी सेवाओं का अभाव था।

आगरा का इतिहास प्राचीन संस्कृतियों, शाही राजवंशों और वास्तुकला के चमत्कारों का एक ताना-बाना है। प्राचीन ग्रंथों में मूल रूप से "अग्रब्रिक" के रूप में उल्लेखित इस शहर की जड़ें 11वीं शताब्दी तक जाती हैं। बाद में इसे राजपूतों ने किलेबंद कर दिया।

16वीं शताब्दी में आगरा का नाम तब प्रसिद्ध हुआ जब यह मुगल साम्राज्य का एक प्रमुख शहर बन गया। 1556 से 1605 तक शासन करने वाले सम्राट अकबर के अधीन, आगरा एक सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। अकबर ने एक किलेबंद महल बनवाया, जिसे आज आगरा किला के नाम से जाना जाता है, जो मुगल शक्ति का प्रतीक बन गया।

शहर का सबसे प्रतिष्ठित स्थल, ताजमहल, 17वीं शताब्दी में शाहजहाँ द्वारा अपनी पत्नी मुमताज महल के मकबरे के रूप में बनवाया गया था। यह वास्तुशिल्प कृति मुगल कला का प्रतीक है और लाखों आगंतुकों को आकर्षित करती है।

मुगल शासन के पतन के बाद, आगरा का महत्व कम हो गया, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र बना रहा। आज यह न केवल अपने ऐतिहासिक स्थलों के लिए जाना जाता है, बल्कि अपने जीवंत बाजारों और स्थानीय शिल्प के लिए भी जाना जाता है, जो भारत की विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।

आगरा के दो इतिहास हैं: एक यमुना नदी के पूर्व या बाएं तट पर स्थित प्राचीन शहर का, जो कृष्ण और महाभारत की किंवदंतियों में इतना पुराना हो गया है कि उसे खो दिया गया है और जिसे सिकंदर लोधी ने 1504-1505 में फिर से स्थापित किया था; दूसरा आधुनिक शहर, जिसकी स्थापना अकबर ने 1558 में नदी के दाहिने तट पर की थी, जो मुगलों से जुड़ा हुआ है, और दुनिया भर में ताज के शहर के रूप में जाना जाता है। प्राचीन आगरा का अब बहुत कम अवशेष बचा है, सिवाय नींव के कुछ निशानों के। यह भारत पर मुस्लिम आक्रमणों से पहले विभिन्न हिंदू राजवंशों के तहत एक महत्वपूर्ण स्थान था, लेकिन इसका इतिहास अस्पष्ट है, और इसमें बहुत कम ऐतिहासिक रुचि है।[142] अब्दुल्ला नामक 17वीं शताब्दी के इतिहासकार ने कहा कि यह सिकंदर लोदी के शासनकाल से पहले एक गांव था। मथुरा के राजा ने आगरा के किले को जेल के रूप में इस्तेमाल किया था । इस स्थल की स्थिति में गिरावट महमूद गजनवी द्वारा लाए गए विनाश का परिणाम थी।[143] । मसूद साद सलमान का दावा है कि जब महमूद ने आगरा पर हमला किया था, तब वह वहाँ मौजूद था, उसने दावा किया कि राजा जापाल ने एक बुरा सपना देखने के बाद आत्मसमर्पण कर दिया था। हालाँकि महमूद ने शहर को लूटना जारी रखा।[144]

सिकंदरा में मरियम-उज़-ज़मानी का मकबरा मूल रूप से 1495 में सुल्तान सिकंदर लोदी द्वारा बारादरी के रूप में बनाया गया था।

आगरा का ऐतिहासिक महत्व सिकंदर लोदी के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ। 1504-1505 में, दिल्ली सल्तनत के अफ़गान शासक सुल्तान सिकंदर लोदी (शासनकाल 1489-1517[145]) ने आगरा का पुनर्निर्माण किया और इसे सरकार की सीट बनाया।[142][146] सिकंदर लोदी ने एक आयोग नियुक्त किया जिसने दिल्ली से इटावा तक यमुना के दोनों किनारों का निरीक्षण और सर्वेक्षण किया और अंत में शहर के लिए यमुना के बाएं किनारे या पूर्वी किनारे पर एक स्थान चुना। यमुना के बाएं किनारे पर बसा आगरा शाही उपस्थिति, अधिकारियों, व्यापारियों, विद्वानों, धर्मशास्त्रियों और कलाकारों के साथ एक बड़े समृद्ध शहर के रूप में विकसित हुआ। यह शहर भारत में इस्लामी शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक बन गया। सुल्तान ने शहर के उत्तरी उपनगरों में सिकंदरा गाँव की स्थापना की और वहाँ 1495 में लाल बलुआ पत्थर की एक बारादरी बनवाई, जिसे जहाँगीर ने मकबरे में बदल दिया और अब यह अकबर की महारानी मरियम-उज़-ज़मानी की कब्र के रूप में खड़ा है।[147][148]

1517 में सुल्तान की मृत्यु के बाद, शहर उनके बेटे, सुल्तान इब्राहिम लोदी (शासनकाल 1517-26[145]) के पास चला गया। उन्होंने आगरा से अपनी सल्तनत पर शासन किया जब तक कि उन्हें 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में मुगल सम्राट बाबर ने पराजित कर मार नहीं दिया।[149]

1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान, जब भारत के कई हिस्सों में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को खतरा था, मेरठ में विद्रोह की खबर 14 मई को आगरा पहुंची। 30 मई को खजाना लाने के लिए मथुरा भेजी गई 44वीं और 67वीं नेटिव इन्फैंट्री की कुछ कंपनियों ने विद्रोह कर दिया और खजाना दिल्ली में विद्रोहियों के पास ले गईं। आगरा में भी विद्रोह फैलने के डर से, इन देशी पैदल सेना बटालियनों के बाकी हिस्से, जो आगरा में गैरीसन का हिस्सा थे, को अंग्रेजों ने 31 मई को सफलतापूर्वक निरस्त्र कर दिया। हालांकि, जब 15 जून को ग्वालियर की टुकड़ी ने विद्रोह किया, तो अन्य सभी देशी इकाइयों ने उसका अनुसरण किया। 2 जुलाई को नीमच और नसीराबाद टुकड़ियों का विद्रोही बल फतेहपुर सीकरी पहुंचा 5 जुलाई को, वहां तैनात ब्रिटिश सेना ने विद्रोहियों की एक सेना पर हमला करने का प्रयास किया, लेकिन हार गई, और अंग्रेज वापस किले में चले गए। लेफ्टिनेंट-गवर्नर, जेआर कॉल्विन की वहीं मृत्यु हो गई, और बाद में उन्हें दीवान-ए-आम के सामने दफनाया गया। हालांकि, विद्रोही दिल्ली चले गए, यह

विद्रोहियों के लिए अधिक महत्वपूर्ण आकर्षण था। शहर में भीड़ द्वारा विद्रोह और अत्यधिक अव्यवस्था के बावजूद, अंग्रेज 8 जुलाई तक आंशिक व्यवस्था बहाल करने में कामयाब रहे। बदले में, दिल्ली सितंबर में अंग्रेजों के हाथों में चली गई, जिसके बाद ब्रिगेडियर एडवर्ड ग्रेथेड के नेतृत्व में एक पैदल सेना ब्रिगेड 11 अक्टूबर को विद्रोहियों के किसी भी विरोध के बिना आगरा पहुंची। लेकिन उनके आगमन के तुरंत बाद यह कहा जा सकता है कि, दिल्ली, झांसी, मेरठ और अन्य प्रमुख विद्रोही शहरों और क्षेत्रों की तुलना में आगरा में विद्रोह अपेक्षाकृत छोटा था। इसके बाद ब्रिटिश शासन फिर से सुरक्षित हो गया, और ब्रिटिश राज ने 1947 में भारत की स्वतंत्रता तक शहर पर शासन किया। 1858 में उत्तर पश्चिमी प्रांतों की राजधानी आगरा से इलाहाबाद स्थानांतरित कर दी गई। धीरे-धीरे, आगरा एक मात्र प्रांतीय शहर की स्थिति में आ गया, और इसकी समृद्धि में गिरावट आई ।

लेकिन ब्रिटिश भारत के प्रशासन की अर्थव्यवस्था में आगरा एक जिला शहर से अधिक कुछ नहीं है। इसका आकार, अनुपात और कई गुना गतिविधियाँ इसकी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप आ गई हैं, और इस शहर में जारी जीवन भारत में उस नीरस मुफ़स्सिल जीवन के औसत से ऊपर नहीं आता है जिसका कई प्रतिभाशाली एंग्लो-इंडियन लेखकों द्वारा इतनी बार और इतने सजीवता से वर्णन किया गया है। आगरा हाल के वर्षों में एक बड़ा रेलवे केंद्र बन गया है, और इसकी वाणिज्यिक समृद्धि फिर से उभरती हुई प्रतीत होती है।।

3.11. आगरा जिला और भूगोल

आगरा के आसपास का क्षेत्र लगभग पूरी तरह से समतल मैदान है, जिसके दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ियाँ हैं। इस क्षेत्र की नदियों में यमुना और चंबल शामिल हैं। इस क्षेत्र को आगरा नहर से भी पानी मिलता है। आसपास के ग्रामीण इलाकों में उगाई जाने वाली फसलों में बाजरा, जौ, गेहूं और कपास शामिल हैं। रबी और खरीफ दोनों फसलों की खेती की जाती है। फतेहपुर सीकरी का निर्जन शहर आगरा से लगभग 40 किमी दक्षिण पश्चिम में है। फतेहपुर सीकरी के पास और जिले की दक्षिण-पूर्वी सीमाओं पर बलुआ पत्थर की पहाड़ियाँ मध्य भारत की विंध्य श्रेणी की शाखाएँ हैं। आगरा राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली (यमुना एक्सप्रेसवे के माध्यम से) से लगभग 210 किमी दूर है,राज्य की राजधानी लखनऊ (आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे के माध्यम से) से लगभग 336 किमी दूर है।

3.12. सामान्य प्रशासन

आगरा नगर निगम या आगरा नगर निगम (AMC या ANN) आगरा शहर के नागरिक बुनियादी ढांचे और प्रशासन के लिए जिम्मेदार नगर निगम है। यह नागरिक प्रशासनिक निकाय शहर की सार्वजनिक सेवाओं का प्रबंधन करता है। महापौर और नगर पार्षद पाँच साल के कार्यकाल के लिए चुने जाते हैं। आगरा नगर निगम चार क्षेत्रों (हरिपर्वत, लोहामंडी, ताजगंज और छत्ता) की देखरेख करता है, जिन्हें आगे 100 वार्डों में विभाजित किया गया है। एएमसी की सीमा 121 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को घेरती है। आगरा विकास प्राधिकरण (ADA), शहर में नए आवास, बुनियादी ढाँचे और कॉलोनियों का विकास कर रहा है।

3.13. पुलिस प्रशासन

आगरा जिला आगरा पुलिस जोन और आगरा पुलिस रेंज के अंतर्गत आता है, आगरा जोन का नेतृत्व अतिरिक्त महानिदेशक (ADG)-रैंक वाले भारतीय पुलिस सेवा (IPS) अधिकारी करते हैं, और आगरा रेंज का नेतृत्व उप महानिरीक्षक (DIG)-रैंक वाले IPS अधिकारी करते हैं।

जिला पुलिस का नेतृत्व एक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (SSP) करते हैं, जो एक IPS अधिकारी होते हैं, और उन्हें शहर, पूर्व, पश्चिम, अपराध, यातायात और प्रोटोकॉल के लिए छह पुलिस अधीक्षक या अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जो या तो IPS या प्रांतीय पुलिस सेवा से होते हैं। कई पुलिस सर्किलों में से प्रत्येक का नेतृत्व पुलिस उपाधीक्षक के पद के एक सर्किल अधिकारी द्वारा किया जाता है।

3.14. बुनियादी ढांचा और नागरिक प्रशासन

आगरा का बुनियादी ढांचा और नागरिक प्रशासन काफी विकसित हुआ है, खासकर एक प्रमुख पर्यटन स्थल और शहरी केंद्र के रूप में इसके विकास के साथ। आगरा में सड़कों का एक सुविकसित नेटवर्क है, जो इसे दिल्ली, जयपुर और ग्वालियर जैसे प्रमुख शहरों से जोड़ता है। राष्ट्रीय राजमार्ग 2 (NH-2) एक प्रमुख मार्ग है। शहर को आगरा कैंट रेलवे स्टेशन द्वारा सेवा प्रदान की जाती है, जो इसे भारत भर के कई महत्वपूर्ण शहरों से जोड़ता है।

आगरा हवाई अड्डा (खेरिया हवाई अड्डा) घरेलू उड़ानें प्रदान करता है और इसे कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए विकसित किया जा रहा है।

जल आपूर्ति: शहर की जल आपूर्ति का प्रबंधन आगरा जल संस्थान द्वारा किया जाता है, जो पाइप से पानी उपलब्ध कराता है और इसने गुणवत्ता और पहुँच में सुधार के लिए परियोजनाएँ शुरू की हैं। आगरा नगर निगम अपशिष्ट प्रबंधन की देखरेख करता है, ठोस अपशिष्ट निपटान और स्वच्छता के लिए प्रणालियों को लागू करता है।

स्वास्थ्य सेवा: आगरा में कई अस्पताल हैं, जो सार्वजनिक और निजी दोनों हैं, जिनमें मेडिकल कॉलेज और विशेष अस्पताल शामिल हैं।

शिक्षा: शहर में स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक कई शैक्षणिक संस्थान हैं, जो इसकी साक्षरता दर में योगदान करते हैं।

आगरा का शासन आगरा नगर निगम द्वारा किया जाता है, जो नागरिक सुविधाओं, बुनियादी ढांचे के विकास और शहरी नियोजन के लिए जिम्मेदार है। महापौर और निर्वाचित परिषद सदस्य इसके संचालन का प्रबंधन करते हैं।

शहर आगरा जिले का हिस्सा है, जिसकी देखरेख एक जिला मजिस्ट्रेट करता है जो कानून और व्यवस्था, राजस्व संग्रह और सार्वजनिक प्रशासन को संभालता है।

उत्तर प्रदेश के हिस्से के रूप में, आगरा का नागरिक प्रशासन व्यापक नीतियों और पहलों, विशेष रूप से पर्यटन और शहरी विकास के लिए राज्य सरकार के विभागों के साथ बातचीत करता है।

कुल मिलाकर, आगरा के बुनियादी ढांचे और नागरिक प्रशासन को इसकी बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करते हुए एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में इसकी भूमिका का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

3.15. केंद्रीय सरकार के कार्यालय

आगरा में केंद्र सरकार के कई महत्वपूर्ण कार्यालय हैं जो प्रशासन और सार्वजनिक सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख कार्यालय दिए गए हैं:

आयकर विभाग: कर संग्रह और प्रशासन के लिए जिम्मेदार।
केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क विभाग: सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क का प्रबंधन करता है, व्यापार और राजस्व को सुविधाजनक बनाता है।

डाक विभाग (इंडिया पोस्ट): क्षेत्र में डाक सेवाओं और अन्य संबंधित कार्यों का संचालन करता है।

केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS) कार्यालय: केंद्र सरकार के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है।

रेल मंत्रालय: रेलवे नेटवर्क से संबंधित संचालन और सेवाओं की देखरेख करता है, जिसके कार्यालय स्थानीय रेलवे सेवाओं का समन्वय करते हैं।

भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL): राज्य के स्वामित्व वाली दूरसंचार कंपनी दूरसंचार सेवाएँ प्रदान करती है और संबंधित बुनियादी ढाँचे का प्रबंधन करती है।

ये कार्यालय सरकारी सेवाओं के कुशल संचालन में योगदान करते हैं और आगरा में लोक कल्याण कार्यक्रमों के प्रशासन में सहायता करते हैं।

3.16. राजस्व सृजन

आगरा का राजस्व सृजन बहुआयामी है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले विभिन्न क्षेत्रों द्वारा संचालित है। यहाँ मुख्य घटक हैं:

ऐतिहासिक स्थल: ताजमहल, आगरा किला और अन्य स्मारक सालाना लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जो प्रवेश शुल्क, निर्देशित पर्यटन और संबंधित सेवाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करते हैं। आतिथ्य: होटल, रेस्तरां और यात्रा सेवाएँ पर्यटकों की सेवा करती हैं, रोजगार प्रदान करती हैं और स्थानीय आय में योगदान देती हैं।

स्थानीय बाजार: आगरा में चमड़े के सामान, हस्तशिल्प और संगमरमर के उत्पादों के लिए जाने जाने वाले चहल-पहल भरे बाजार हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से बेचा और निर्यात किया जाता है। थोक और खुदरा: शहर आसपास के क्षेत्रों के लिए एक वाणिज्यिक केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो थोक व्यापार के माध्यम से राजस्व बढ़ाता है।

कृषि क्षेत्र अर्थव्यवस्था में योगदान देता है, जिसमें गेहूं, जौ और फल जैसी फसलें स्थानीय किसानों के लिए आय के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। आगरा में विनिर्माण क्षेत्र बढ़ रहा है, विशेष रूप से चमड़ा प्रसंस्करण, कपड़ा और खाद्य उत्पादों में, जो इसके आर्थिक उत्पादन में योगदान देता है।

कर: स्थानीय नगर निगम संपत्ति कर, बिक्री कर और अन्य शुल्क एकत्र करता है जो शहर के राजस्व में योगदान करते हैं। केंद्र और राज्य अनुदान: आगरा को बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और विकास पहलों के लिए राज्य और केंद्र दोनों सरकारों से वित्तीय सहायता मिलती है।

विभिन्न त्यौहार और सांस्कृतिक कार्यक्रम आगंतुकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय व्यवसायों और सेवाओं को बढ़ावा मिलता है।

कुल मिलाकर, आगरा की विविध आर्थिक गतिविधियाँ और एक पर्यटन स्थल के रूप में इसकी स्थिति इसके राजस्व सृजन, स्थानीय आजीविका का समर्थन करने और शहर के विकास में योगदान देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। ।

अध्याय-4

विभिन्न अधिनियम और उनके निहितार्थ

विकासशील देशों में बाल श्रम की समस्या अधिक गंभीर रही है। हमारे देश में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अज्ञानता, पारंपरिक सोच और बाल श्रम कानूनों के उचित कार्यान्वयन की कमी के कारण, बाल श्रम की समस्या अभी भी हमारे समाज में बनी हुई है। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चे विभिन्न क्षेत्रों में और बहुत खतरनाक परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। हमारे देश में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़ रही है और दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में हमारे देश में बाल श्रमिकों की संख्या अधिक है। हमारे संविधान और कानूनों में बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए कई प्रावधान दिए गए हैं लेकिन देश में प्रचलित सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने और शिक्षा के अधिकार का आनंद लेने के लिए मजबूर नहीं करती हैं। इस पत्र में हमारे देश में बाल श्रम कानूनों, बाल श्रम के कारणों और बाल श्रम को नियंत्रित करने के सुझावों का संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया गया है। विकासशील देशों में बाल श्रम की समस्या अधिक गंभीर रही है।

हमारे देश में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, अज्ञानता, पारंपरिक सोच और बाल श्रम कानूनों के उचित कार्यान्वयन की कमी के कारण, बाल श्रम की समस्या अभी भी हमारे समाज में बनी हुई है। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चे विभिन्न क्षेत्रों में तथा अत्यंत खतरनाक परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। हमारे देश में बाल श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हो रही है तथा विश्व के किसी भी अन्य देश की तुलना में हमारे देश में बाल श्रमिकों की संख्या अधिक है। हमारे संविधान तथा कानूनों में बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं, लेकिन देश में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने तथा शिक्षा के अधिकार का लाभ उठाने के लिए बाध्य नहीं करती हैं। इस पत्र में हमारे देश में बाल श्रम कानूनों, बाल श्रम के कारणों तथा बाल श्रम को नियंत्रित करने के सुझावों का संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया गया है।

विकासशील देशों में बाल श्रम को नियंत्रित करना असंभव है, क्योंकि बच्चों को अपने परिवार का भरण-पोषण करने, अपने परिवार का भरण-पोषण करने तथा स्वयं अपना पेट पालने के लिए सहायक माना जाता है। गरीबी, अशिक्षा तथा बेरोजगारी के कारण माता-पिता अपने बच्चों का भरण-पोषण करने तथा अपने परिवार का

भरण-पोषण करने का भार वहन करने में असमर्थ होते हैं। इसलिए, गरीब माता-पिता अपने बच्चों को कम मजदूरी पर अमानवीय परिस्थितियों में काम करने के लिए भेज देते हैं। बाल श्रम के कारण बच्चों का मानसिक तथा शारीरिक विकास अविकसित रह जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। बाल श्रम कानूनों के उचित क्रियान्वयन की कमी, बाल कल्याण योजनाओं के अनुचित क्रियान्वयन तथा महिला एवं बाल कल्याण विभाग द्वारा अनुचित जांच के कारण, बाल श्रम की समस्या हमारे समाज में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बनी हुई है। हमारे देश में बच्चे कूड़ा बीनने, ढाबों में बर्तन धोने, छोटे कारखानों में मजदूर के रूप में, बड़े शहरों में घरेलू सहायक के रूप में काम करते हैं। दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में भारत में सबसे अधिक संख्या में बच्चे कार्यरत हैं।

6-14 वर्ष की आयु के 179 मिलियन बच्चों में से लगभग 90 मिलियन बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं तथा किसी न किसी व्यवसाय में लगे हुए हैं, इसलिए हमारे देश के लगभग 50 प्रतिशत बच्चे बाल श्रम में लगे हुए हैं। बड़ी संख्या में बच्चे कुटीर उद्योगों में लगे हुए हैं: कालीन, माचिस, पटाखे, बीड़ी, पीतल के बर्तन, हीरा, कांच, तथा होजरी, हाथ से बुने कपड़े, चमड़े के सामान, प्लास्टिक, चूड़ियाँ, खेल के सामान, दुकानों पर सहायक के रूप में।

4.1. भारत में बाल श्रम कानून

हमारे देश में बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए 1933 से विभिन्न कानून बनाए गए हैं: 1. बाल (श्रम की प्रतिज्ञा) अधिनियम 1933. 2. बाल रोजगार अधिनियम 1938. 3. बॉम्बे दुकान और स्थापना अधिनियम 1948. 4. भारतीय कारखाना अधिनियम 1948.

खान अधिनियम 1952. 7. मर्चेंट शिपिंग अधिनियम 1958. 8. प्रशिक्षु अधिनियम 1961. 9. मोटर परिवहन कर्मचारी अधिनियम 1961. 10. परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962. 11. बीड़ी और सिगार श्रमिक (रोजगार की शर्त) अधिनियम 1966. 12. राज्य की दुकानें और स्थापना अधिनियम 13. बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम 1986. 14. किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000. 15. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 24 हमारा संविधान और कारखाना अधिनियम की धारा 67 स्पष्ट रूप से निर्देश देती है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में काम करने की अनुमति नहीं है। 16. अनुच्छेद 21ए (86वें संशोधन अधिनियम

2002 द्वारा जोड़ा गया) यह प्रावधान करता है कि राज्य 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा। 17. अनुच्छेद 45 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करता है।1

4.2. बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार के प्रयास

बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम 1986 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ऐसे 16 व्यवसायों और 65 प्रक्रियाओं में नियोजित करने पर प्रतिबंध लगाता है जो बच्चों के जीवन और स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं। 10 दिसंबर, 1996 को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार, अधिनियम के प्रावधान के तहत नियोजित प्रत्येक बच्चे के लिए 2000 रुपये की राशि के संग्रह के लिए उल्लंघन करने वाले कर्मचारियों को वसूली नोटिस जारी किया गया है। किसी भी बच्चे को खतरनाक व्यवसायों में नियोजित नहीं किया जा सकता है। हरियाणा सहित कई राज्यों ने बाल श्रम पुनर्वास केंद्र गठित किए हैं । इस समस्या के समाधान के लिए जिला स्तर पर शिक्षा-सह-कल्याण कोष तथा अलग-अलग श्रम प्रकोष्ठों का गठन किया जा रहा है।

केन्द्र सरकार द्वारा 1988 से राज्यों में अनौपचारिक शिक्षा तथा पूर्व-व्यावसायिक कौशल प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं।

2001 से सभी राज्यों में गरीब तथा कार्यरत बच्चों को शिक्षित करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान शुरू किया गया है।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय अनौपचारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है।

आंगनबाड़ियों की स्थापना भी बच्चों के कल्याण तथा उनके शारीरिक, मानसिक तथा शैक्षिक विकास के लिए सरकार द्वारा उठाया गया एक बड़ा कदम है।

4.3. बाल श्रम कानूनों के समुचित क्रियान्वयन में आने वाली बाधाएं

बाल श्रम कानूनों के समुचित क्रियान्वयन में आने वाली कुछ बड़ी बाधाएं निम्नलिखित हैं:

1. बाल श्रम कानूनों के बारे में नागरिकों में जागरूकता का अभाव। जो लोग बच्चों को काम पर रख रहे हैं, उन्हें बाल श्रम कानूनों, इसके प्रावधानों तथा दोषियों पर जुर्माने के बारे में जानकारी नहीं है।
2. गरीबी का दुष्चक्र, बड़ी संख्या में लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं, उनके पास अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पैसे नहीं हैं, इसलिए वे अपने बच्चों को काम पर भेजते हैं और अपने जीवनयापन के लिए पैसे कमाते हैं।
3. निरक्षरता: निरक्षर लोग अधिक कमाने में सक्षम नहीं होते हैं और नियमों और विनियमों के बारे में पढ़ने और समझने में सक्षम नहीं होते हैं।
4. बाल श्रम को नियंत्रित करने के संबंध में स्थानीय सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और अप्रभावी भूमिका।
5. कानून को लागू करने के लिए जिम्मेदार प्रशासनिक मशीनरी में दक्षता की कमी।
6. बेरोजगारी
7. माता-पिता की इच्छाशक्ति।
8. शैक्षिक और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी

4.4. सुझाव

1. संबंधित अधिकारियों द्वारा बच्चों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का उचित कार्यान्वयन।
2. गैर सरकारी संगठन बाल श्रमिकों के पुनर्वास में बहुत प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।
3. बाल श्रम कानूनों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मीडिया भी एक महत्वपूर्ण साधन है।
4. बाल श्रम को नियंत्रित करने में स्थानीय सरकारों द्वारा प्रमुख भूमिका निभाई जा सकती है।
5. निशुल्क शिक्षा वाले विद्यालयों में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

4.5. निष्कर्ष

बाल श्रम पर तभी लगाम लग सकती है जब हम लोग अपने आस-पास के बच्चों के शारीरिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास के बारे में कम चिंता करें। नागरिक समाज का यह कर्तव्य है कि वह उनसे शारीरिक मदद न करके उन्हें उनका बचपन प्रदान करे।

अध्याय-5

डेटा विश्लेषण

5.1. नमूने का अवलोकन

अध्ययन का नमूना आगरा जिले (जूता उद्योग) से 250 उत्तरदाताओं का था। सभी उत्तरदाताओं से शोधकर्ता द्वारा कई स्थानों पर संपर्क किया गया और उन्होंने साक्षात्कार के लिए निर्धारित सभी पहलुओं को पूरा किया, जिसमें सभी प्रमुख खंडों से लेकर संपूर्ण शोध उद्देश्यों को शामिल किया गया: इस अध्याय में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित तालिकाओं में किया गया है।

प्रस्तुत तालिका 5.1 में सभी उत्तरदाताओं को चार प्रमुख आयु समूहों में वर्गीकृत किया गया है, जो निम्नलिखित हैं-

तालिका सं 5.1: आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रम संख्या	उत्तरदाता की आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	% उत्तरदाताओं
1.	6 से 9 वर्ष	33	13.2
2.	10 से 13 वर्ष	122	48.8
3.	14 से 18 वर्ष	95	38
	कुल	**250**	**100**

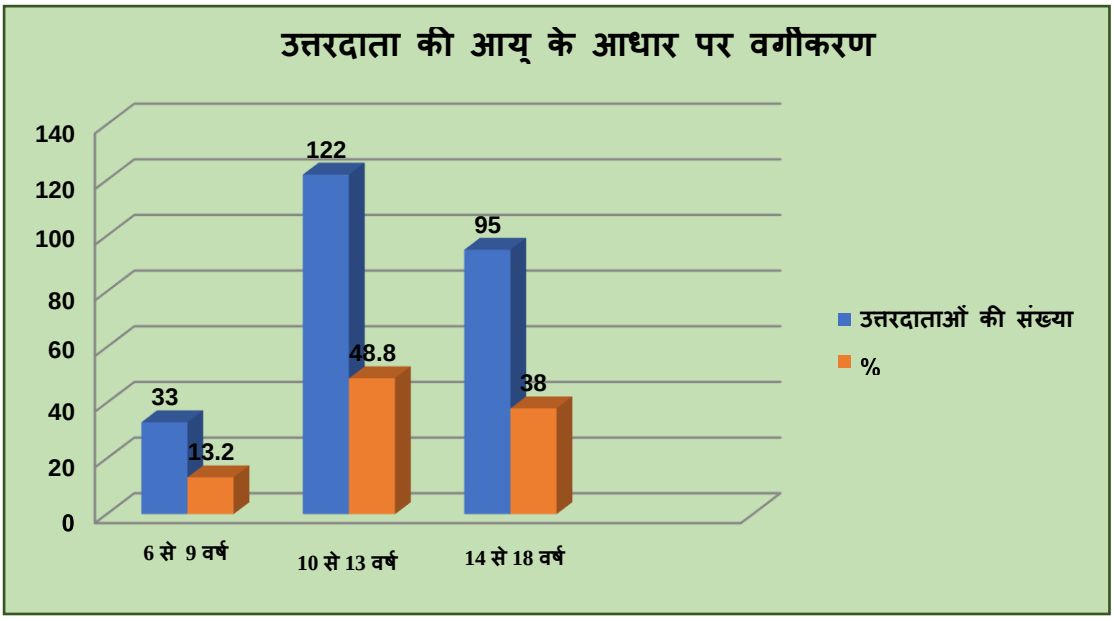

ग्राफ 5.1

उपरोक्त तालिका में यह देखा जा सकता है कि 13.2% उत्तरदाता 6 से 9 वर्ष आयु वर्ग के हैं, 48.8% उत्तरदाता 10-13 वर्ष आयु वर्ग के हैं, 38% उत्तरदाता 14-18 वर्ष आयु वर्ग के हैं। आयु वर्ग के आधार पर विश्लेषण करने पर हमें पता चलता है कि जूता नगरी आगरा में विशेष रूप से, औद्योगिक क्षेत्र में बाल श्रम के बारे में कोई भी साक्षात्कार करना अधिक कठिन है, क्योंकि अधिकांश कारखाना मालिक बच्चों के लिए संरक्षित अधिनियम के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, वे यह स्वीकार नहीं कर सकते कि वे बाल श्रम गतिविधियों में शामिल हैं। उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश बाल श्रमिक 48.8% 10-13 वर्ष आयु वर्ग के हैं।

प्रस्तुत तालिका में लिंग के आधार पर वर्गीकृत सभी उत्तरदाताओं का विवरण इस प्रकार है-

तालिका संख्या 5.2:
लिंग के आधार पर वर्गीकरण उत्तरदाता की स्थिति

क्रम संख्या	उत्तरदाता का लिंग	उत्तरदाताओं की संख्या	% उत्तरदाता
1.	पुरुष	161	64.4
2.	महिला	89	35.6
	कुल	**250**	**100**

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा क्षेत्र से एकत्रित डेटा

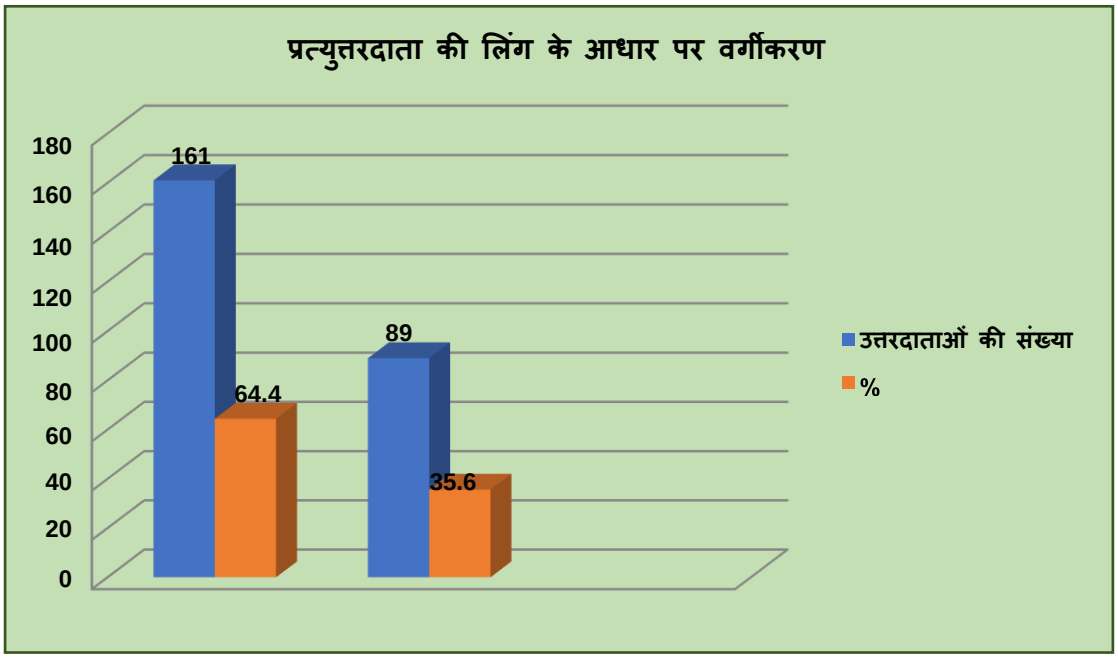

ग्राफ 5.2

उपरोक्त तालिका में यह देखा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाता पुरुष थे, जिनमें से 64.4% केवल 35.6% महिलाएं थीं। शोध कार्य के दौरान बातचीत के दौरान पता चला कि लड़कियां अपने माता-पिता की देखरेख में बाल श्रम में शामिल थीं, उनमें से अधिकांश अपनी मां की देखरेख में थीं। बातचीत के दौरान हमने उनके सामने आने वाली कुछ आर्थिक समस्याओं पर भी चर्चा की, इसलिए वे इस क्षेत्र में अपने माता-पिता के सहयोग के रूप में काम करने के लिए तैयार हो गई।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि इस अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता 64.4% पुरुष थे। कुछ उत्तरदाता जूता उद्योग के संबद्ध क्षेत्र में जीवित रहने के लिए आर्थिक उपयोग देते हैं। बाल श्रम में शामिल अधिकांश लड़कियां लड़कों की तुलना में कम उम्र की थीं, यह बात उत्तरदाताओं के साथ बातचीत के समय ध्यान में आई और धारणा थी कि कार्यस्थल पर लड़कियों के लिए सुरक्षा के मुद्दे हैं।

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं को उनकी जाति के आधार पर सामान्य, ओबीसी और एससी, एसटी और अन्य जातियों के एक वर्ग के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं, जिनका उल्लेख निम्न तालिका में भी किया गया है-

तालिका क्रमांक **5.3 :** जाति			
क्रम संख्या	**उत्तरदाताओं की जाति**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**% उत्तरदाता**
1.	सामान्य जाति	25	10
2.	पिछड़ी जाति	30	12
3.	अनुसूचित जाति	185	74
4.	अन्य	10	04
	कुल	**250**	**100**

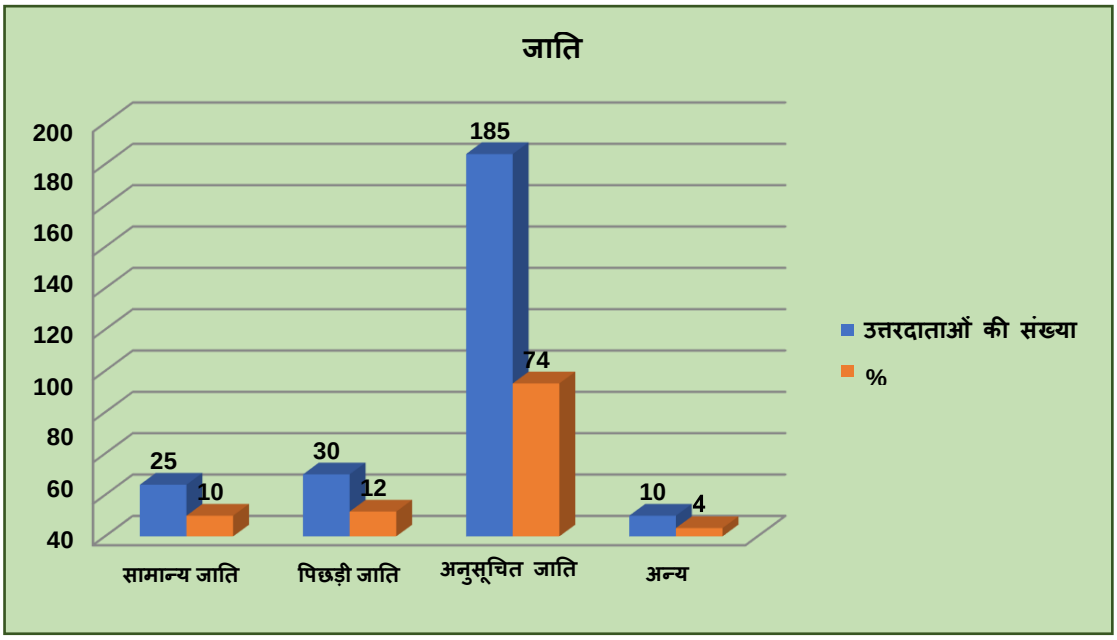

ग्राफ 5.3

उपरोक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 10% उत्तरदाता सामान्य जाति के हैं, 12% उत्तरदाता अन्य पिछड़ी जाति के हैं, 74% उत्तरदाता अनुसूचित जाति के हैं और केवल 4% उत्तरदाता अन्य जाति के हैं।

इस प्रकार, हम पा सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 74% अन्य अनुसूचित जाति के हैं। आवृत्ति अधिक है क्योंकि जूता उद्योग निचली जाति के लोगों के नजदीकी निवास स्थान है, अधिकांश श्रमिक एक या दो बाल श्रमिकों के साथ आते हैं क्योंकि यह परिवार की अतिरिक्त आय है और यह उद्योग मालिकों के लिए फायदेमंद होगा। बाल श्रम में शामिल होना रोजगार की निकटतम उपलब्धता पर निर्भर करता है क्योंकि वे दैनिक महंगा खर्च वहन नहीं कर सकते हैं और सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह संभव नहीं होगा।

निम्नलिखित तालिका में हम सभी उत्तरदाताओं को उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं, जैसा कि नीचे दी गई तालिका में दिया गया है-

तालिका क्रमांक **5.4:** धर्म			
क्रम संख्या	**उत्तरदाता का धर्म**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**% उत्तरदाता**
1.	हिन्दू	185	74
2.	मुस्लिम	45	18
3.	अन्य	20	08
	कुल	**250**	**100**

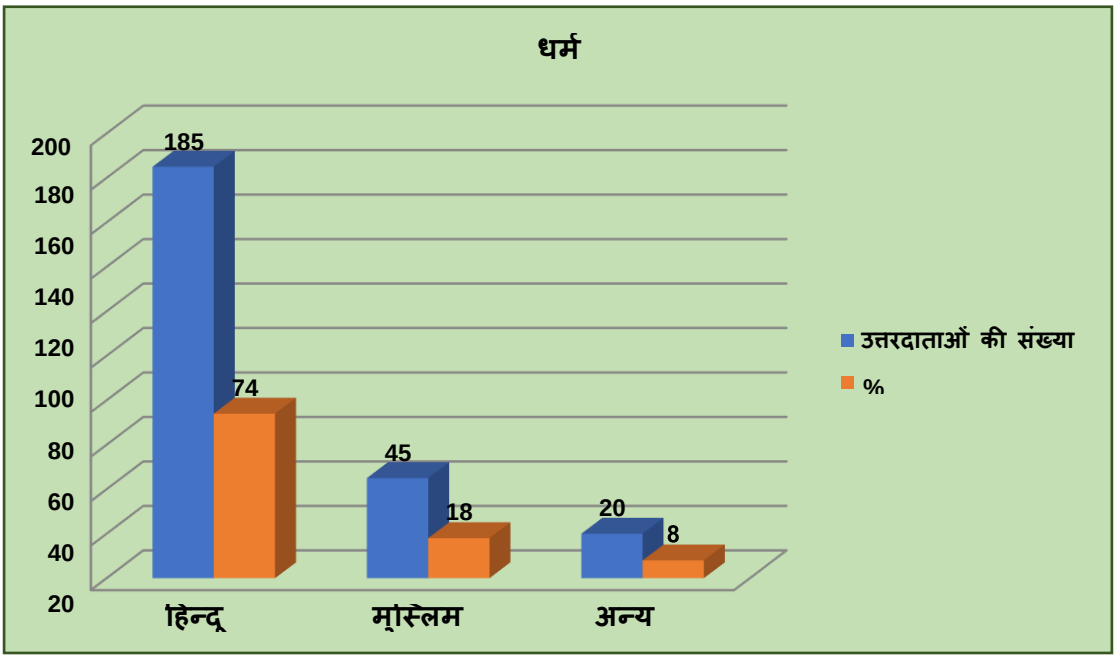

ग्राफ 5.4

उपरोक्त तालिका के अनुसार हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 74% उत्तरदाता हिंदू धर्म से संबंधित हैं, 18% उत्तरदाता मुस्लिम धर्म से संबंधित हैं और 8% उत्तरदाता अन्य धर्मों से संबंधित हैं जिनमें कुछ उत्तरदाता एस.सी. श्रेणियों से संबंधित हैं जो बोध धर्म को अपनाते हैं। बोध धर्म एस.सी. जाति के उत्तरदाताओं के लिए प्रसिद्ध है।

इसलिए, उपरोक्त तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से हम यह पता लगा सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 69% हिंदू धर्म से संबंधित हैं। सामान्य तौर पर हम पाते हैं कि बाल श्रम करने वाले मुस्लिम बच्चों की आवृत्ति बहुत

अधिक है, लेकिन वे स्वतंत्र रूप से काम करते हैं इस अध्ययन में मुस्लिम बाल श्रम हिंदू उत्तरदाताओं की तुलना में कम था, इस तथ्य के पीछे यह प्रमुख तथ्य था कि मुस्लिम बच्चे स्वतंत्र व्यवसाय और कुशल कार्य करना चाहते हैं क्योंकि उनके व्यावसायिक संस्कृति के अनुसार दिशानिर्देश महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निम्नलिखित तालिका में हमने अपने उत्तरदाताओं को उनके परिवार के आकार के आधार पर तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है –

तालिका क्रमांक 5.5: परिवार का आकार			
क्रम संख्या.	**परिवार का आकार**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**% उत्तरदाता**
1.	छोटा आकार (3 से 5 सदस्य)	119	47.6
2.	मध्यम आकार (6 से 8 सदस्य)	82	32.8
3.	बड़ा आकार (8 से अधिक सदस्य)	49	19.6
	कुल	**250**	**100**

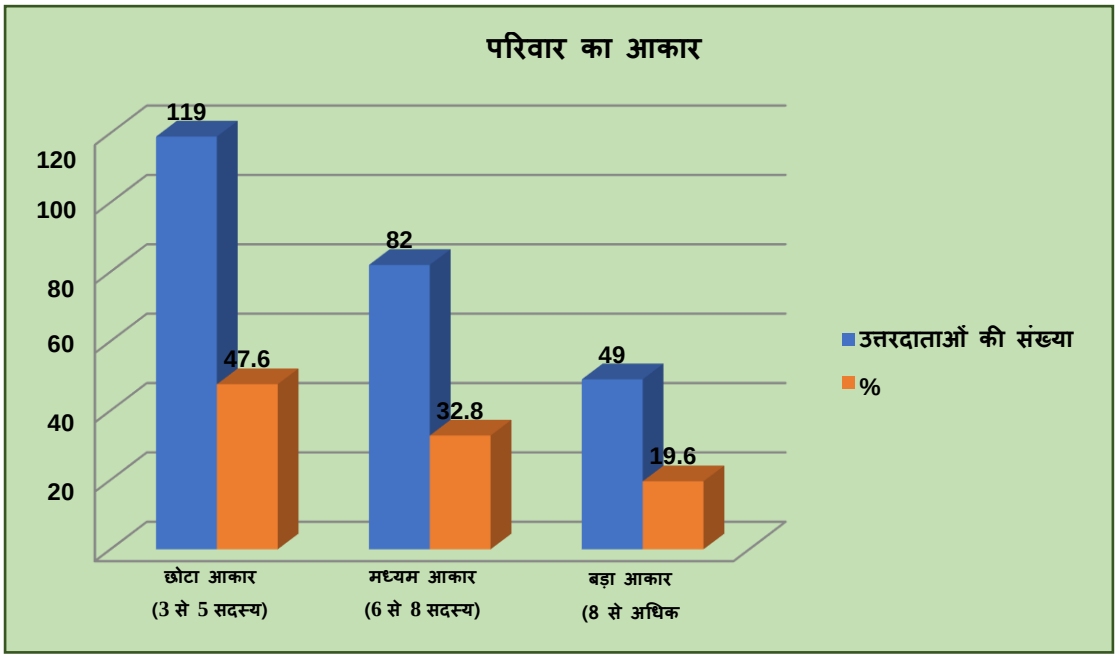

ग्राफ 5.5

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से, परिवार के आकार के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण हम यह पता लगा सकते हैं कि 47.6% उत्तरदाता छोटे आकार के परिवार (2-5 सदस्य) से संबंधित हैं, अधिकांश उत्तरदाता

32.8% मध्यम आकार (6 से 8 परिवार के सदस्य) से संबंधित हैं, केवल 19.6% उत्तरदाता बड़े आकार के परिवार से संबंधित हैं।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि उपरोक्त तालिका का विश्लेषण करके हम यह कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 47.6% छोटे परिवार के आकार की पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। यह ध्यान देने योग्य तथ्य था कि अधिकांश बाल श्रमिक छोटे आकार के परिवार से संबंधित हैं। इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करके शोधकर्ता ने पाया कि सभी उत्तरदाता आगरा जिले के शहरी क्षेत्र के आस-पास के निवास से संबंधित हैं।

निम्नलिखित तालिका में हम शिक्षा के स्तर को चार वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं। हम नीचे वर्णित कर सकते हैं-

तालिका क्रमांक 5.6: शैक्षिक योग्यता

क्रम संख्या.	उत्तरदाता की शिक्षा	उत्तरदाताओं की संख्या	% उत्तरदाता
1.	निरक्षर	105	42
2.	मध्य स्तर	62	24.8
3.	माध्यमिक स्तर	53	21.2
4.	हाई स्कूल स्तर	30	12
	कुल	**250**	**100**

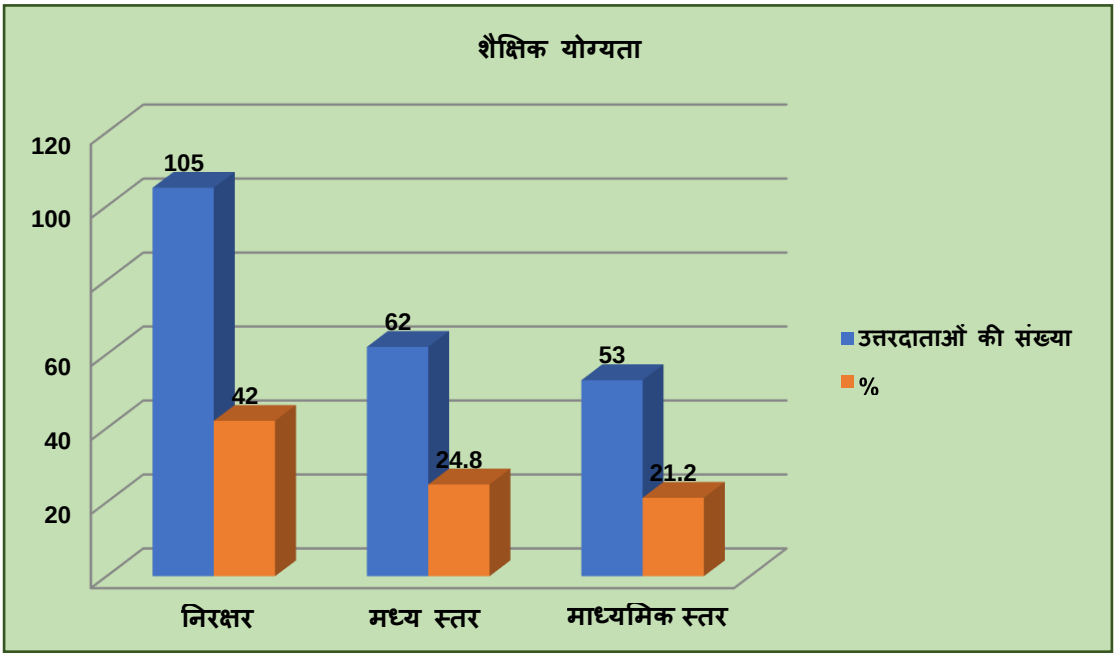

ग्राफ 5.6

उपरोक्त तालिका के अनुसार हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 42% उत्तरदाताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि निरक्षर थी, 24.8% मध्य स्तर तक, 24.8% माध्यमिक स्तर तक, 12% उच्च माध्यमिक स्तर तक।

इसलिए, हम आसानी से विश्लेषण कर सकते हैं कि 42% उत्तरदाताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि निरक्षर स्तर की है, डेटा संकलन के दौरान हमें पता चला कि शिक्षा के साथ-साथ बातचीत में सुधार होता है जिससे सुरक्षित होता है। जैसा कि हम देखते हैं कि बाल मजदूरों की शैक्षिक पृष्ठभूमि बहुत खराब है क्योंकि उन्हें सरकारी नीतियों के बारे में अच्छी तरह से पता नहीं था जो नैतिक और शैक्षणिक शिक्षा प्राप्त करने में मदद करती हैं। बाल मजदूर अपना अधिकांश समय फैक्ट्री के काम में बिताते हैं और वे काम के समय उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं और यह श्रमिक के लिए अपने और अपने परिवार के जीवित रहने के लिए आवश्यक है। कुछ बाल मजदूर अपनी शिक्षा के प्रति चौकस थे और उन्होंने माता-पिता के मोबाइल, यूट्यूब और कोविड अवधि के दौरान विकसित अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की मदद से अपनी पढ़ाई जारी रखी।

5.2. परिस्थितियों और समस्याओं से संबंधित

यह शोध कार्य का दूसरा खंड है, जो बाल श्रम के बारे में विशिष्ट जानकारी से संबंधित है, जिसमें उनके जीवन के सामाजिक पहलू, आर्थिक स्थिति और आगरा के जूता उद्योग की कार्य स्थिति, विशेष रूप से आगरा शहर के सूरजकुंड क्षेत्र के निकटवर्ती क्षेत्र शामिल हैं, जो आगरा शहर के जूता उद्योग के साथ-साथ खेल बाजार का स्थान भी है। इस खंड में हम उत्तरदाताओं की परिस्थितियों और संबंधित समस्याओं का विश्लेषण कर सकते हैं।

1. बाल श्रमिक के माता-पिता का व्यवसाय क्या है?

दूसरे खंड की पहली तालिका में, हम उत्तरदाताओं के माता-पिता के व्यवसाय का वर्णन कर सकते हैं, जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

तालिका क्रमांक 5.7

क्रम संख्या.	उत्तरदाता की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	% उत्तरदाता
1.	निजी नौकरी	14	5.6
2.	मजदूर	220	88
3.	अन्य	16	6.4
	कुल	**250**	**100**

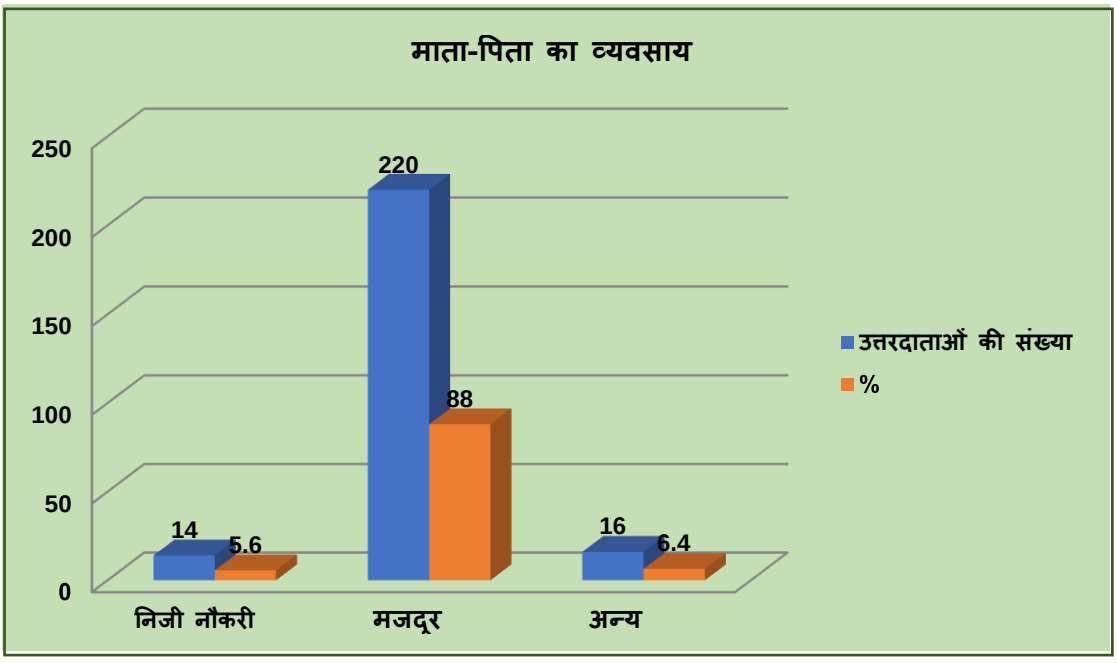

Graph 5.7

उपरोक्त विश्लेषण से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 5.6% उत्तरदाता माता-पिता निजी क्षेत्र में मजदूरी करते हैं। उन्हें नौकरी पाने में कोई कठिनाई नहीं होती है और नौकरी पाने के पक्ष में माहौल और सामाजिक धारणा है। 88% उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि उन्हें नौकरी पाने और मजदूरी करने में कठिनाई होती है, कभी-कभी उन्हें आसानी से काम मिल जाता है और कई बार उन्हें काम नहीं मिल पाता है। 6.4% माता-पिता अन्य क्षेत्रों में काम करते हैं, अधिकांश बाल श्रमिक माता-पिता काम करते हैं और वे परिवार की आय में योगदान करना चाहते हैं।

इसलिए, हम उपरोक्त तालिका का विश्लेषण कर सकते हैं कि 88% उत्तरदाता माता-पिता को नौकरी पाने और मजदूर के रूप में काम करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें लगता है कि उनका बच्चा परिवार की आय में योगदान देता है, यह परिवार के सभी सदस्यों के लिए अच्छी बात है और उन्हें बच्चे की शिक्षा और अन्य विकास की चिंता नहीं है।

2. माता-पिता एक ही क्षेत्र में काम करते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम माता-पिता के कार्य क्षेत्र और उत्तरदाताओं के बारे में उनकी धारणा का विवरण जानते हैं, जो निम्न तालिका में दिया गया है-

तालिका क्रमांक 5.8			
क्रमांक	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	230	92
2.	नहीं	20	08
	कुल	**250**	**100**

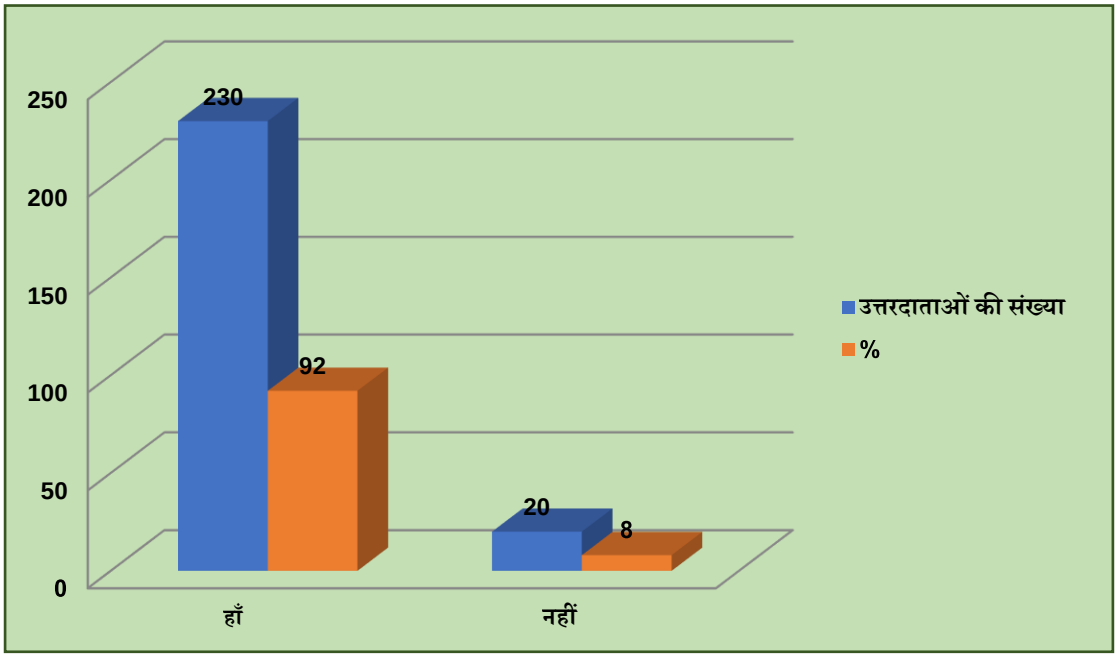

ग्राफ़ 5.8

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हमें नौकरी के बारे में उत्तरदाताओं की धारणा मिलती है, हम पाते हैं कि 92% उत्तरदाताओं के माता-पिता एक ही कार्यस्थल और उनके संबद्ध क्षेत्र में काम करते हैं और उत्तरदाता एक ही सेवा में अच्छा महसूस करते हैं, केवल 8% उत्तरदाताओं के माता-पिता या रिश्तेदार एक ही क्षेत्र में काम नहीं करते हैं और वे ड्यूटी के समय कई बार असुरक्षा महसूस करते हैं और उन्हें लगता है कि माता-पिता का काम का सकारात्मक समर्थन करना बहुत आवश्यक है ताकि बाल श्रमिक कार्यस्थल पर सुरक्षा महसूस कर सकें।

अतः हम पाते हैं कि 92% उत्तरदाताओं के माता-पिता एक ही कार्यस्थल और अपने संबद्ध क्षेत्र में काम करते हैं और उत्तरदाता एक ही सेवा में अच्छा महसूस करते हैं। बालिकाओं के मामले में अधिकांश माताएँ उनके साथ काम करती हैं और वे सुरक्षा के दृष्टिकोण से कार्य घंटों में निगरानी करती रहती हैं।

3. क्या आप सामाजिक सुरक्षा महसूस करते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम बाल श्रमिकों के लिए इस क्षेत्र में स्थानीय कार्य के बारे में जानते हैं जैसा कि साहित्य की समीक्षा से पता चलता है, हम पाते हैं कि इस क्षेत्र में कार्य भार की दृष्टि से बहुत अधिक कार्य तनाव है। कार्य भार के संबंध में कुछ दृष्टिकोण निम्न तालिका में चर्चा किए गए हैं-

तालिका क्रमांक 5.9			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणाएँ**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	30	12
2.	नहीं	220	88
	कुल	**250**	**100**

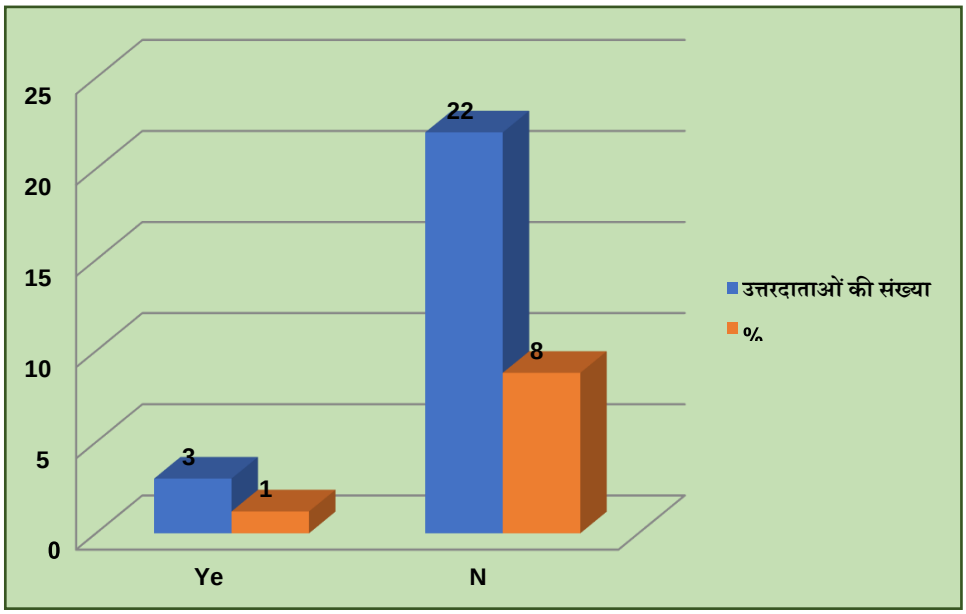

ग्राफ़ 5.9

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हमें सुरक्षा की भावना के बारे में उत्तरदाताओं की धारणा मिलती है, 12% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि वे कार्यस्थल पर सुरक्षा महसूस करते हैं, 88% उत्तरदाताओं ने ड्यूटी के समय सुरक्षा महसूस नहीं की, इस शोध कार्य में बाल श्रमिकों के लिए हिंसा के दृष्टिकोण से कार्यस्थल पर सुरक्षा और उनके हितों की सुरक्षा के बारे में भी विश्लेषण किया गया है।

तो, 88% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे सुरक्षा महसूस करते हैं और वे भविष्य और नौकरी की सुरक्षा के बारे में भी चिंतित हैं।

4. क्या आप रात में ड्यूटी पर जाते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम रात की ड्यूटी के बारे में उत्तरदाताओं की भावना के बारे में विश्लेषण करते हैं नीचे दी गई तालिका में चर्चा करें -

तालिका क्रमांक 5.10			
क्र.सं.	**रात्रि ड्यूटी पर उपस्थित**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	114	45.6
2.	नहीं	136	54.4
	कुल	**250**	**100**

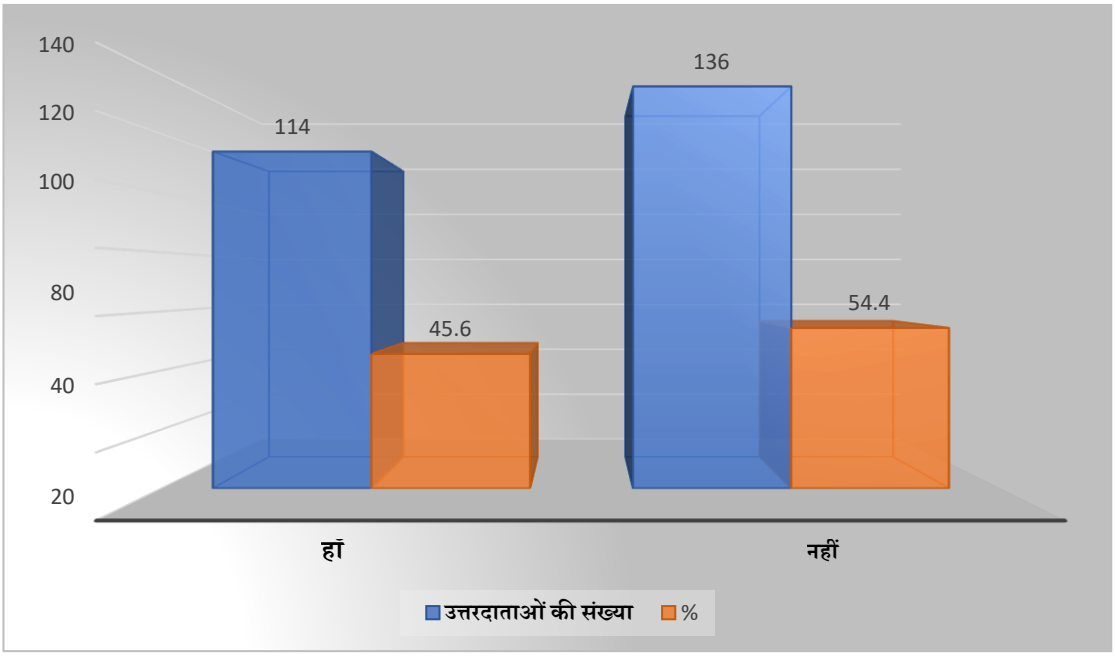

ग्राफ़ 5.10

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम यह पता लगा सकते हैं कि 45.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे रात्रि पाली में भी ड्यूटी पर हैं और केवल 54.4% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि वे केवल दिन की ड्यूटी पर हैं।

इसलिए, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 54.4% उत्तरदाता रात्रि ड्यूटी करने के लिए सहमत हैं और उन्हें इस काम के लिए अतिरिक्त पैसे भी मिलते हैं, जब मालिक द्वारा सीमित समय में विशेष ऑर्डर पूरा किया जाता है, विशेष पैसे ज्यादातर रात की ड्यूटी में दिए जाने वाले दिन के वेतन से दोगुने होते हैं और उन्हें जूता उद्योग के लिए सामान बनाने का काम मिल जाता है

5. क्या आपके पास काम के निश्चित घंटे हैं?

निम्न तालिका द्वारा हम इस क्षेत्र में काम के निश्चित घंटों के बारे में विश्लेषण करते हैं। हम नीचे दी गई तालिका में दिए गए डेटा का विश्लेषण करते हैं-

तालिका क्रमांक 5.11			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	185	74
2.	नहीं	65	26
	कुल	**250**	**100**

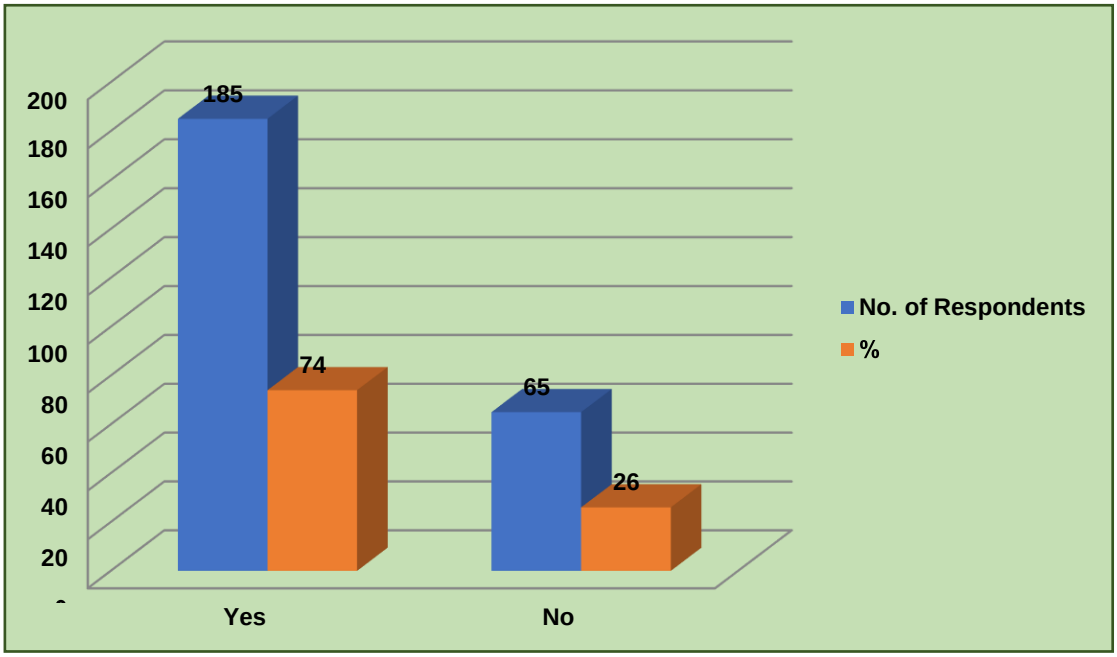

ग्राफ़ 5.11

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम यह पता लगा सकते हैं कि 74% बाल मज़दूरों के पास काम करने का निश्चित समय है और केवल 26% उत्तरदाताओं को ऐसा नहीं लगता कि उनके पास काम करने का निश्चित समय नहीं है, काम के दौरान वेतन में वृद्धि हो सकती है और यह अनिवार्य नहीं है कि यह देय होगा कई बार फ़ैक्टरी मालिक अतिरिक्त समय के काम के लिए भुगतान नहीं करते हैं। हम यह वर्णन करना चाहते हैं कि आपातकालीन समय के दौरान यह धारणा होती है कि सभी बाल मज़दूरों को तत्काल आदेश के लिए दिए गए कम समय के दौरान काम पूरा करने के लिए बुलाना अनिवार्य नहीं है।

इसलिए, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 74% उत्तरदाता ड्यूटी के दौरान सुरक्षित महसूस करते हैं और उनके पास कार्यस्थल पर काम करने के लिए निश्चित समय होता है।

6. ड्यूटी करते समय किसी प्रकार की असुरक्षा महसूस करते हैं?

निम्न तालिका में हम ड्यूटी पर महसूस होने वाली भावना के बारे में विश्लेषण करते हैं। हम निम्न तालिका में डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं-

तालिका सं. 5.12

क्र.सं.	ड्यूटी करते समय असुरक्षा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	96	38.4
2.	नहीं	154	61.6
	कुल	**250**	**100**

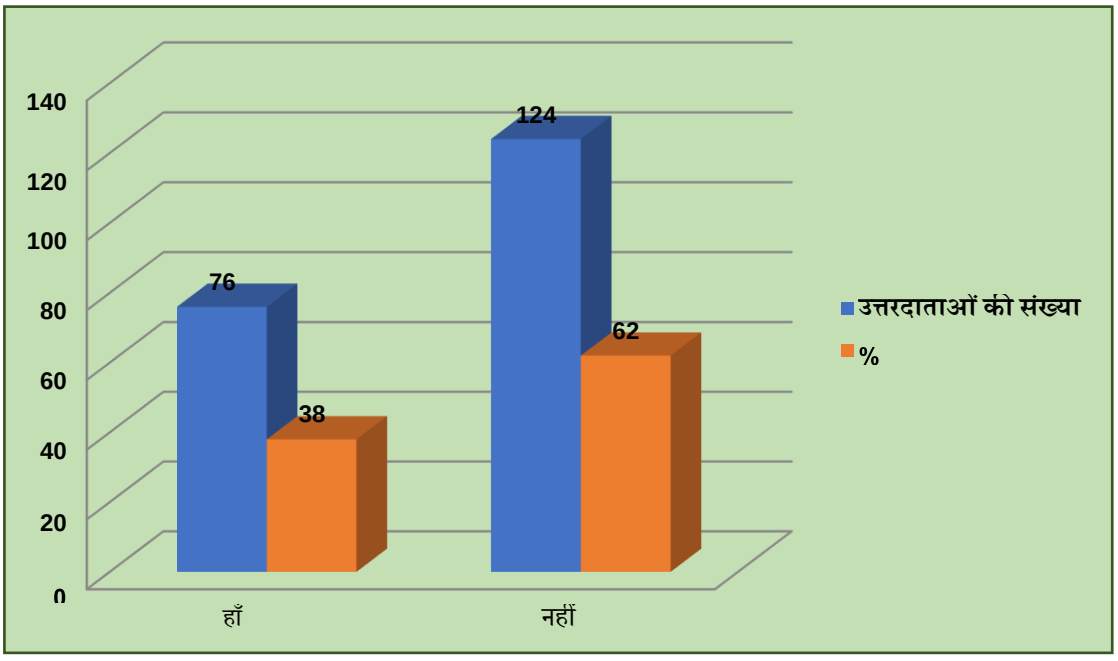

ग्राफ़ 5.12

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम यह पता लगा सकते हैं कि 38.4% उत्तरदाता कार्यस्थल पर काम करते समय सुरक्षा महसूस नहीं करते हैं। 61.6% बाल मजदूर कार्यस्थल पर काम के दौरान सुरक्षा महसूस करते हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि 61.6% उत्तरदाताओं को काम करते समय असुरक्षा महसूस नहीं होती है।

7. क्या आपके पास एक सप्ताह की छुट्टी है?

निम्नलिखित तालिका द्वारा हम बाल मजदूरों के सप्ताहांत कार्यक्रम के बारे में विश्लेषण करते हैं जो निम्न तालिका में वर्णित है-

तालिका सं. 5.13			
क्र.सं.	**सप्ताह की छुट्टी**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	20	05
2.	नहीं	230	95
	कुल	**250**	**100**

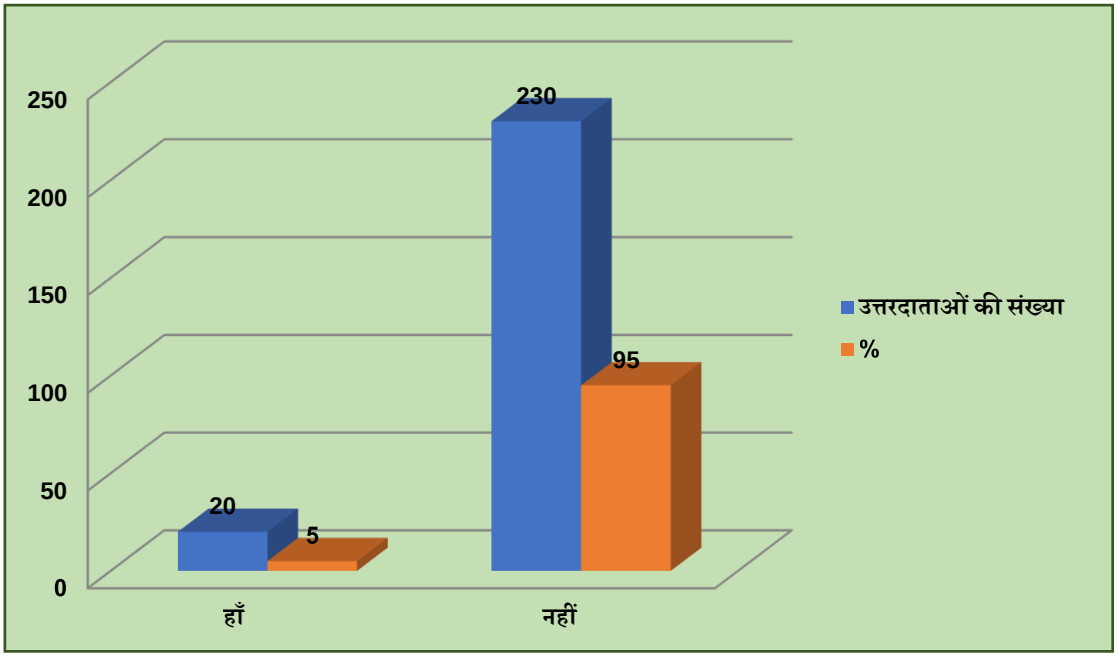

ग्राफ़ 5.13

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 5% उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि वे परिवार के साथ कम समय बिता पाते हैं और 95% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अपने कर्तव्य के कारण सप्ताहांत की छुट्टी नहीं ले पाते हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि केवल 5% उत्तरदाताओं ने सप्ताहांत की छुट्टी की व्यवस्था की है।

8. क्या आप अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं?

निम्न तालिका से हम उत्तरदाताओं के अपने काम के बारे में संतुष्टि के स्तर के बारे में विश्लेषण कर सकते हैं जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका संख्या 5.14			
क्र.सं.	**संतुष्टि**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	165	82.5
2.	नहीं	85	17.5
	कुल	**200**	**100**

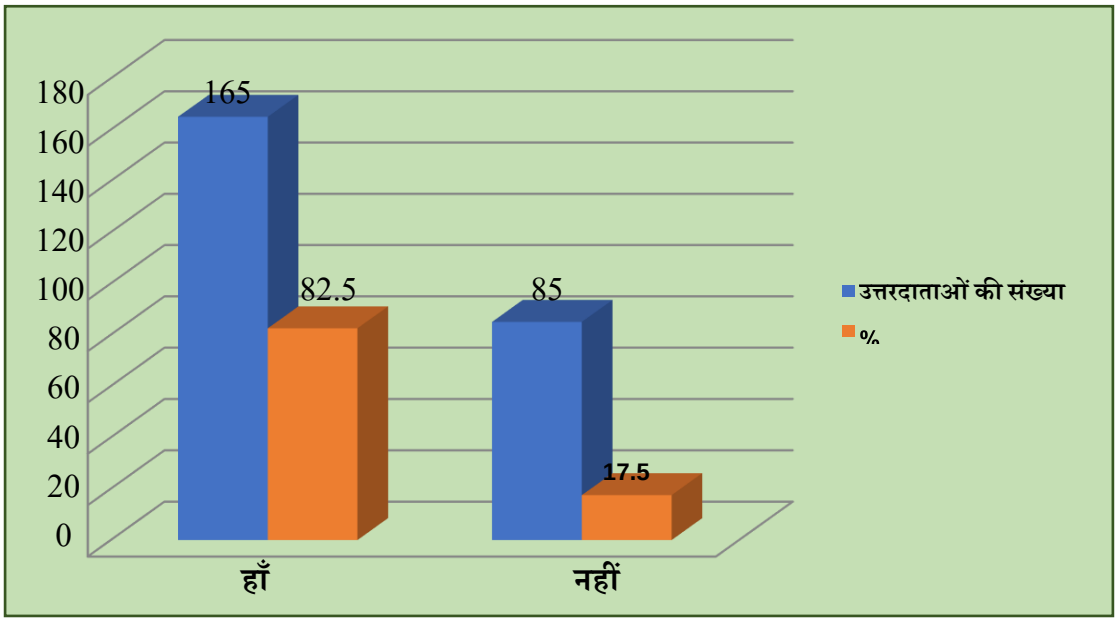

ग्राफ़ 5.14

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम पा सकते हैं कि 82.5% उत्तरदाता अपनी नौकरी से संतुष्ट थे और केवल 17.5% उत्तरदाता अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं थे।

इस प्रकार, हम पा सकते हैं कि 82.5% उत्तरदाता अपनी नौकरी से संतुष्ट थे।

9. क्या आपने किसी दबाव में यह नौकरी चुनी?

निम्नलिखित तालिका द्वारा हम उन परिस्थितियों का विश्लेषण करते हैं जिनमें उन्होंने निम्न तालिका में वर्णित नौकरी चुनी-

तालिका क्रमांक 5.15			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	98	39.2
2.	नहीं	152	60.8
	कुल	**250**	**100**

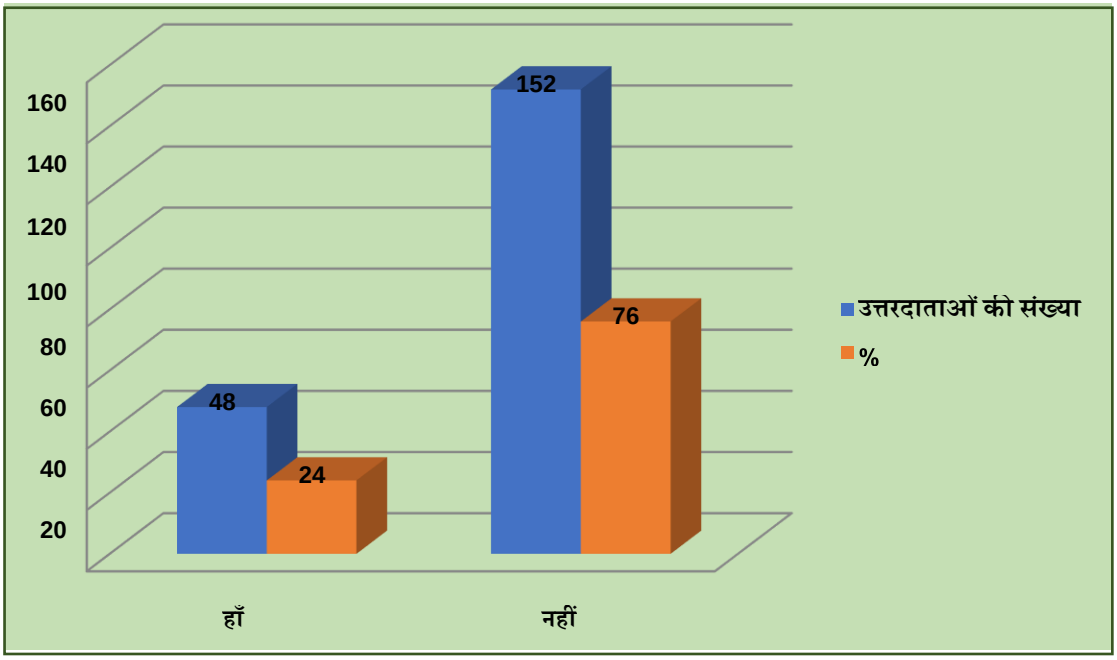

ग्राफ़ 5.15

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 39.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्होंने किसी दबाव में जूता उद्योग क्षेत्र में काम करना चुना और 60.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार नहीं किया कि उन्होंने दबाव में अपना काम चुना। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं 60.8% ने स्वतंत्र रूप से अपना काम चुना और वे किसी भी परिवार के सदस्य या अन्य लोगों के दबाव में नहीं थे। कई बार बच्चे परिवार के सक्रिय सदस्य बनना चाहते हैं।

10. क्या आप अपने वेतन से सहमत हैं?

निम्न तालिका द्वारा हम नीचे दी गई तालिका में वेतन चर्चा के बारे में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण का विश्लेषण कर सकते हैं-

तालिका क्रमांक 5.16			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	137	68.5
2.	नहीं	63	31.5
	कुल	**200**	**100**

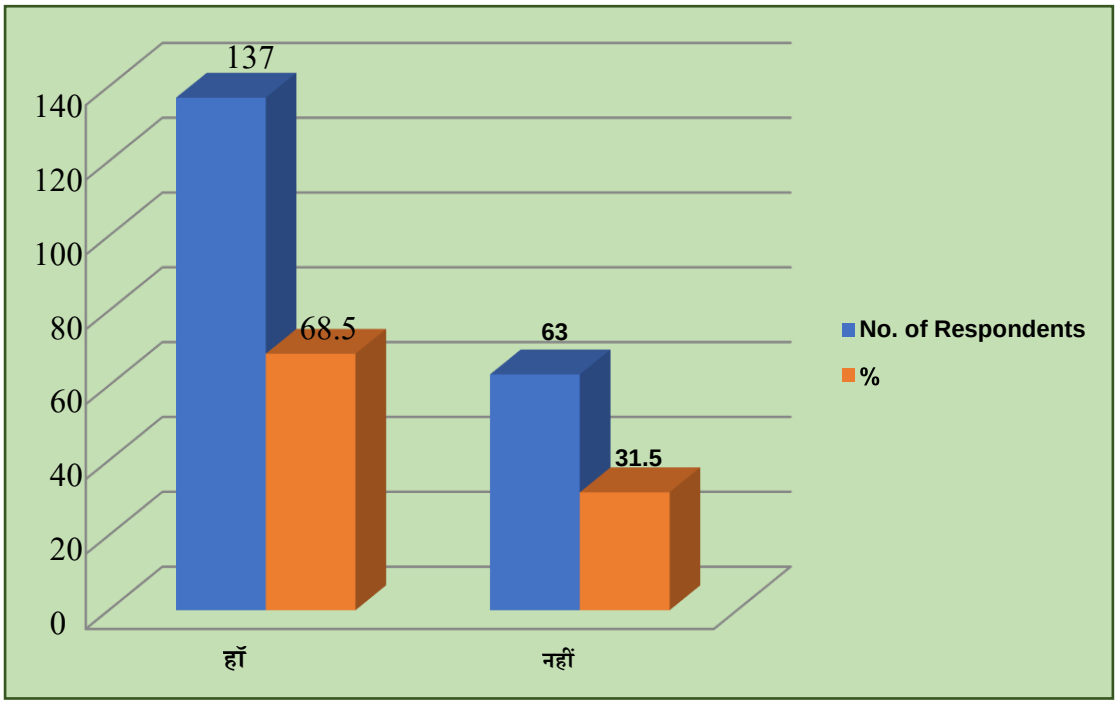

ग्राफ़ 5.16

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम यह पता लगा सकते हैं कि 68.5% उत्तरदाता अपने वेतन से सहमत और संतुष्ट हैं, केवल 31.5% उत्तरदाता असहमत हैं और उन्हें लगता है कि इस क्षेत्र में वेतन वृद्धि होनी चाहिए क्योंकि अन्य क्षेत्रों की तुलना में यहाँ कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। तो, हम यह पता लगा सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 68.5% अपने वेतन की स्थिति से सहमत और संतुष्ट हैं।

11. यदि आपको कोई अन्य नौकरी का अवसर मिलता है, तो क्या आप नौकरी छोड़ना चाहेंगे?

निम्न तालिका के माध्यम से हम यह जानना चाहते हैं कि यदि उन्हें कोई अन्य नौकरी का अवसर मिलता है, तो वे अपनी नौकरी बदलना चाहते हैं या नहीं, निम्न तालिका में वर्णित करें—

तालिका क्रमांक 5.17			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	99	49.5
2.	नहीं	151	50.5
	कुल	**250**	**100**

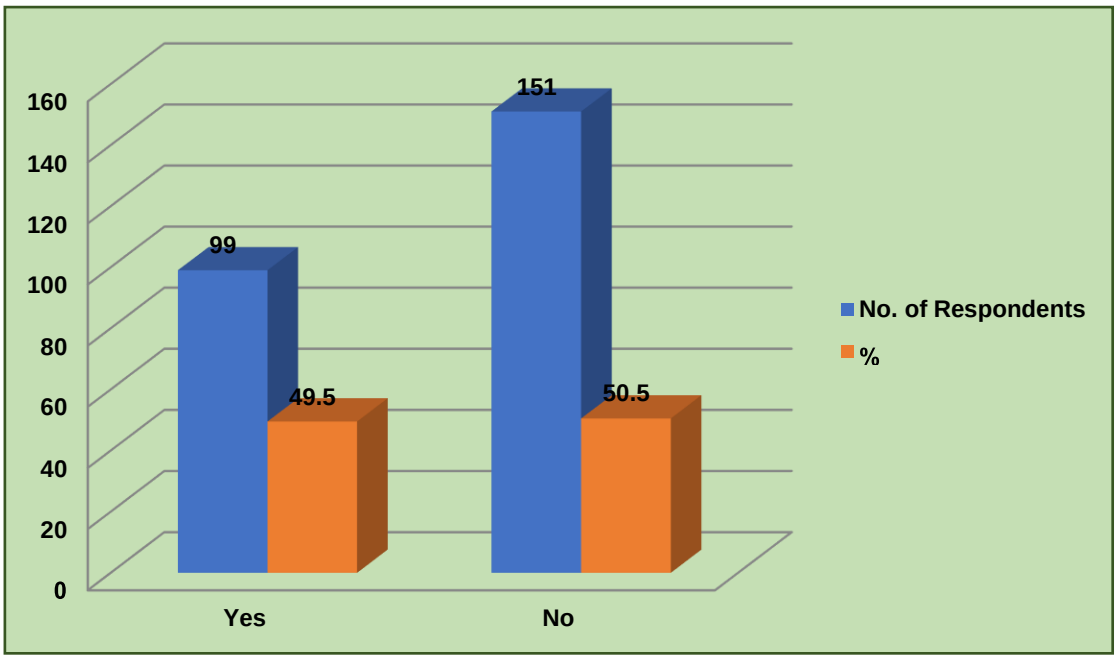

ग्राफ़ 5.17

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से 49.5% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि यदि उन्हें अन्य क्षेत्र में अवसर मिलता है, तो वे अपनी नौकरी छोड़ सकते हैं और 50.5% उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं हैं कि वे अपनी नौकरी से अधिक संतुष्ट हैं और वे अपने कमज़ोर क्षेत्र को बदलना नहीं चाहते हैं।

कुछ लोग कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं, वे अन्य क्षेत्र में अवसर मिलने पर भी सहमत नहीं हैं।

5.3. कार्यस्थल से तनाव

हमारे शोध कार्य के इस तीसरे खंड में हम महिलाओं के लिए जूता उद्योग आगरा क्षेत्र का विश्लेषण करते हैं, कुछ तालिकाएँ निम्न प्रकार हैं—

11. नौकरी में काम के घंटे कैसे होते हैं?

निम्न तालिका में, हम नौकरी में काम के घंटों के बारे में विश्लेषण करते हैं, जैसा कि नीचे वर्णित है-

तालिका संख्या 5.18			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	5	25	10
2.	7	175	70
3.	9	35	14
4.	9 घंटे से अधिक	15	06
	कुल	**250**	**100**

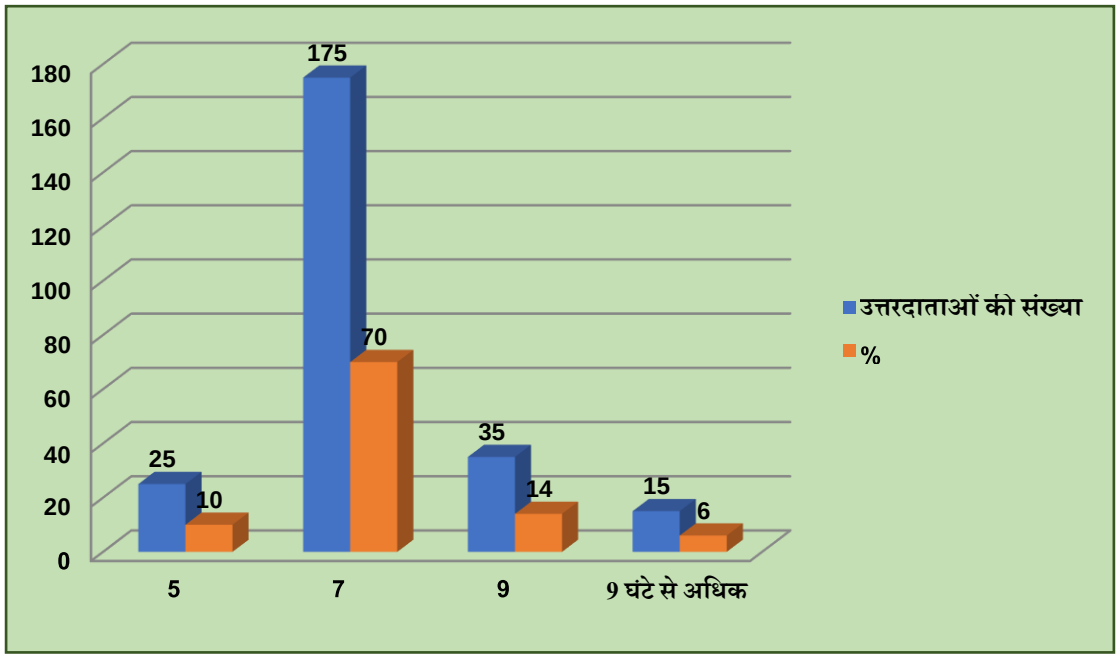

ग्राफ़ 5.18

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम उत्तरदाताओं के काम के घंटों का विश्लेषण करते हैं, हम पाते हैं कि 10% उत्तरदाता 5 घंटे काम करते हैं, 70% उत्तरदाता 7 घंटे काम करते हैं, 14% उत्तरदाता 9 घंटे काम करते हैं और 06% उत्तरदाता 9 घंटे से अधिक काम करते हैं। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं का 70% उत्तरदाता 7 घंटे से अधिक काम करते हैं।

12. मालिक कैसा व्यवहार करता है?

निम्न तालिका में हमने उत्तरदाताओं की अपने मालिक के बारे में धारणा का विश्लेषण किया है। निम्न तालिका द्वारा हमने विश्लेषण किया है—

तालिका क्रमांक 5.19			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	अच्छा	171	68.4
2.	खराब	79	31.6
	कुल	**250**	**100**

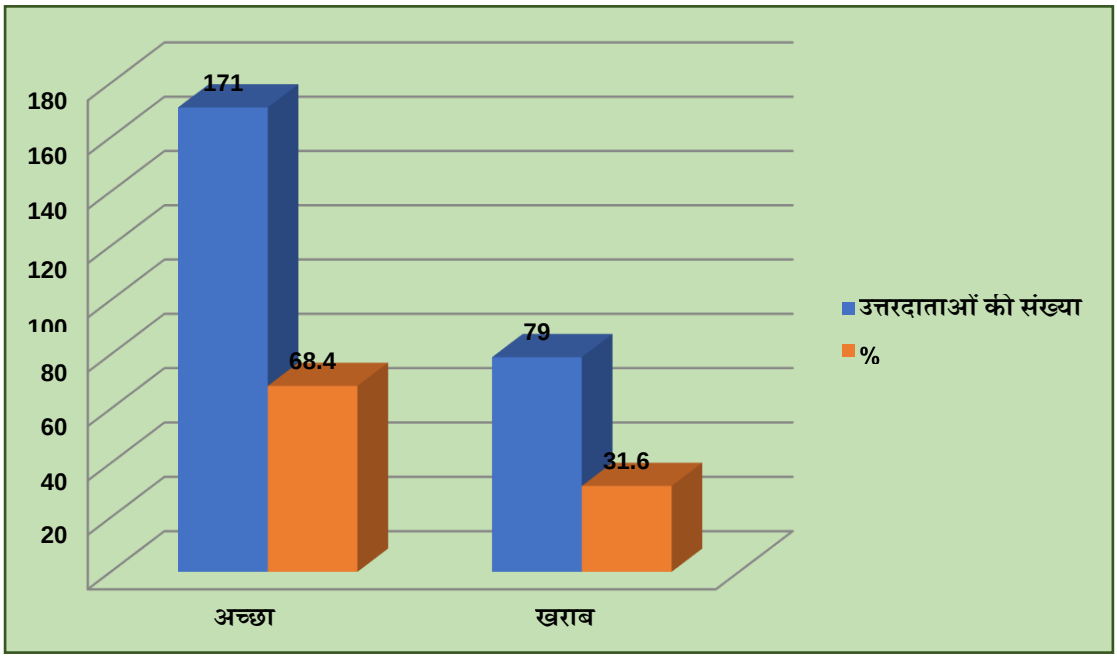

ग्राफ़ 5.19

उपर्युक्त तालिका द्वारा हमने विश्लेषण किया है कि 68.4% उत्तरदाताओं ने कहा कि उत्तरदाताओं का व्यवहार अच्छा था और 31.6% उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके अधिकारी का व्यवहार खराब था।

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 68.4% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि उनके अधिकारी का व्यवहार बहुत अच्छा था।

13. क्या आपको किसी प्रकार का खतरा या डर महसूस होता है?

निम्न तालिका में हमने कार्यस्थल पर किसी प्रकार के खतरे या डर को महसूस करने की धारणा का विश्लेषण किया है—

तालिका क्रमांक 5.20			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	151	60.4
2.	नहीं	99	39.6
	कुल	**250**	**100**

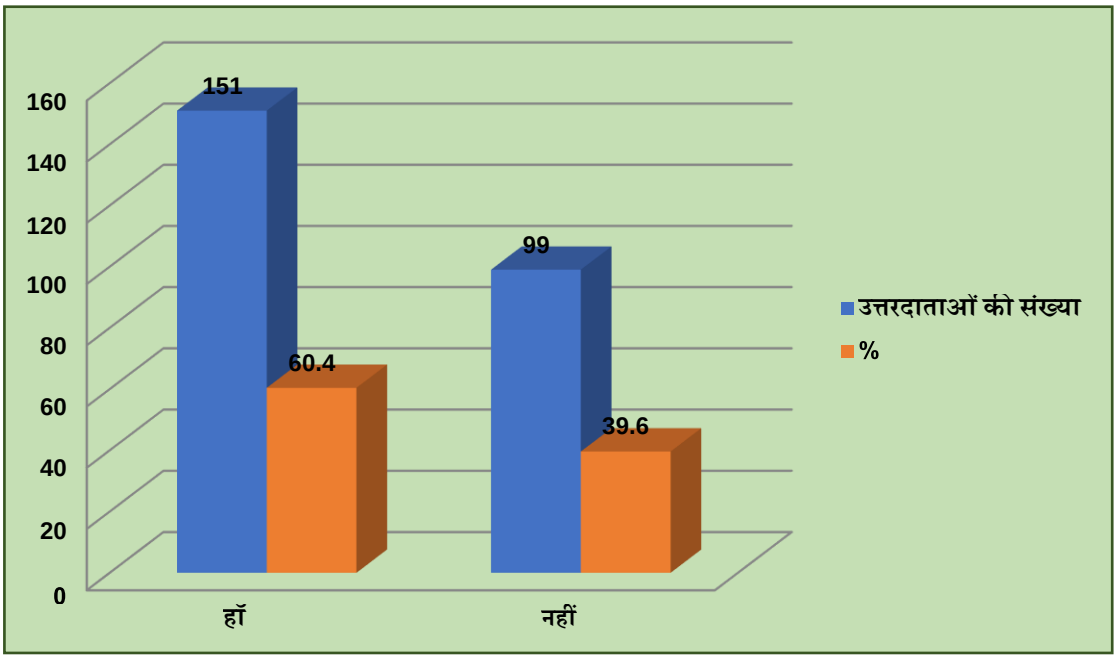

ग्राफ़ 5.20

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 60.4% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार का खतरा या भय महसूस होता है और 39.6% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार का खतरा या भय महसूस नहीं होता है।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं 60.4% को कार्यस्थल पर खतरा या भय महसूस होता है।

21. क्या आपकी ड्यूटी लंबी है?

निम्न तालिका से हम उत्तरदाताओं की उनकी ड्यूटी के समय के बारे में धारणा का विश्लेषण करते हैं।

तालिका क्रमांक 5.21			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	130	52
2.	नहीं	120	48
	कुल	**250**	**100**

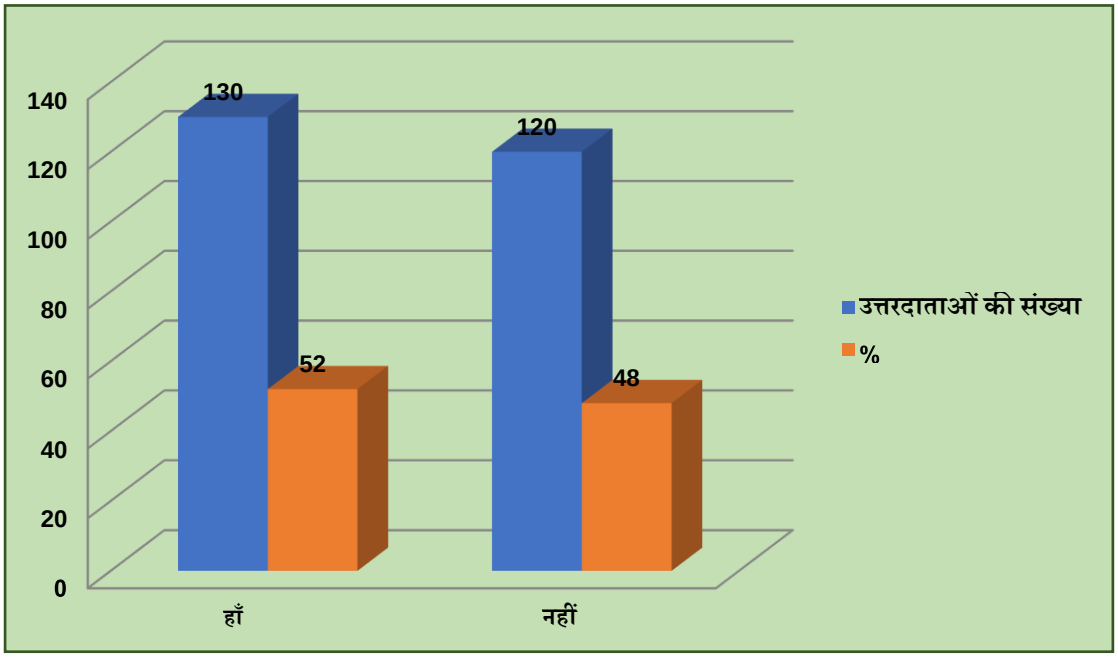

ग्राफ़ 5.21

उपर्युक्त तालिका के अनुसार, हमने पाया कि लगभग 52% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनकी ड्यूटी का समय लंबा है। 48% उत्तरदाताओं ने अपनी ड्यूटी का समय लंबा नहीं माना। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 52% ने महसूस किया कि उनकी ड्यूटी का समय लंबा है।

22. क्या ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेना असुविधाजनक है?

निम्न तालिका में हम ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेना असुविधाजनक/सुविधाजनक होने के बारे में धारणा का विश्लेषण कर सकते हैं।

तालिका क्रमांक 5.22			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	112	44.8
2.	नहीं	138	55.2
	कुल	**250**	**100**

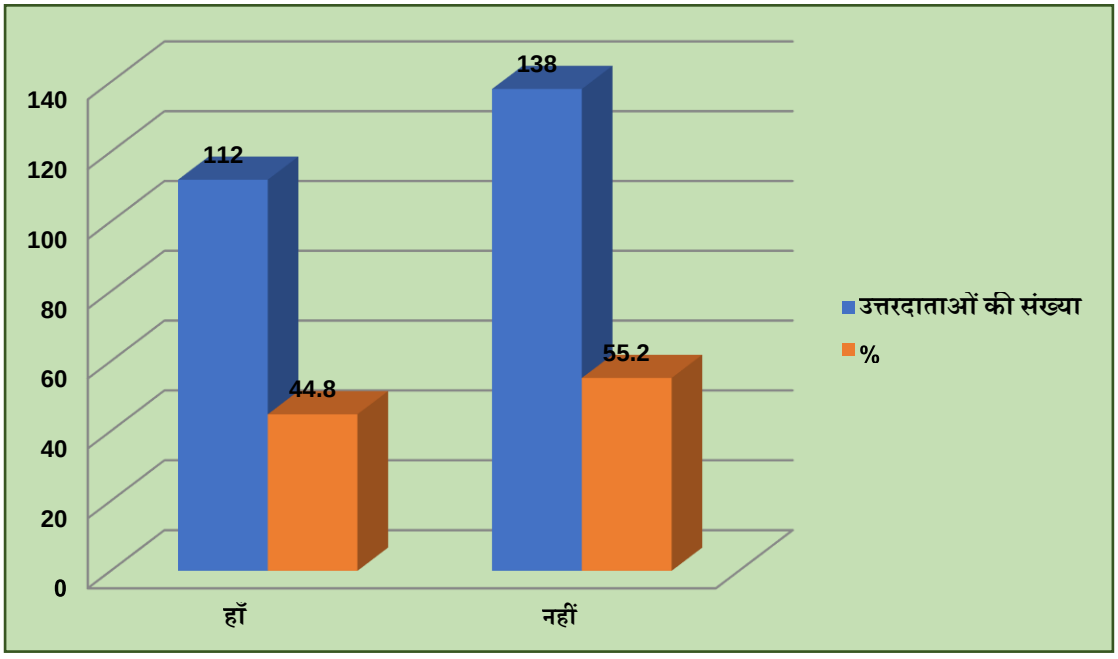

ग्राफ़ 5.22

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 44.8% उत्तरदाता सहमत हैं कि उन्हें ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेने में असुविधा होती है और 55.2% उत्तरदाता सहमत हैं कि उन्हें छुट्टी लेने में कोई समस्या नहीं है, वे यह भी मानते हैं कि छुट्टी बाल मज़दूर के रूप में उम्मीदवार के लिए एक बड़ी सुविधा है। तो, हम उपरोक्त तालिका से पता लगा सकते हैं कि 52.2% उत्तरदाता सहमत हैं कि उन्हें ज़रूरत पड़ने पर छुट्टी लेने में सुविधा होती है।

23. क्या आपको अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलता है?

निम्नलिखित तालिका में हम अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसर के बारे में धारणा और संतुष्टि के बारे में विश्लेषण करते हैं।

तालिका क्रमांक 5.23			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	89	35.6
2.	नहीं	51	20.4
3.	कभी-कभी	110	44
	कुल	250	100

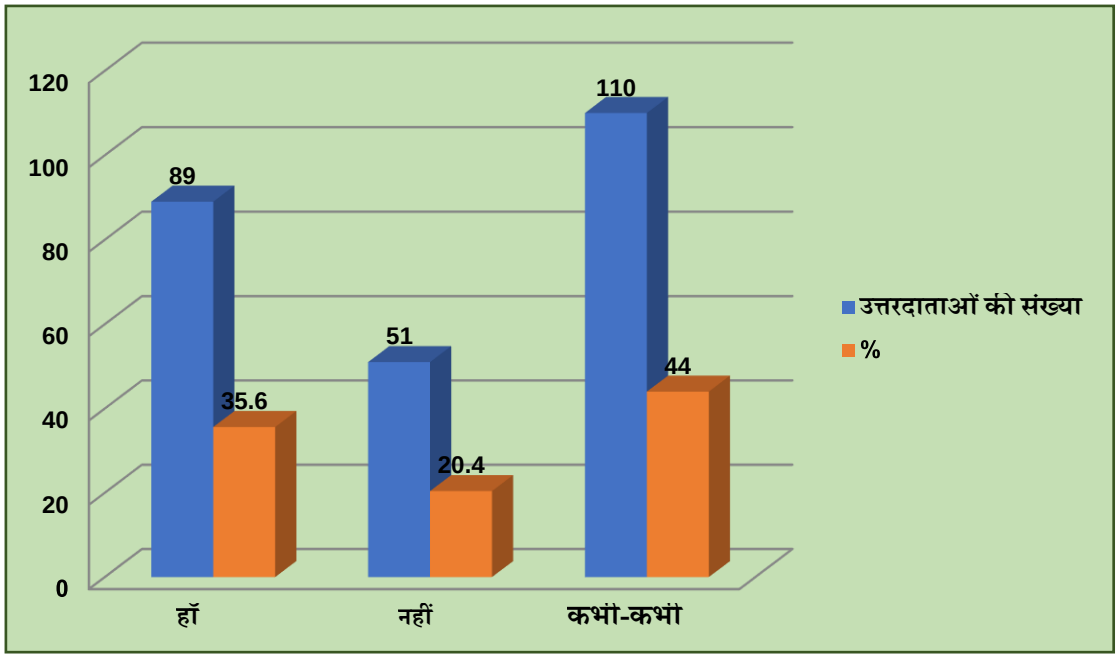

ग्राफ़ 5.23

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 35.6% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे अपने परिवार के साथ उचित समय बिताने से अधिक संतुष्ट हैं, 20.4% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसर से संतुष्ट नहीं हैं, 44% उत्तरदाता सहमत हैं कि कभी-कभी उन्हें अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलता है।

बाल श्रमिकों में संतुष्टि का स्तर पाया गया जो अपना समय परिवार के साथ बिताते हैं उन्हें लगता है कि उन्हें अपने परिवार के साथ बिताने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है।

इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि केवल 44% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर पाकर संतुष्ट हैं।

24. क्या आपको अपने लिए समय मिलता है?

निम्न तालिका से हम उत्तरदाताओं को अपने लिए समय मिलने के बारे में विश्लेषण करते हैं जो नीचे दी गई तालिका में दिए गए हैं।

तालिका क्रमांक 5.24			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	135	54
2.	नहीं	115	46
	कुल	**250**	**100**

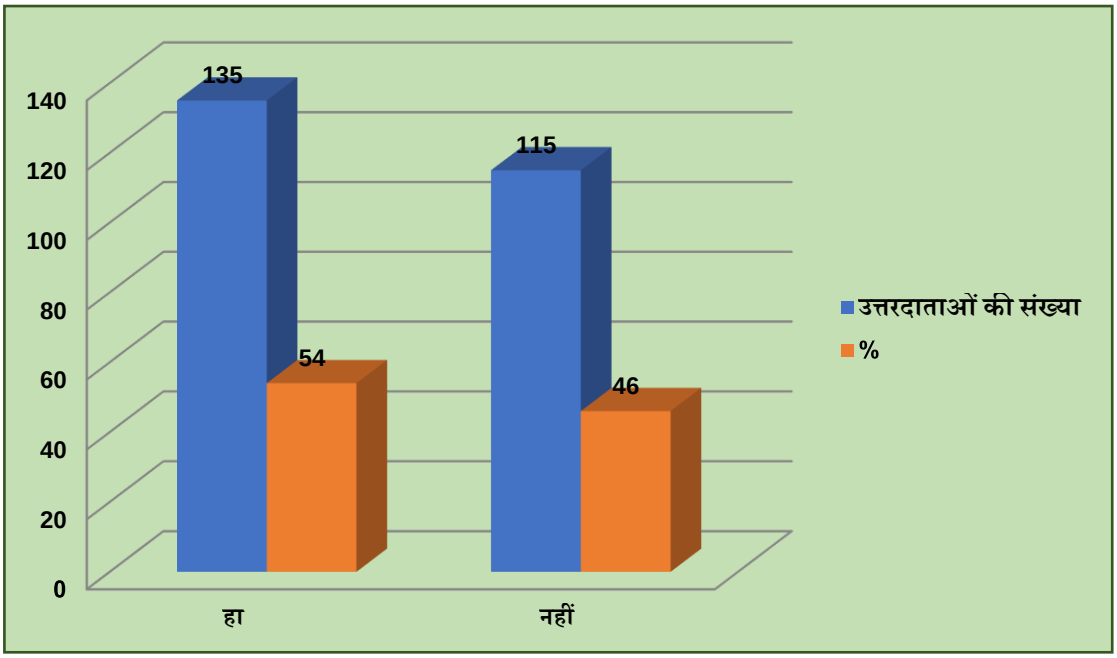

ग्राफ़ 5.24

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 54% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे स्वयं को उचित समय देते हैं और 46% उत्तरदाता स्वयं को उचित समय देने से सहमत नहीं हैं।

वे विकास के लिए उचित समय के बारे में सहमत नहीं थे, उत्तरदाताओं द्वारा अपने कर्तव्य के दौरान पुस्तक पढ़ना संभव नहीं है, यह तब संभव हो सकता है जब वे छुट्टी लेते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता सहमत हैं कि 54% उत्तरदाता सहमत हैं कि उन्हें स्वयं और अपने विकास के लिए समय मिलता है।

25. श्रमिकों का वर्ग?

निम्नलिखित तालिका में उत्तरदाताओं द्वारा काम करने के लिए लोगों की धारणा और उनके व्यवहार का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका के अनुसार है—

तालिका क्रमांक 5.25			
क्र.सं.	**धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	निपुण	85	62.5
2.	अकुशल	165	37.5
	कुल	**250**	**100**

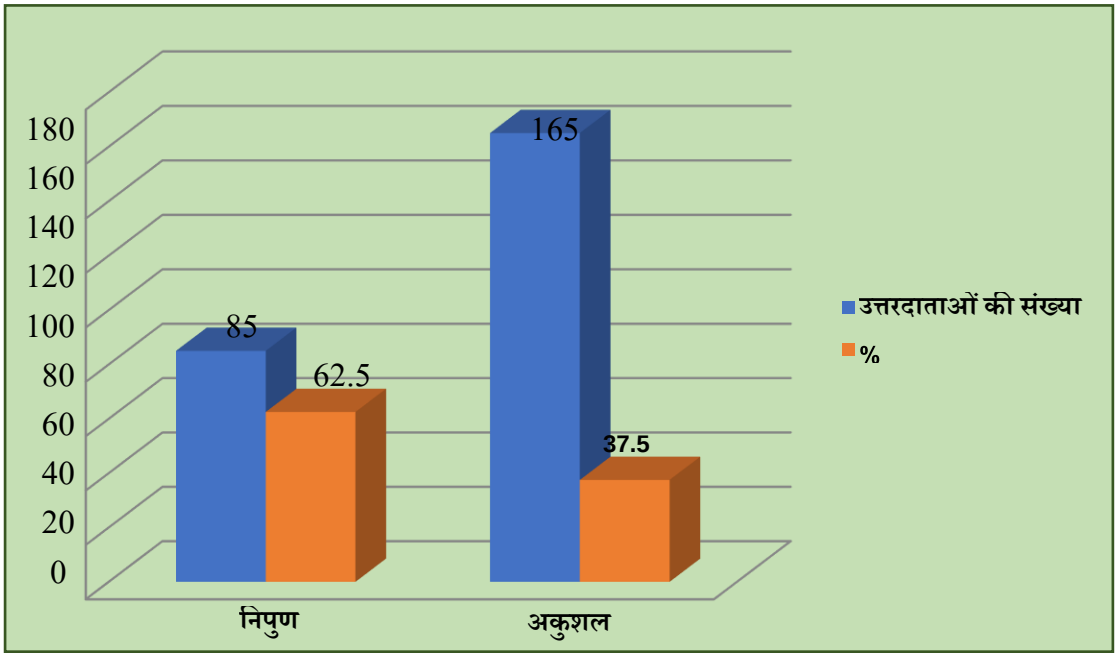

ग्राफ 5.25

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम पाते हैं कि निपुण कार्य में कार्यरत 62.5% उत्तरदाता केवल 37.5% उत्तरदाता कौशल कार्य में संलग्न हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता निपुण कार्य में कार्यरत 62.5% उत्तरदाता निपुण कार्य में संलग्न हैं।

26. आपके परिवार में बाल मजदूरों की संख्या?

निम्न तालिका के द्वारा हम परिवार में बाल मजदूरों की संख्या के बारे में विश्लेषण करते हैं-

तालिका क्रमांक 5.26			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1	1	28	11.2
2	2	49	19.6
3	3	136	54.4
4	4 और अधिक	37	14.8
	कुल	250	100

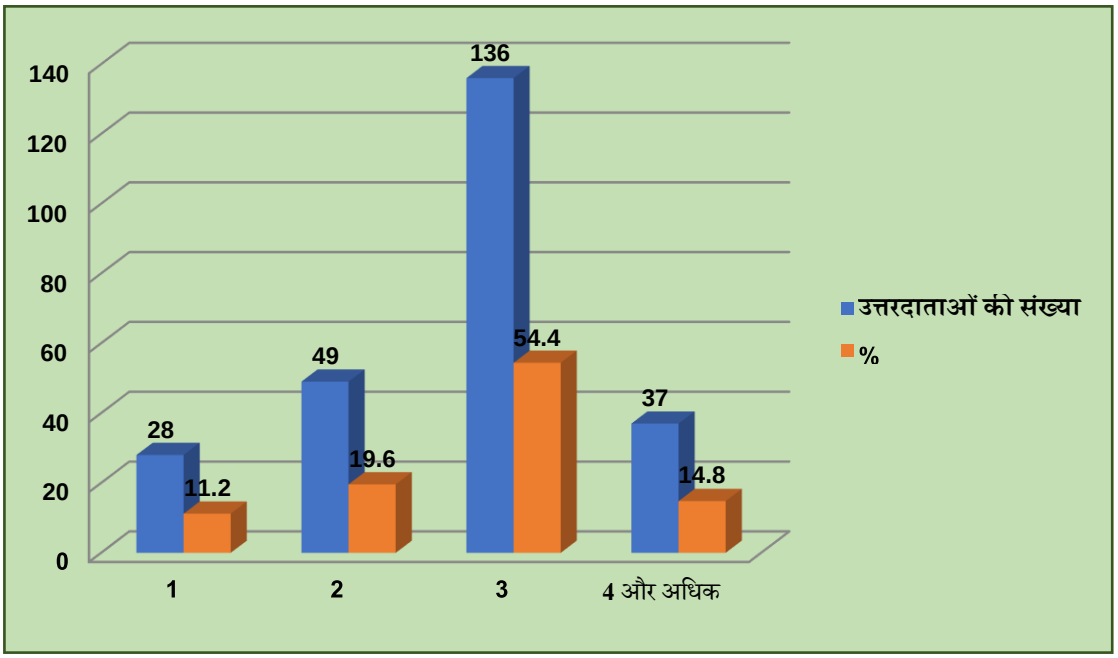

ग्राफ़ 5.26

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम पाते हैं कि 11.2% उत्तरदाताओं के पास बाल मज़दूर के रूप में काम करने वाले परिवार के केवल एक सदस्य हैं। 19.6% उत्तरदाताओं के पास बाल मज़दूर के रूप में काम करने वाले परिवार के केवल दो सदस्य हैं। 54.4% उत्तरदाताओं के पास बाल मज़दूर के रूप में काम करने वाले परिवार के केवल तीन सदस्य हैं और 14.8% उत्तरदाताओं के पास बाल मज़दूर के रूप में काम करने वाले परिवार के तीन से अधिक सदस्य हैं।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 54.4% उत्तरदाताओं के पास बाल मज़दूर के रूप में काम करने वाले परिवार के तीन से अधिक सदस्य हैं

27. घर का प्रकार?

निम्न तालिका द्वारा हम उत्तरदाताओं के मकान के प्रकार के बारे में जानना चाहते हैं जो निम्न तालिका में दिए गए हैं—

तालिका क्रमांक 5.27			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	अपना मकान नहीं	44	17.6
2.	अधूरा	29	11.6
3.	पूरा	177	70.8
	कुल	**250**	**100**

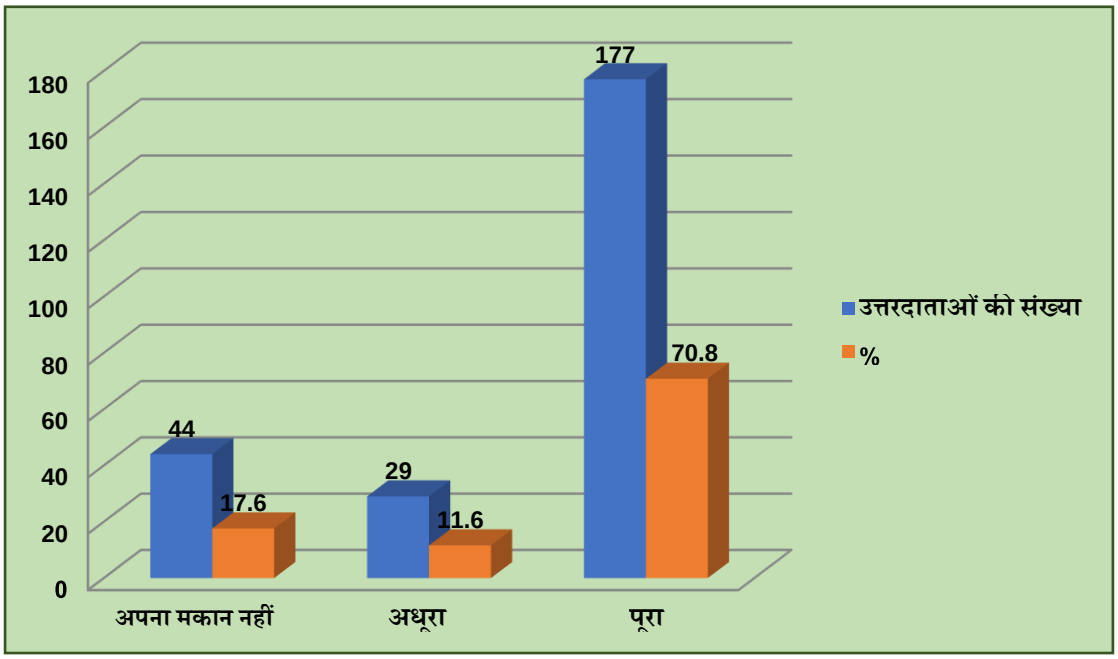

ग्राफ़ 5.27

उपर्युक्त तालिका डेटा विश्लेषण से, हम पाते हैं कि 17.6% उत्तरदाताओं के पास अपना मकान नहीं है, 11.6% उत्तरदाताओं के पास अधूरा मकान है और 70.8% उत्तरदाताओं के पास पूरा मकान है।

इस प्रकार, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (70.8%) ने स्वीकार किया है कि उनके पास अधूरा मकान है।

28. बाल श्रम से मुक्त होना चाहते हैं?

निम्न तालिका में हम उत्तरदाताओं की उनके वेतन के प्रति धारणा का विश्लेषण निम्न तालिका में देते हैं—

तालिका क्रमांक 5.28

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	79	31.6
2.	नहीं	171	68.4
	कुल	**250**	**100**

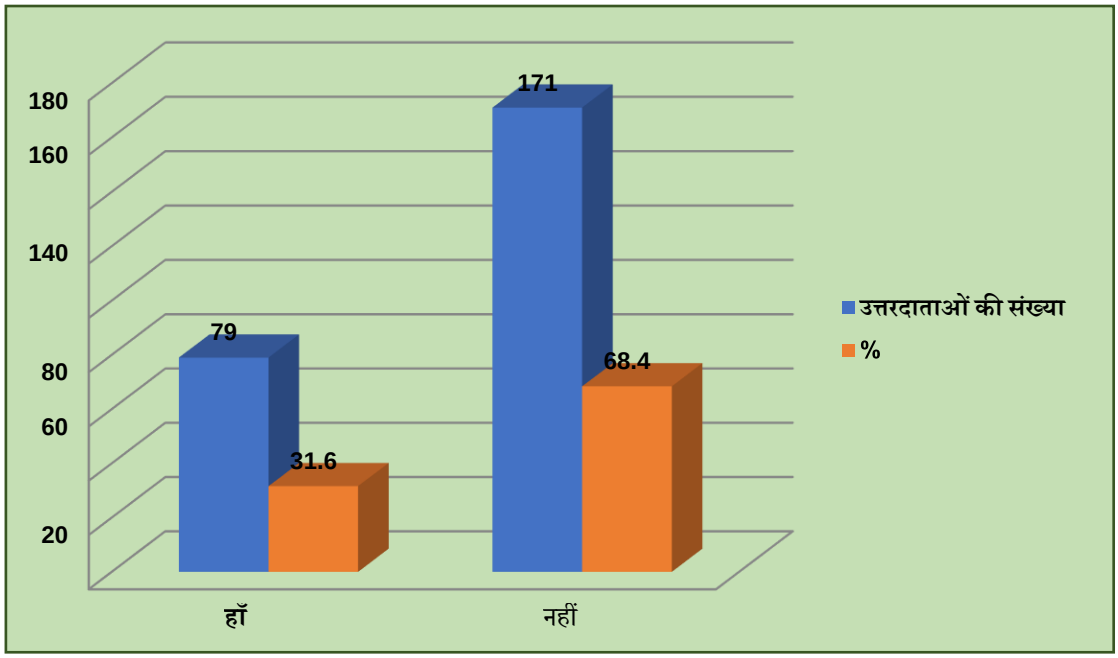

ग्राफ़ 5.28

उपर्युक्त तालिका डेटा विश्लेषण से, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 31.6% उत्तरदाता बाल श्रम से मुक्त होना चाहते हैं, 31.6% और 68.4% उत्तरदाता बाल श्रम से मुक्त नहीं होना चाहते हैं।

उपर्युक्त तालिका से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 68.4% बाल श्रम से मुक्त नहीं होना चाहते हैं।

29. क्या आप अनाथ हैं या नहीं?

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि की प्रकृति के बारे में विश्लेषण करते हैं जैसा कि नीचे दी गई तालिका में वर्णित है—

तालिका क्रमांक 5.29			
क्र.सं.	**प्रशिक्षण अवधि**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	25	10
2.	नहीं	225	40
	कुल	**250**	**100**

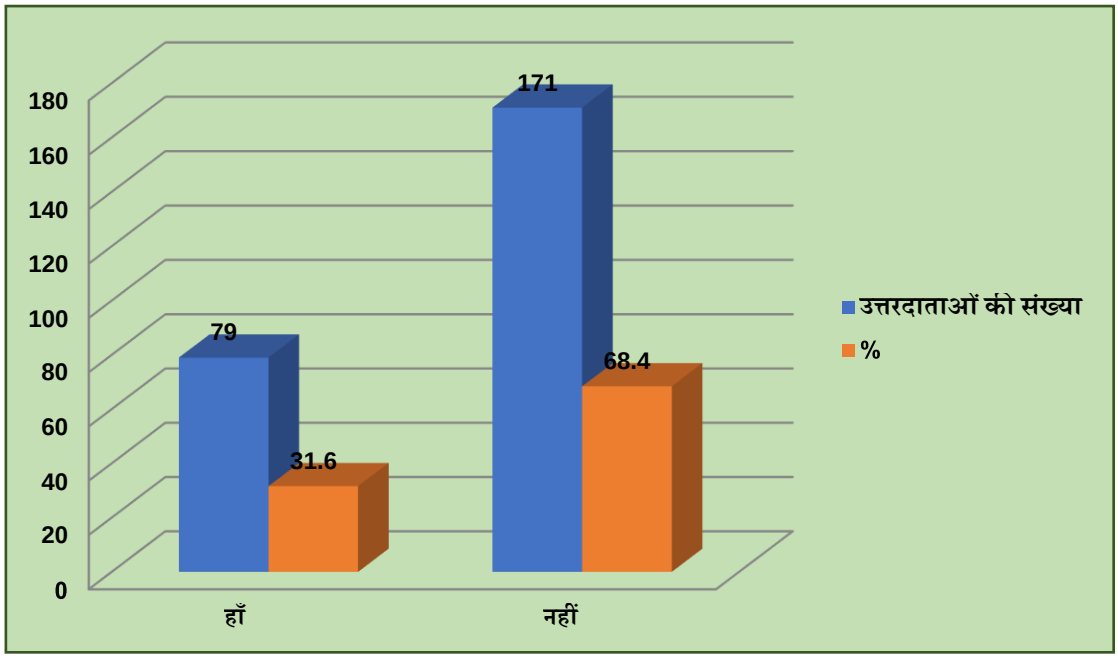

ग्राफ़ 5.29

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 10% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अनाथ थे और 40% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अनाथ थे टिप्पणी वे अनाथ नहीं हैं इसलिए हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 40% उत्तरदाताओं ने टिप्पणी की कि उनके पास परिवार के सदस्य हैं जो समय-समय पर उनके जीवन में उनकी मदद करते हैं।

30. क्या आपको लगता है कि आपके परिवार की अर्थव्यवस्था खराब है?

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण से परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में विश्लेषण करना चाहते हैं, जैसा कि नीचे दी गई तालिका में वर्णित है-

तालिका संख्या 5.30			
क्रमांक	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1	हाँ	207	82.8
2	नहीं	43	17.2
	कुल	**250**	**100**

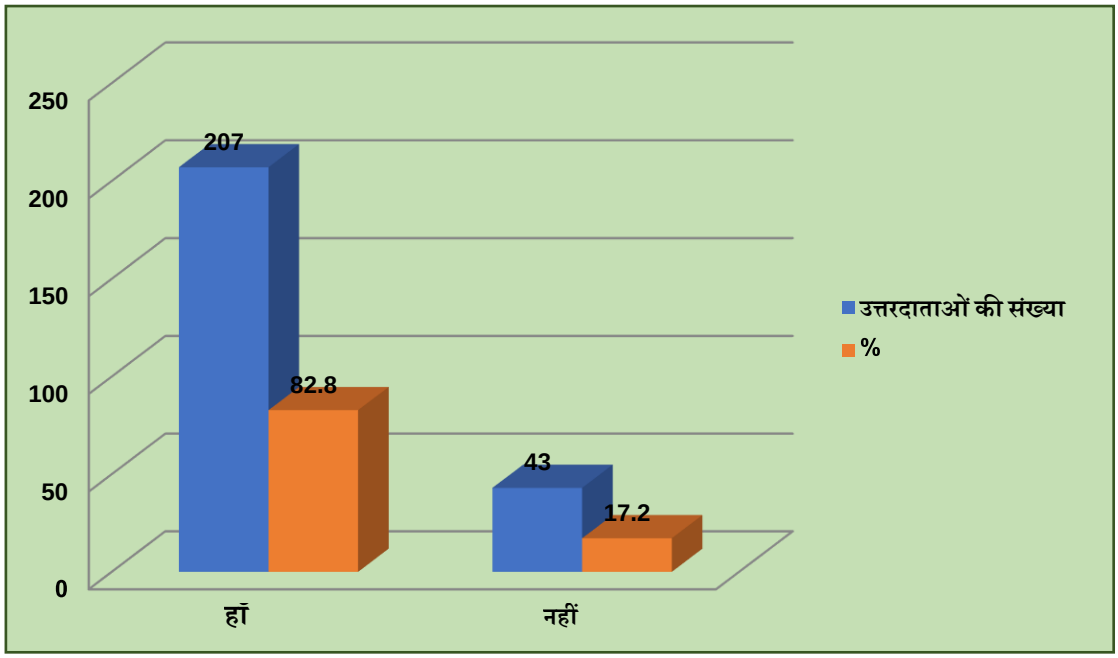

ग्राफ़ 5.30

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हम विश्लेषण करते हैं कि 82.8% उत्तरदाता परिवार की खराब स्थिति से सहमत हैं और 17.2% उत्तरदाता उत्तरदाताओं के परिवार की खराब स्थिति से सहमत नहीं हैं।

इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं 82.8% परिवार की खराब आर्थिक स्थिति से सहमत हैं और यह उत्तरदाताओं के अभ्यास में बाल श्रम का प्रमुख कारण है।

31. क्या आपके परिवार पर कोई कर्ज है?

निम्नलिखित तालिका में हमने हथियारों के प्रशिक्षण के बारे में विश्लेषण किया है, जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका सं. 5.31			
क्रमांक	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	78	31.2
2.	नहीं	172	68.8
	कुल	**250**	**100**

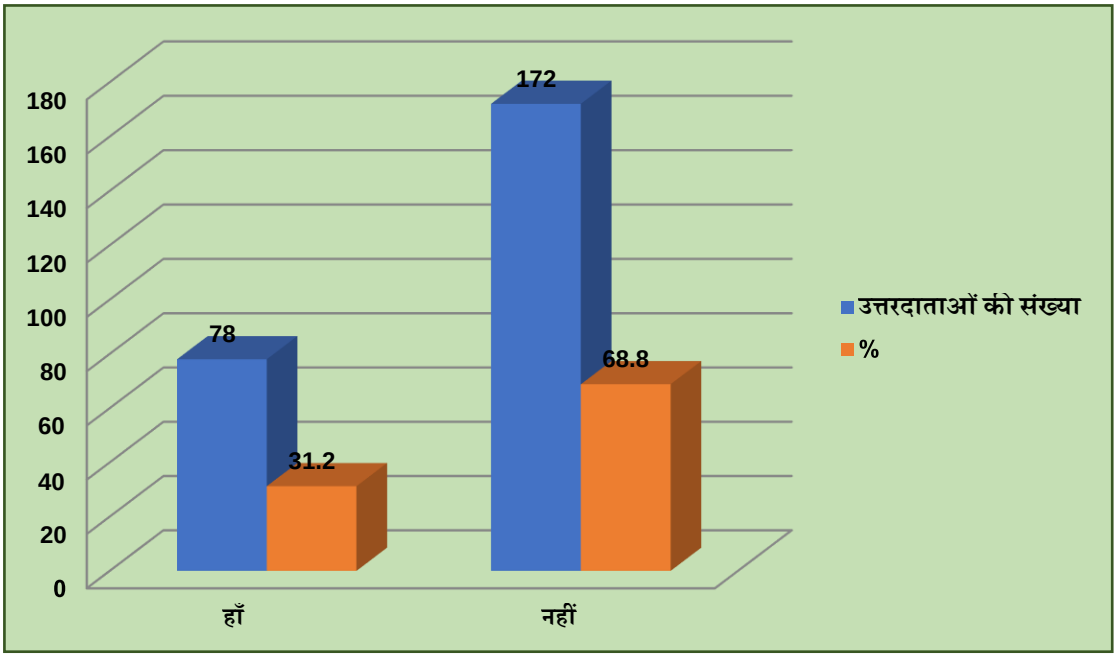

ग्राफ़ 5.31

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 31.2% उत्तरदाता सहमत हैं कि उनके परिवार पर कर्ज है और 68.8% उत्तरदाता सहमत हैं कि उनके परिवार पर कोई कर्ज नहीं है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 68.8% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उनके परिवार पर कोई कर्ज नहीं है।

32. क्या आप माता-पिता से प्रेरित हैं?

निम्नलिखित तालिका से बाल मजदूर के रूप में काम करने की प्रेरणा के साथ धारणा नीचे दी गई तालिका में दी गई है—

तालिका सं. 5.32			
क्रमांक	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	91	36.4
2.	नहीं	159	63.6
	कुल	**250**	**100**

ग्राफ़ 5.32

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि लगभग 36.4% उत्तरदाता माता-पिता से प्रेरित हैं और 63.6% उत्तरदाता माता-पिता से प्रेरित नहीं हैं।

इसलिए, हम उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 63.6% इस बात से सहमत हैं कि वे अपने माता-पिता से प्रेरित नहीं हैं।

33. मौजूदा कानून के बारे में बाल श्रम की अनदेखी?

निम्नलिखित तालिका से हम बाल श्रम को रोकने के लिए कानूनों की प्रभावशीलता के बारे में विश्लेषण करते हैं। निम्न तालिका में विश्लेषण करें-

तालिका सं. 5.33			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	187	74.8
2.	नहीं	63	25.2
	कुल	**250**	**100**

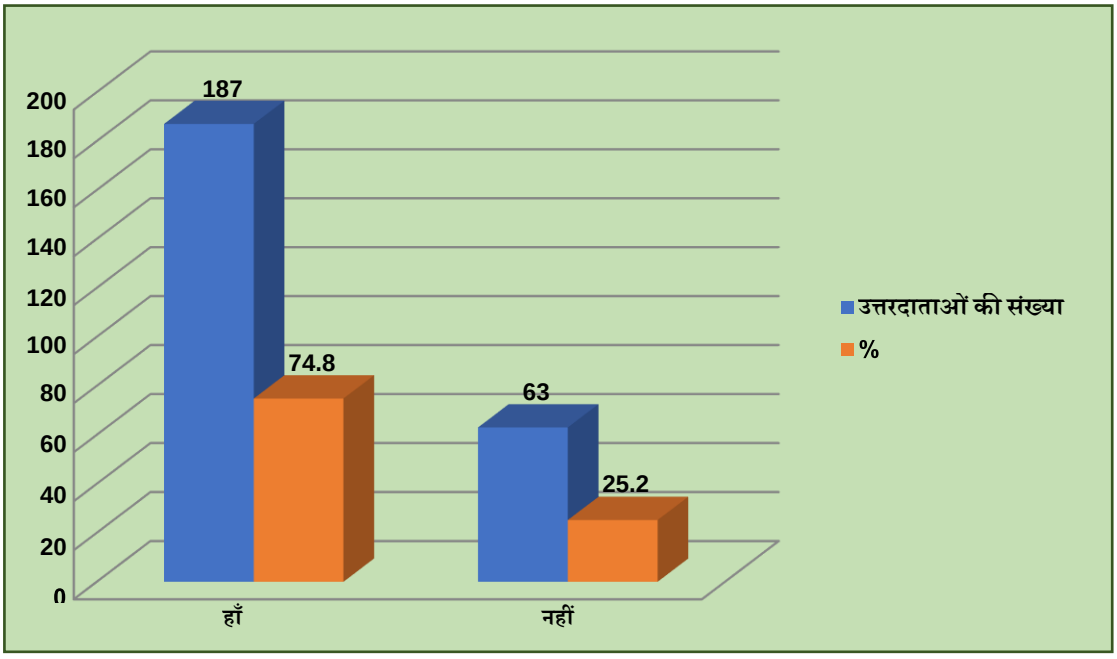

ग्राफ़ 5.33

उपर्युक्त तालिका से हम देख सकते हैं कि 74.8% उत्तरदाता सहमत हैं कि कानून प्रभावी रूप से बाल श्रम को नहीं रोकते हैं और 25.2% उत्तरदाता सहमत हैं कि कानून प्रभावी रूप से बाल श्रम को नहीं रोकते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 78.8% सहमत हैं कि कानून प्रभावी रूप से बाल श्रम को नहीं रोकते हैं।

34. क्या आपके माता-पिता जानते हैं कि बाल श्रम अपराध है?

निम्नलिखित तालिका में हम इस बारे में विश्लेषण करते हैं कि कितने माता-पिता जानते हैं कि बाल श्रम अपराध है नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका सं. 5.34			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	181	74.4
2.	नहीं	69	27.6
	कुल	**250**	**100**

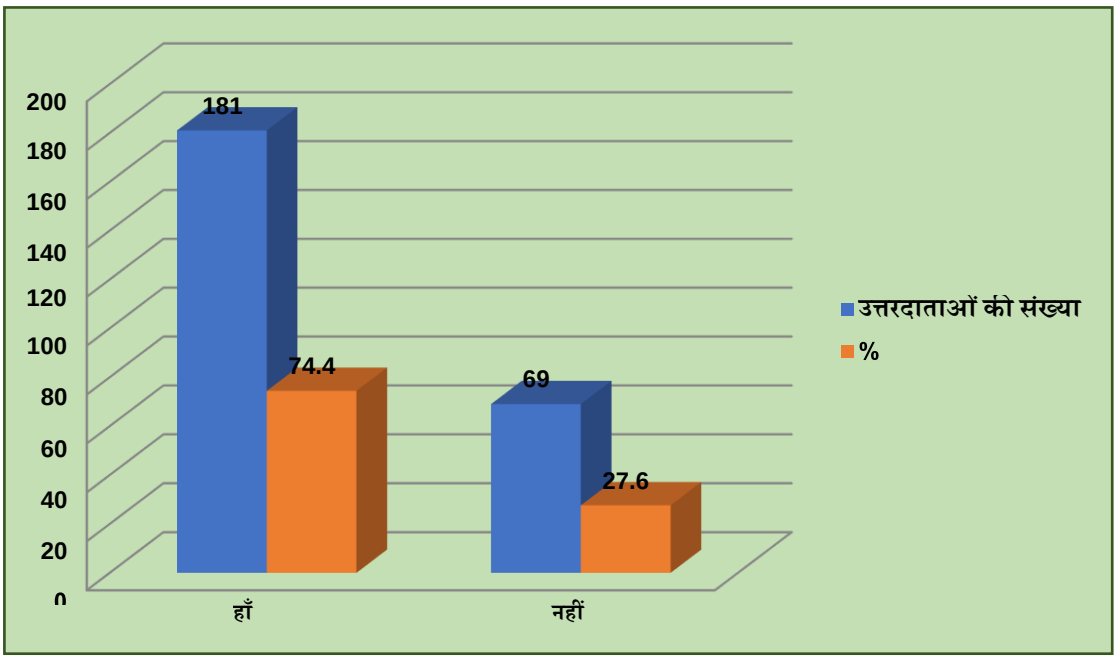

ग्राफ़ 5.34

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 74.4% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उन्हें बाल श्रम दंडनीय अपराध के बारे में अच्छी तरह से पता है और 27.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उन्हें बाल श्रम दंडनीय अपराध के बारे में अच्छी तरह से पता नहीं है

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 74.4% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उन्हें बाल श्रम दंडनीय अपराध के बारे में अच्छी तरह से पता है।

35. बाल श्रमिकों के लिए उनके वर्तमान कार्य में कठिनाइयाँ?

निम्नलिखित तालिका में हम बाल श्रमिकों के लिए उनके वर्तमान कार्य में कठिनाइयों के बारे में जानने का प्रयास करते हैं।

तालिका सं. 5.35			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	31	12.4
2.	नहीं	219	87.6
	कुल	**250**	**100**

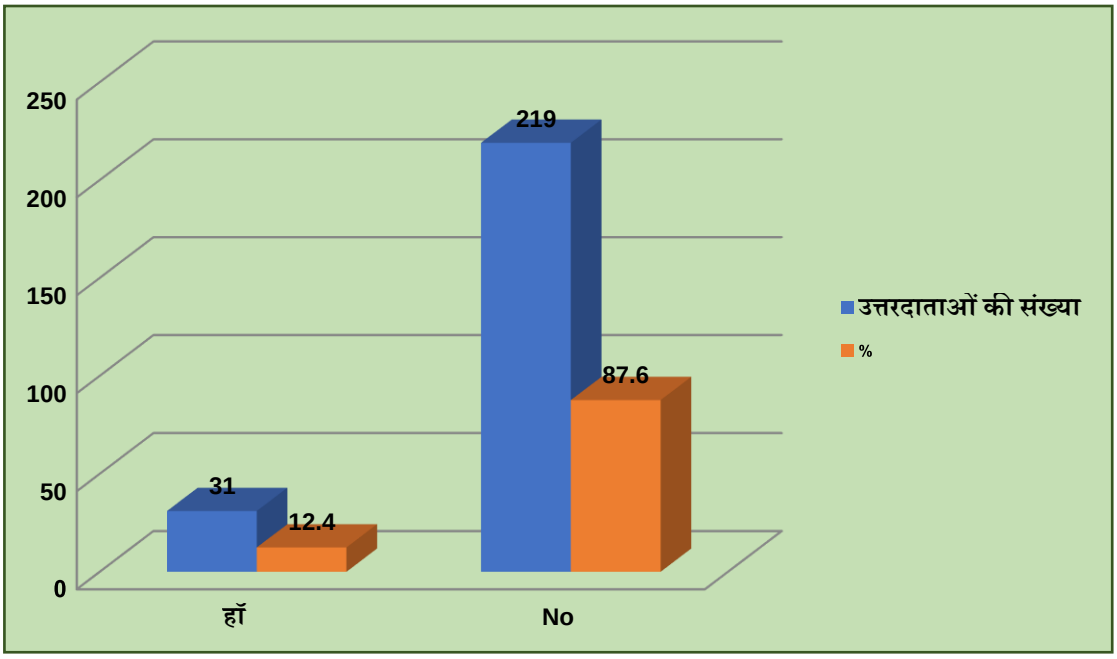

ग्राफ़ 5.35

उपर्युक्त तालिका के अनुसार, हमने पाया कि लगभग 12.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अपने वर्तमान कार्य में बाल श्रम की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और 87.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अपने वर्तमान कार्य में बाल श्रम की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (87.6% उत्तरदाताओं) को अपने वर्तमान कार्य में बाल श्रम की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता है।

36. क्या आपको काम के दौरान कोई शारीरिक समस्या होती है?

निम्न तालिका के अनुसार, हमने उनके कार्य समय के दौरान शारीरिक समस्या के बारे में विश्लेषण किया है, जो नीचे दी गई तालिका में दी गई है—

तालिका सं. 5.36			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	167	66.8
2.	नहीं	83	33.2
	कुल	**250**	**100**

ग्राफ़ 5.36

उपर्युक्त तालिका से हम कार्य के दौरान शारीरिक समस्या के बारे में विश्लेषण कर सकते हैं कि लगभग 66.8% उत्तरदाताओं को कार्य के दौरान शारीरिक समस्या होती है और 33.2% उत्तरदाताओं को अपने कार्य समय के दौरान शारीरिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश 66.8% उत्तरदाताओं को कार्य के दौरान शारीरिक समस्या होती है।

37. क्या आप अपने कार्य को लेकर चिंतित हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं की अपने कार्य को लेकर चिंता के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.37			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	230	92
2.	नहीं	20	08
	कुल	**250**	**100**

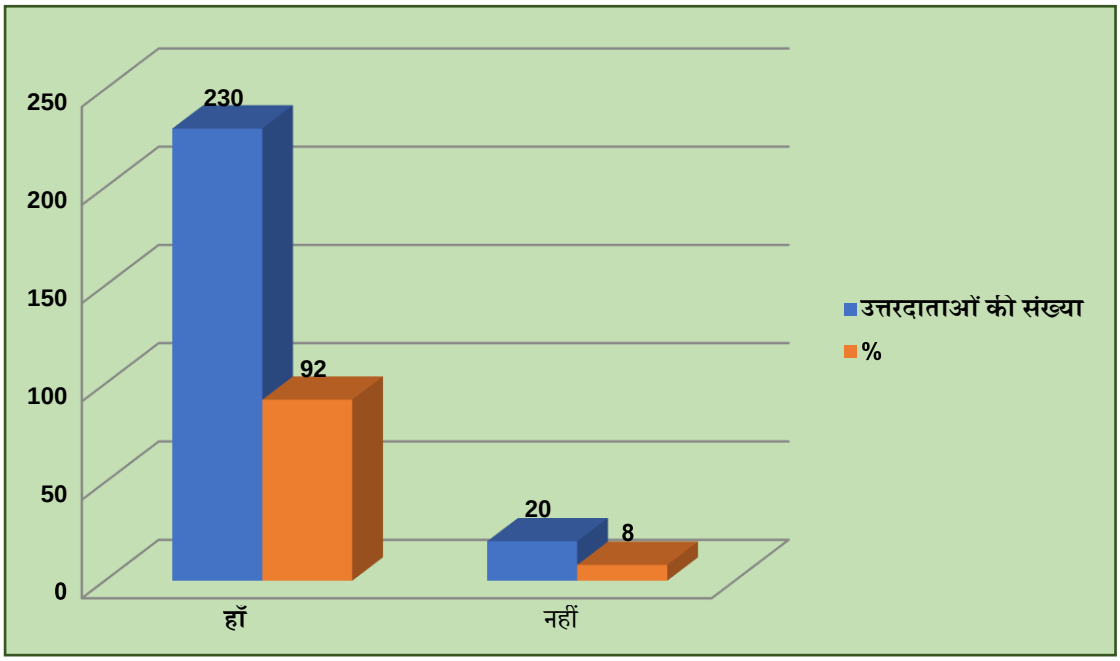

ग्राफ़ 5.37

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 92% उत्तरदाताओं ने कार्य के दौरान कार्य के बारे में चिंता की और 8% उत्तरदाताओं ने कार्य के दौरान अपने कार्य के बारे में चिंता नहीं की।

इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 92% उत्तरदाताओं ने कार्य के दौरान कार्य के बारे में चिंता की।

38. क्या आपको अपने काम में खतरा महसूस होता है?

निम्न तालिका से हम सरकार द्वारा स्वास्थ्य सुरक्षा के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.38			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	159	63.6
2.	नहीं	91	34.4
	कुल	**250**	**100**

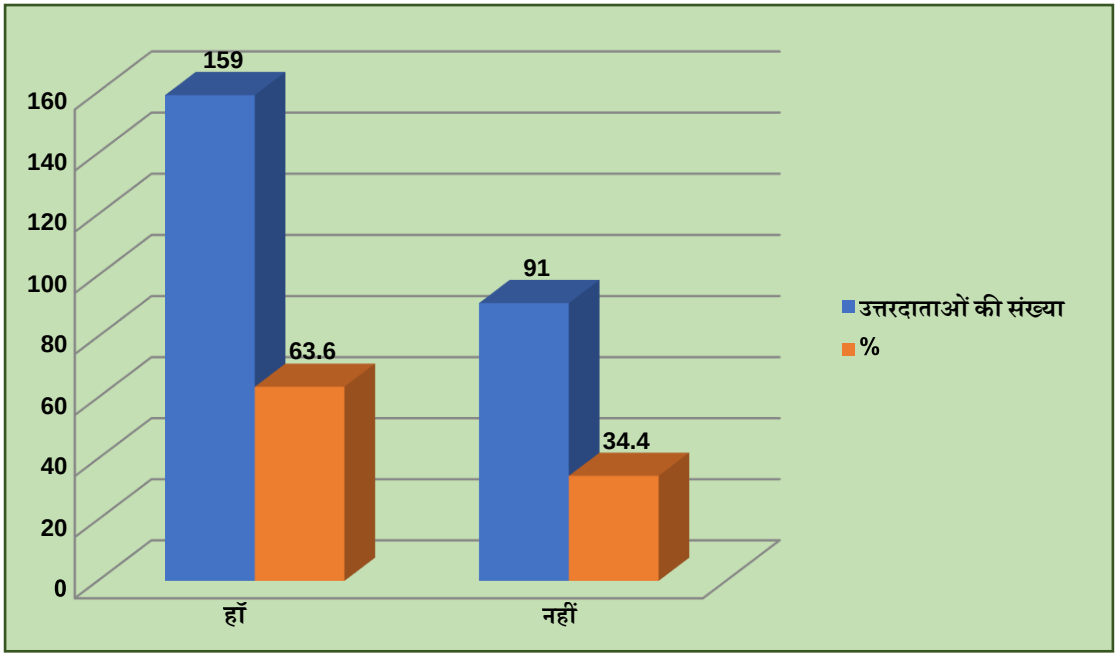

ग्राफ 5.38

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 63.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें आपके काम में खतरा महसूस होता है और 34.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें आपके काम में खतरा महसूस नहीं होता।

इस प्रकार, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि 63.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें आपके काम में खतरा महसूस होता है।

39. क्या आपको अपने वरिष्ठ का व्यवहार बुरा लगता है?

निम्न तालिका में हम आपके वरिष्ठ के बुरे व्यवहार का विश्लेषण करते हैं जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका सं. 5.39			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	197	78.8
2.	नहीं	53	21.2
	कुल	**250**	**100**

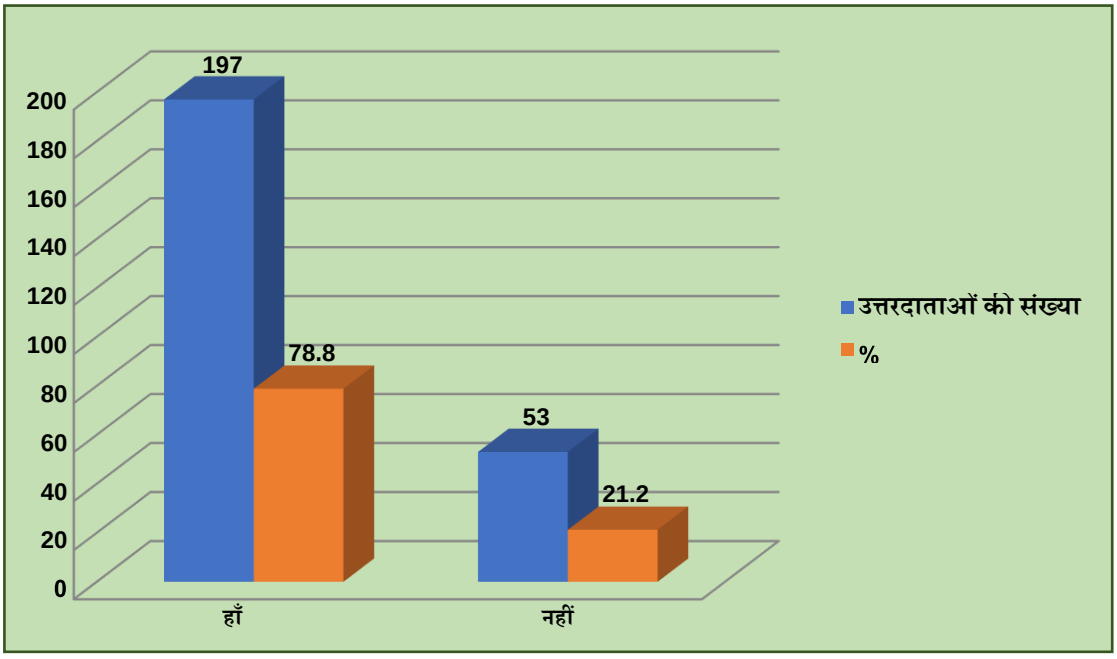

ग्राफ़ 5.39

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम पाते हैं कि 78.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें कार्यस्थल पर आपके वरिष्ठ का व्यवहार बुरा लगता है, केवल 21.2% उत्तरदाताओं ने इस बात से इनकार किया कि उन्हें कार्यस्थल पर आपके वरिष्ठ का व्यवहार बुरा नहीं लगता।

इसलिए, हम उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने 78.8% स्वीकार किया कि उन्हें कार्यस्थल पर आपके वरिष्ठ का व्यवहार बुरा लगता है।

40. क्या आपकी कार्य स्थिति अच्छी है?

निम्नलिखित तालिका में हम नीचे दी गई तालिका में दिए गए कार्यस्थल की कार्य स्थिति के बारे में विश्लेषण करते हैं—

तालिका सं. 5.40			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	187	74.8
2.	नहीं	63	25.2
	कुल	**250**	**100**

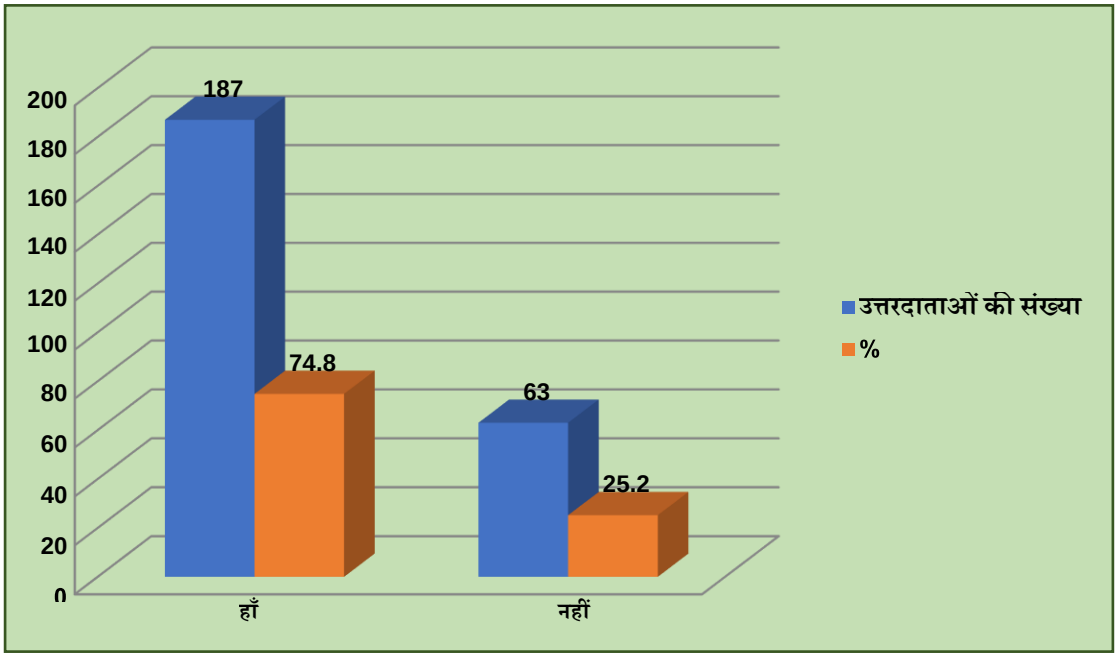

ग्राफ़ 5.40

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 74.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काम करने की स्थिति अच्छी है और 25.2% उत्तरदाताओं ने काम करने की स्थिति अच्छी होने से इनकार किया।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काम करने की स्थिति अच्छी है।

41. क्या आप पर कोई मानसिक और शारीरिक दबाव है?

निम्नलिखित तालिका में हम काम के घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के किसी भी मानसिक और शारीरिक दबाव का विश्लेषण करते हैं। नीचे दी गई तालिका का विश्लेषण करें—

तालिका सं. 5.41			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	188	75.2
2.	नहीं	62	24.8
	कुल	**250**	**100**

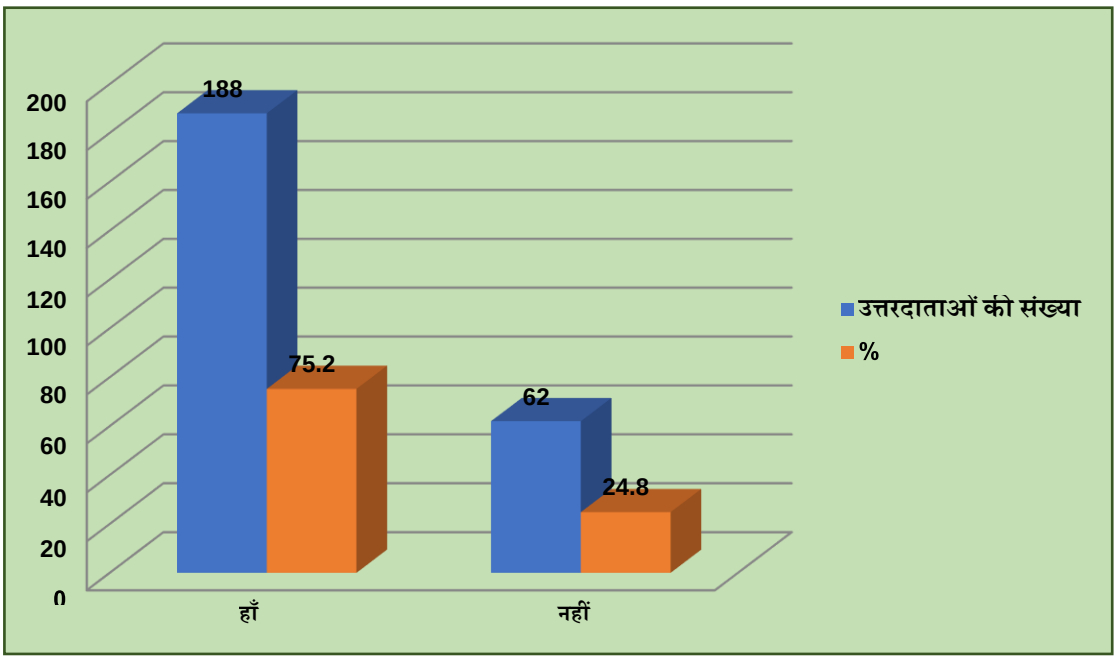

ग्राफ़ 5.41

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हमने पाया कि 75.2% उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस होता है और 24.8% उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस नहीं होता है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस होता है।

42. क्या आपको प्रतिकूल कार्य स्थिति महसूस होती है?

निम्नलिखित तालिका में हमने उत्तरदाताओं के आहार के बारे में विश्लेषण किया है जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका सं. 5.42			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	223	89.2
2.	नहीं	27	10.8
	कुल	**250**	**100**

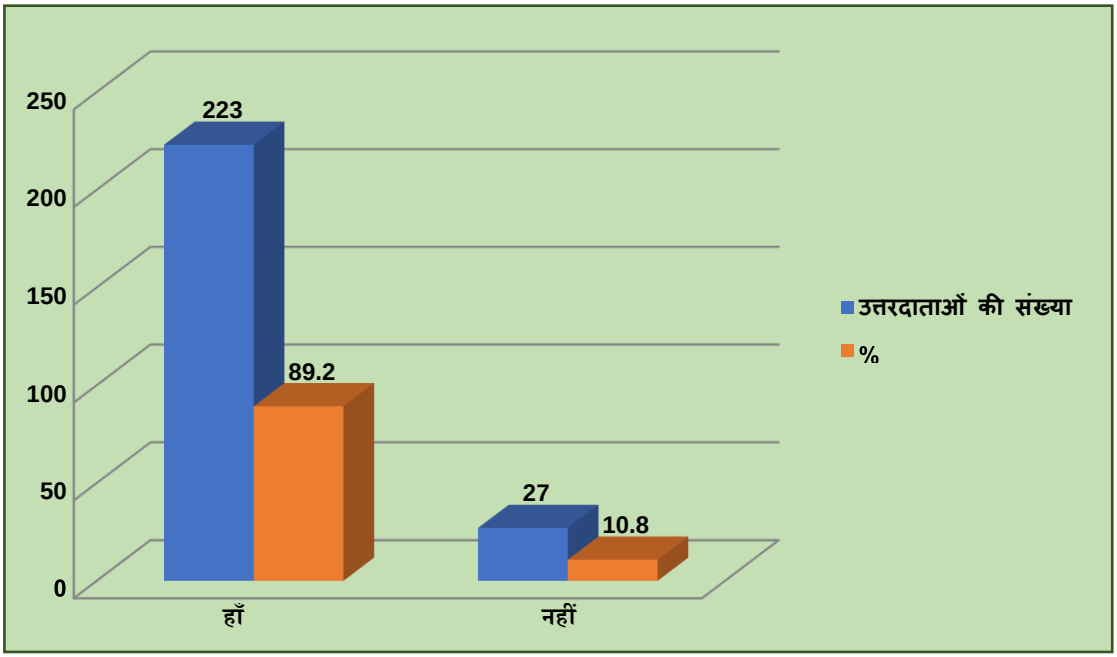

ग्राफ़ 5.42

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण करते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 89.2% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ महसूस होती हैं और 10.8% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ महसूस नहीं होती हैं।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि 89.2% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ महसूस होती हैं।

43. क्या आप पौष्टिक आहार लेते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं द्वारा लिए गए पौष्टिक आहार के बारे में विश्लेषण करते हैं जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

तालिका सं. 5.43			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	112	44.8
2.	नहीं	138	55.2
	कुल	**250**	**100**

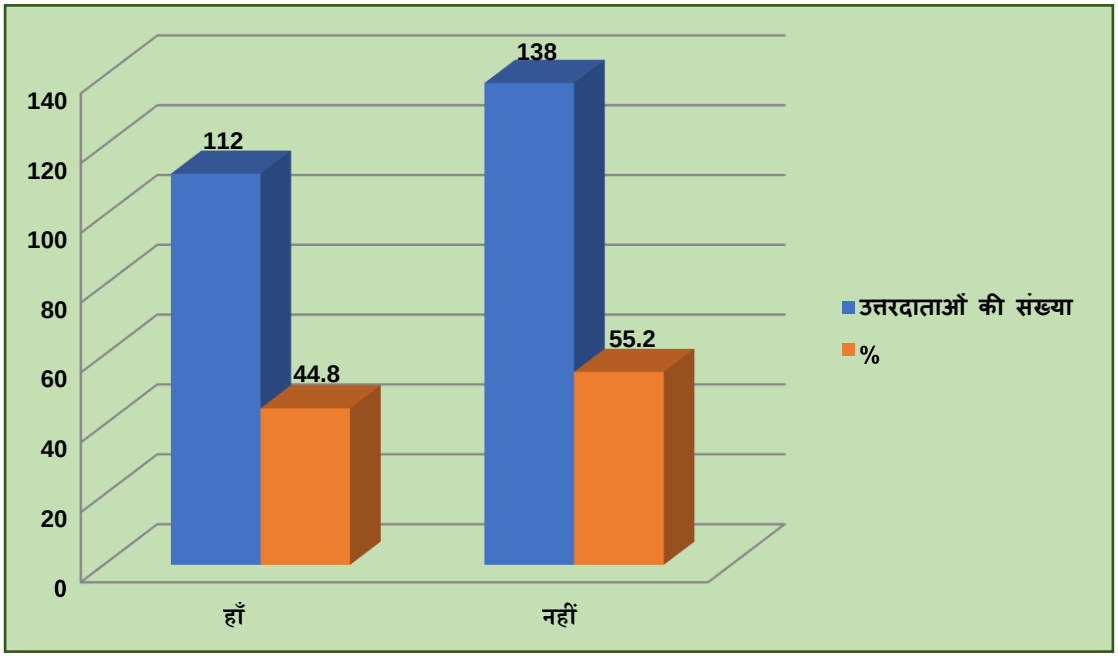

ग्राफ़ 5.43

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि 44.8% उत्तरदाता उचित पौष्टिक आहार लेते हैं और 55.2% उत्तरदाता पौष्टिक आहार नहीं लेते हैं।

इस प्रकार, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 56% उचित और पौष्टिक आहार लेते हैं।

44. क्या आपको लगता है कि काम हर हालत में ज़रूरी है?

निम्नलिखित तालिका में हम काम के बारे में उत्तरदाताओं की मानसिकता का विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.44			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	69	27.6
2.	नहीं	181	72.4
	कुल	**250**	**100**

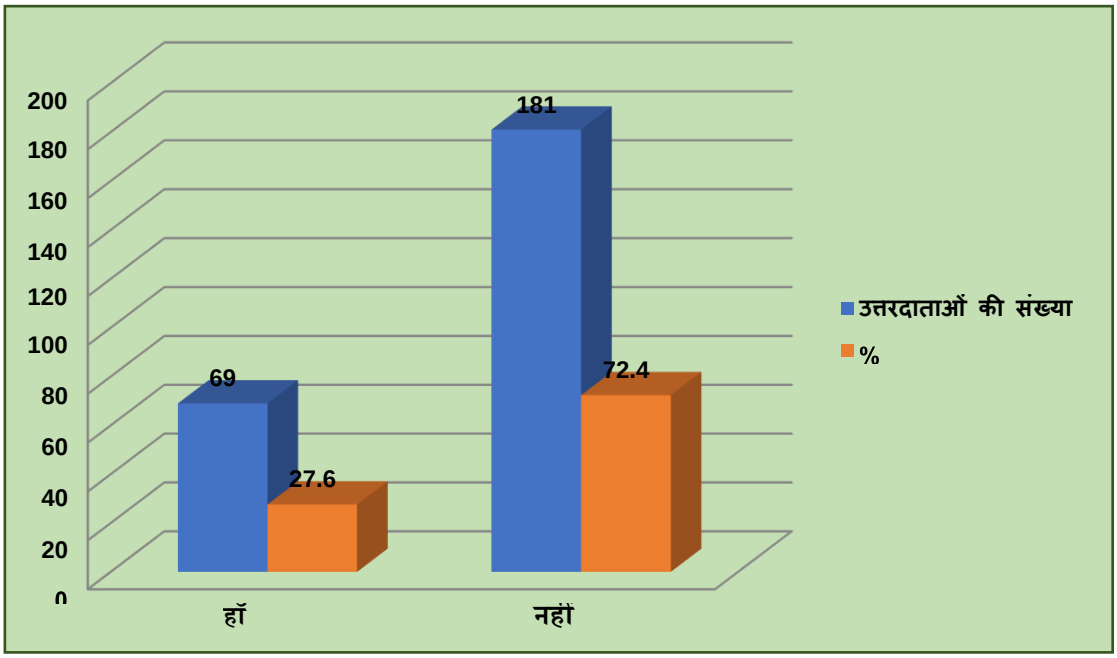

ग्राफ़ 5.44

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम पाते हैं कि 27.6% उत्तरदाताओं को लगता है कि काम जीवन के लिए आवश्यक है और 72.4% उत्तरदाताओं को लगता है कि काम जीवन के लिए आवश्यक नहीं है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं 72.4% उत्तरदाताओं को लगता है कि काम जीवन के लिए आवश्यक नहीं है।

45. शारीरिक दुर्बलता?

निम्नलिखित तालिका में हम कार्यस्थल पर शारीरिक दुर्बलता के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.45			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	190	76
2.	नहीं	60	245
	कुल	**250**	**100**

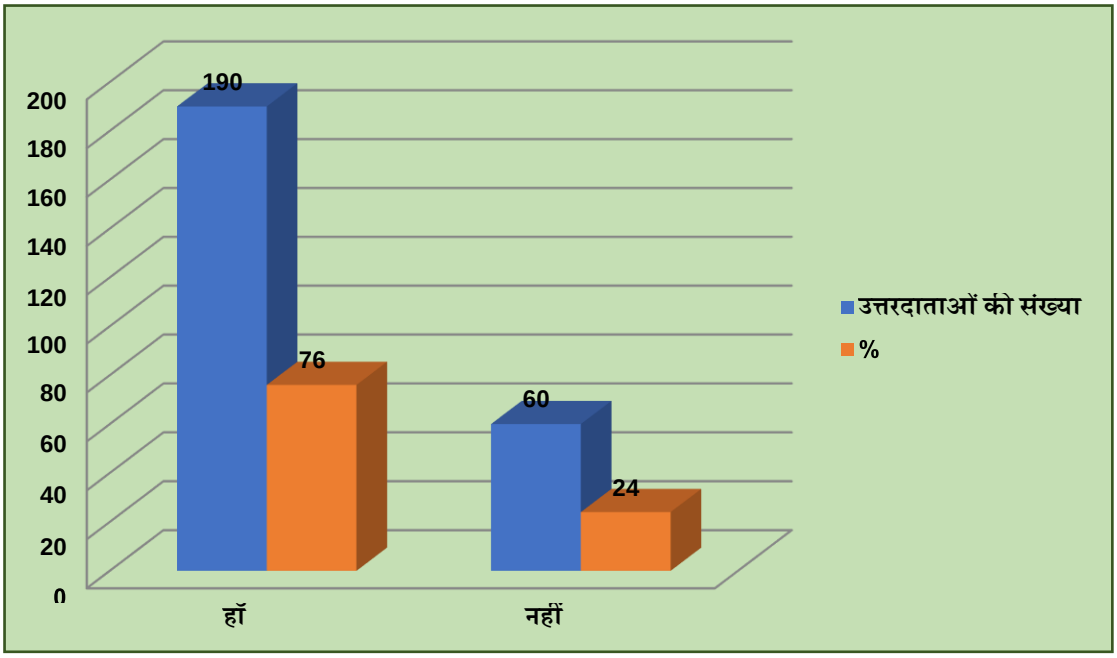

ग्राफ़ 5.45

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हमने पाया कि 76% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर शारीरिक अक्षमता महसूस होती है और 24% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर किसी भी तरह की शारीरिक अक्षमता से इनकार किया है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर शारीरिक अक्षमता महसूस होती है।

46. क्या आपको कोई अन्य स्वास्थ्य समस्या है?

निम्न तालिका के अनुसार हमने कार्यस्थल पर स्वास्थ्य समस्या के बारे में विश्लेषण किया है -

तालिका सं. 5.46			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	192	76.8
2.	नहीं	58	23.2
	कुल	**250**	**100**

ग्राफ़ 5.46

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण करते हैं कि 76.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अन्य स्वास्थ्य समस्या महसूस होती है और 23.2% उत्तरदाताओं ने अन्य स्वास्थ्य समस्या महसूस नहीं की।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 76.8% उत्तरदाताओं में से अधिकांश ने स्वीकार किया कि उनके पास ड्यूटी शिफ्ट की सुविधा है।

47. कार्यस्थल पर कोई बुरी लत?

निम्नलिखित तालिका में हम कार्यस्थल पर बुरी लत के बारे में विश्लेषण करते हैं, जिसकी चर्चा नीचे दी गई तालिका में की गई है—

तालिका सं. 5.47			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	55	22
2.	नहीं	195	78
	कुल	**250**	**100**

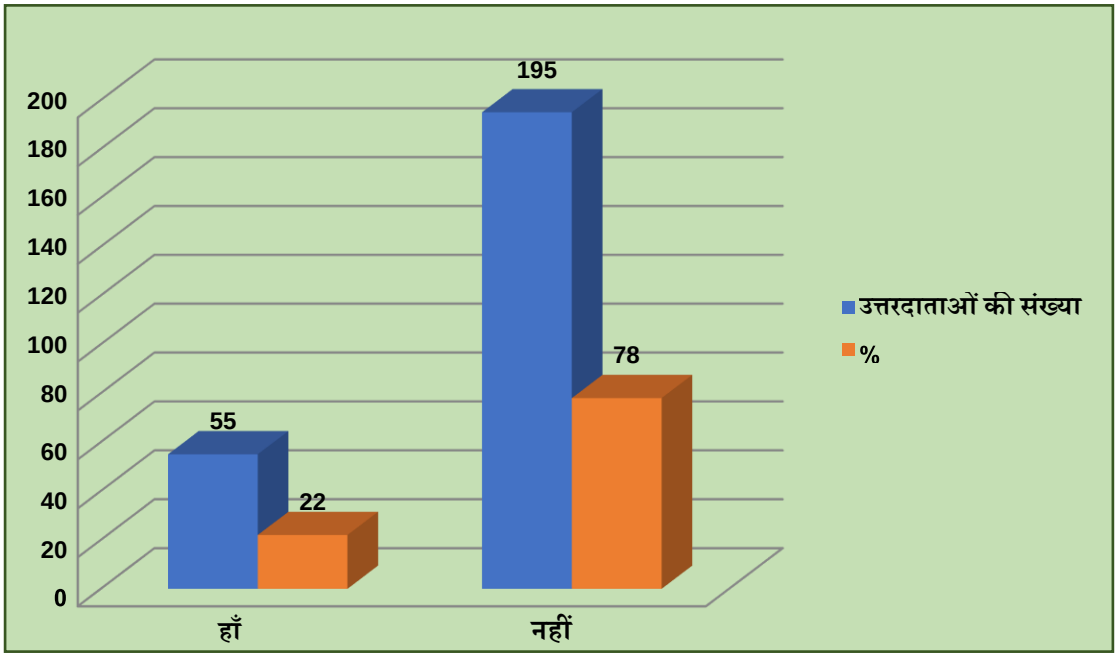

ग्राफ़ 5.47

उपर्युक्त तालिका के अनुसार, हमने पाया कि 22% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे कार्यस्थल पर और कार्यस्थल के बाहर बुरी लत में लिप्त हैं और 78% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे कार्यस्थल पर और कार्यस्थल के बाहर किसी बुरी लत में लिप्त नहीं हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 78% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे कार्यस्थल पर और कार्यस्थल के बाहर किसी बुरी लत में लिप्त नहीं हैं।

शोध कार्य के दौरान बातचीत के अनुसार उत्तरदाताओं को इस प्रश्न के बारे में कोई सहजता नहीं है, वे जानकारी छिपाने की कोशिश करते हैं।

48. धूम्रपान की लत?

निम्न तालिका में हम महिला पुलिस के लिए आत्म-सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण के बारे में विश्लेषण कर सकते हैं—

तालिका सं. 5.48			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	47	18.8
2.	नहीं	203	81.2
	कुल	**250**	**100**

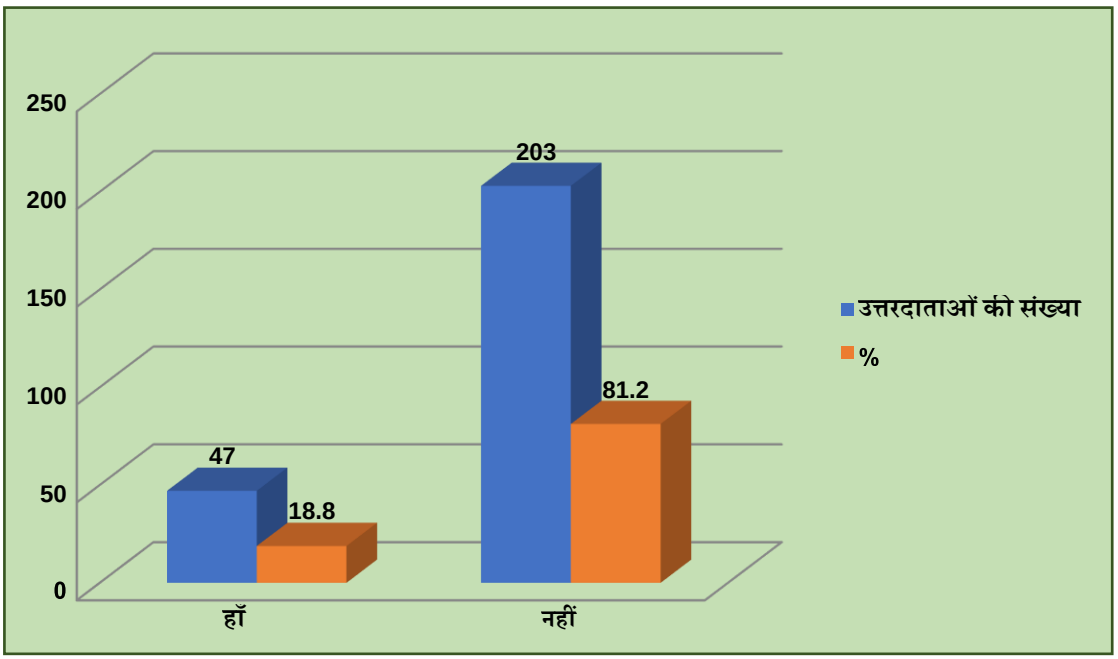

ग्राफ़ 5.48

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 18.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान करते हैं और 81.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार नहीं किया कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान गतिविधि में शामिल नहीं हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 81.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार नहीं किया कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान गतिविधि में शामिल नहीं हैं।

49. तम्बाकू चबाना?

निम्नलिखित तालिका में हम नीचे दी गई तालिका में चबाने वाली तम्बाकू की आदत के बारे में विश्लेषण करते हैं—

तालिका सं. 5.49			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	67	26.8
2.	नहीं	183	73.2
	कुल	**250**	**100**

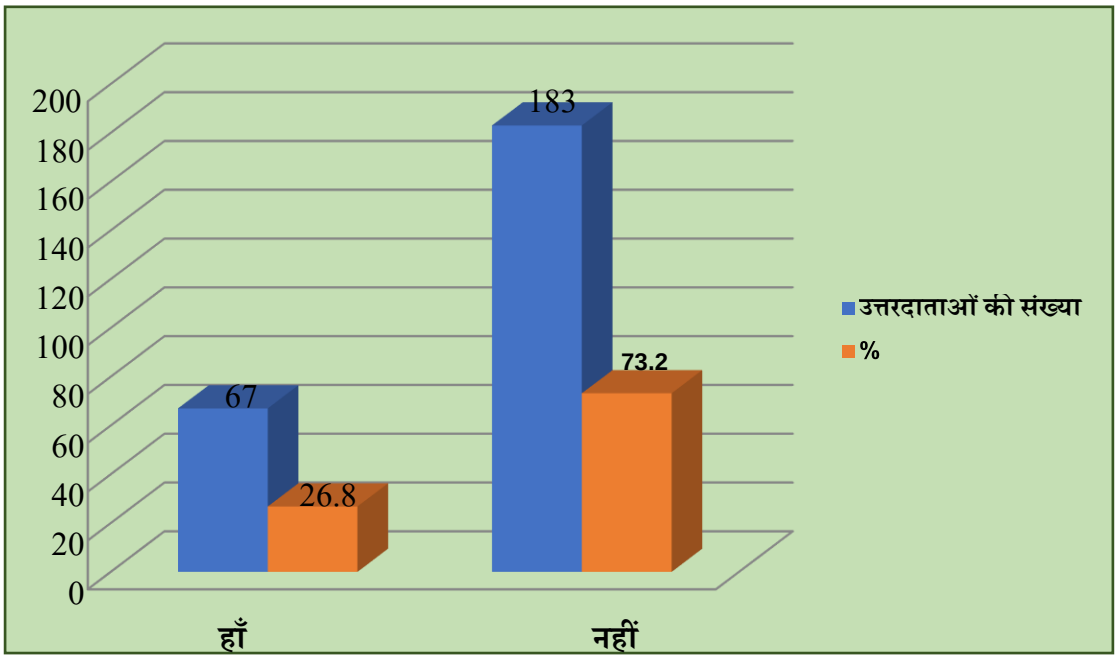

ग्राफ़ 5.49

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 26.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि वे चबाने वाले तम्बाकू में शामिल हैं 73.2% उत्तरदाताओं ने चबाने वाले तम्बाकू से इनकार किया।

इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 73.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि वे कार्यस्थल पर चबाने वाले तम्बाकू में शामिल नहीं हैं।

50. शराब की लत?

निम्नलिखित तालिका में हम नीचे दी गई तालिका में सरकार द्वारा प्रदान की गई वाहन सुविधाओं के बारे में विश्लेषण करते हैं—

तालिका सं. 5.50			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	41	16.4
2.	नहीं	209	83.6
	कुल	**250**	**100**

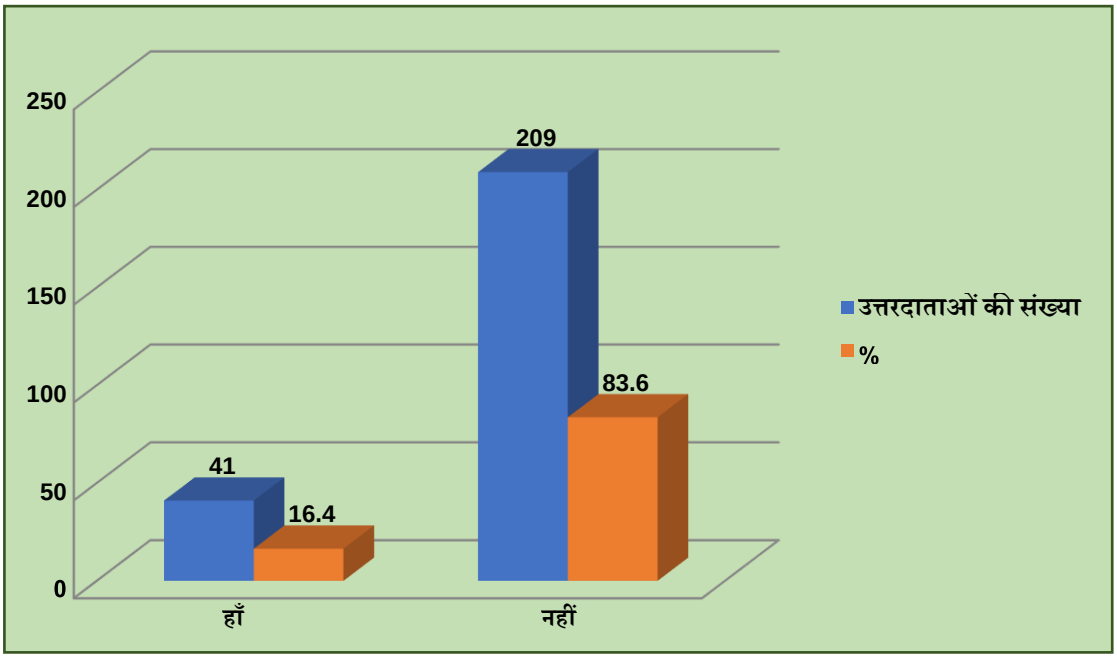

ग्राफ़ 5.50

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 16.4% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर शराब पीने की बात स्वीकार की और 83.6% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर शराब पीने की बात से इनकार किया।

इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि 83.6% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर शराब पीने की बात से इनकार किया।

51. धूम्रपान, चबाना, शराब पीना?

निम्नलिखित तालिका में हम निम्न तालिका में चर्चा की गई धूम्रपान, चबाना, शराब पीने की आदत के बारे में विश्लेषण करते हैं।

तालिका सं. 5.51			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	99	39.6
2.	नहीं	201	80.4
	कुल	**250**	**100**

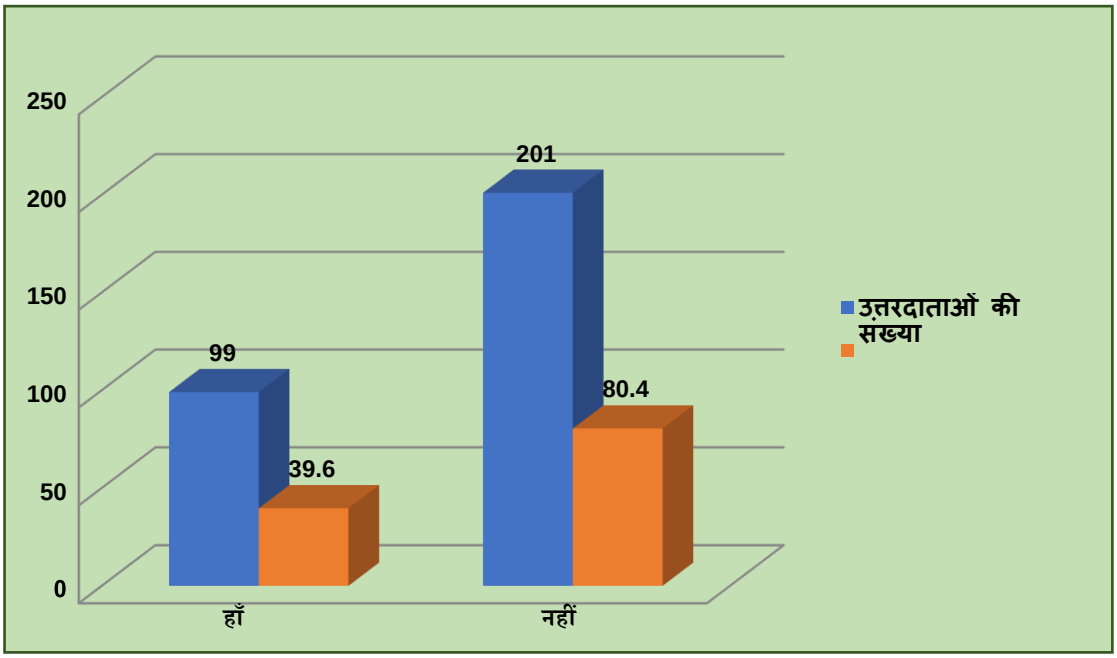

ग्राफ़ 5.51

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण करते हैं कि 39.6% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान, चबाना, शराब पीना और अन्य गतिविधियों में शामिल हैं और 80.4% उत्तरदाता सहमत नहीं हैं कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान, चबाना, शराब पीना और अन्य गतिविधियों में शामिल हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 80.4% उत्तरदाताओं में से अधिकांश सहमत हैं कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान, चबाना, शराब पीना और अन्य गतिविधियों में शामिल नहीं हैं।

52. पारिवारिक आय में वृद्धि?

निम्नलिखित तालिका में हमने बाल श्रमिक के रूप में काम करने के कारण पारिवारिक आय में वृद्धि या नहीं के बारे में विश्लेषण किया है, जिसकी चर्चा नीचे दी गई है।

तालिका सं. 5.52

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	179	71.6
2.	नहीं	71	28.4
	कुल	**250**	**100**

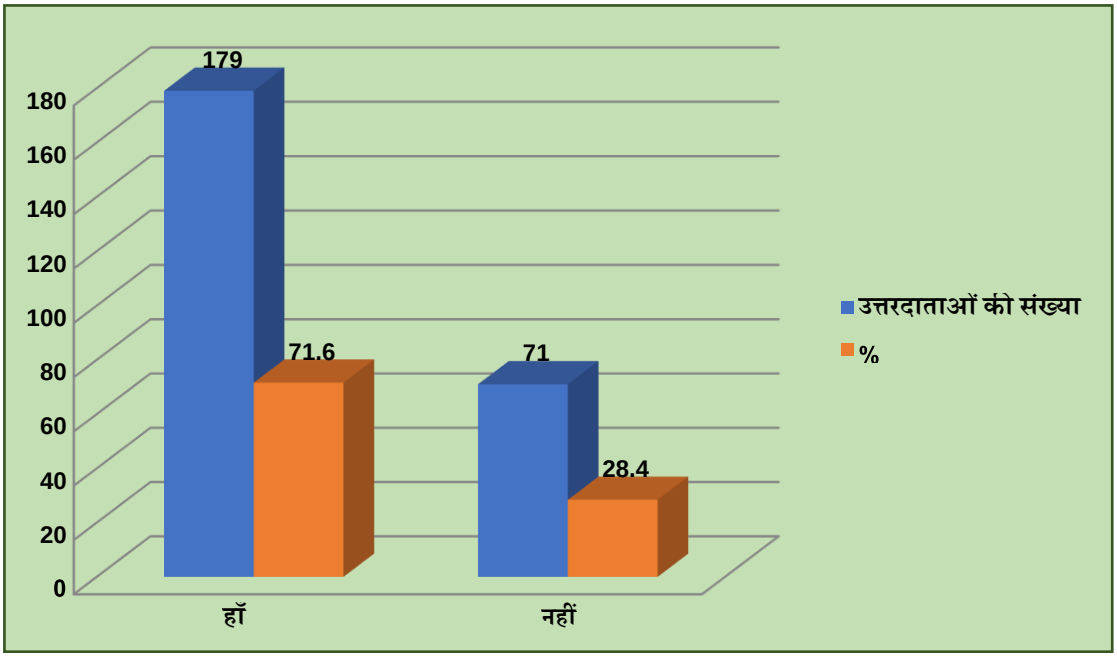

ग्राफ़ 5.52

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 71.6% उत्तरदाता जूता उद्योग में काम के कारण बढ़ती आय के स्तर से सहमत हैं और वे वर्तमान समय में अपने माता-पिता का सहारा बन रहे हैं और 28.4% उत्तरदाता जूता उद्योग में काम के कारण बढ़ती आय के स्तर से सहमत नहीं हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 71.6% उत्तरदाता जूता उद्योग में काम के कारण बढ़ती आय के स्तर से सहमत हैं और वे वर्तमान समय में अपने माता-पिता का सहारा बन रहे हैं

53. भाई-बहनों का बढ़ता शैक्षिक स्तर?

इस अनुभाग द्वारा हम कार्यस्थल और परिवार के बीच सामाजिक समर्थन और समायोजन के बारे में विश्लेषण करते हैं। इन अनुभागों में कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं और निम्नलिखित एक अन्य का विश्लेषण करते हैं।

तालिका सं. 5.53			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	101	40.4
2.	नहीं	149	59.6
	कुल	**250**	**100**

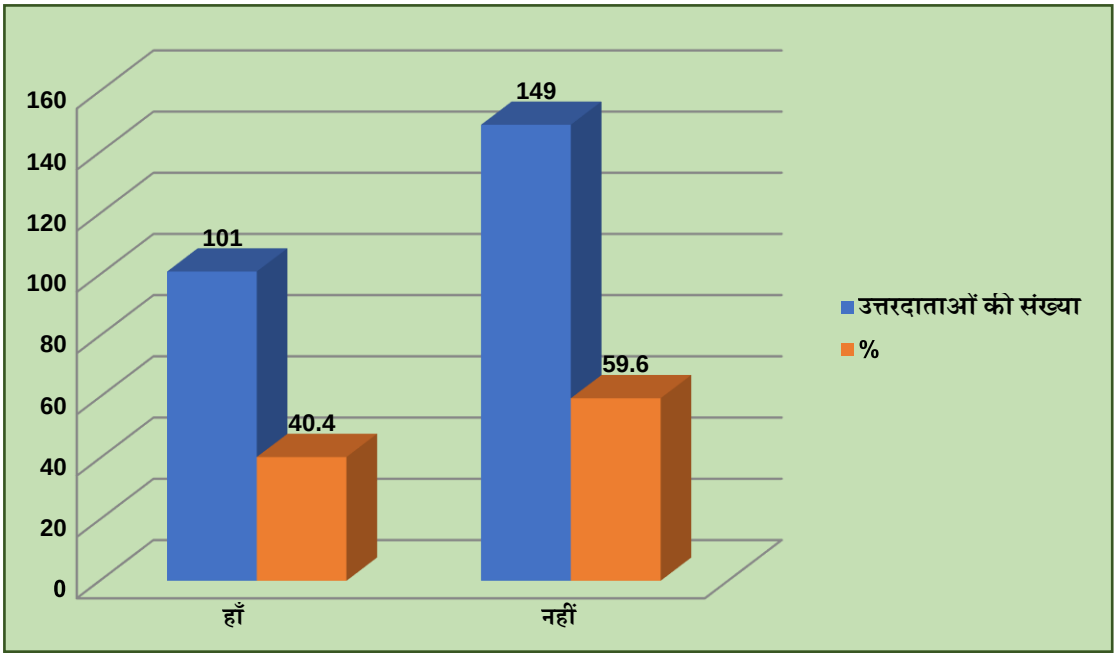

ग्राफ़ 5.53

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि सभी 44,4% उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उनका काम उनके भाई-बहन को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में सहायता करता है और 59.6% उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उनका काम उनके भाई-बहन को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में सहायता नहीं करता है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उनका काम उनके भाई-बहन को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में सहायता करता है

54. क्या आपको लगता है कि आपकी स्वास्थ्य स्थिति बेहतर है?

निम्नलिखित तालिका से हम उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में धारणा का विश्लेषण करना चाहते हैं, जिसकी चर्चा निम्न तालिका में की गई है।

तालिका सं. 5.54

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	31	12.4
2.	नहीं	219	87.6
	कुल	**250**	**100**

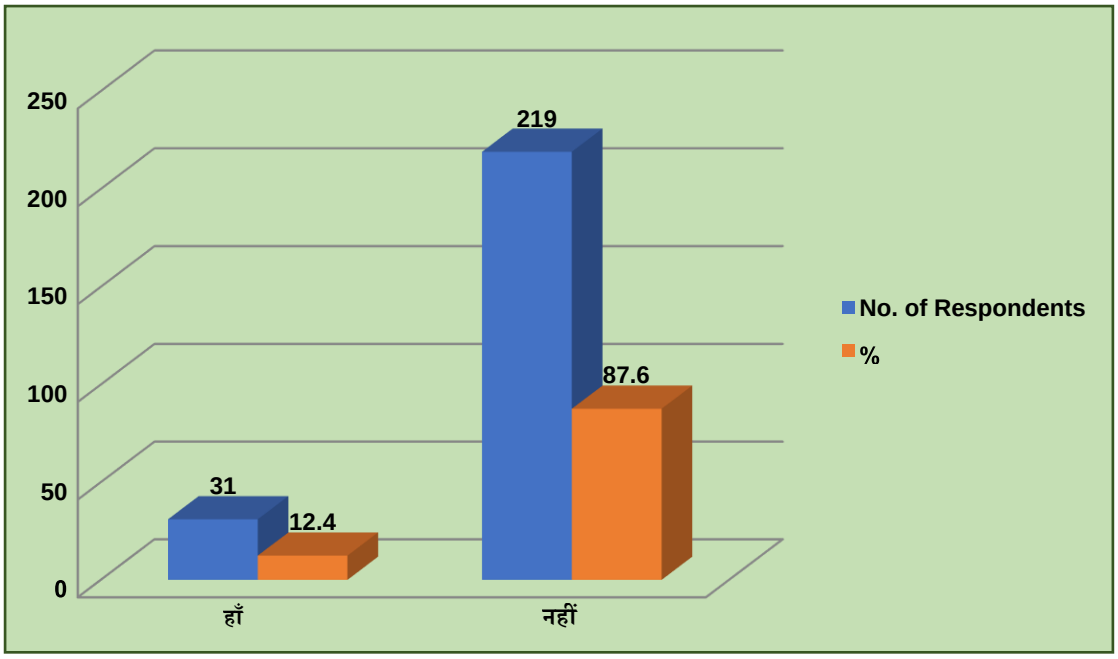

ग्राफ़ 5.54

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हम विश्लेषण करते हैं कि 12.4% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उनके उत्तरदाताओं की धारणा है कि उनकी स्वास्थ्य स्थिति बेहतर है 87.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं हैं कि उनकी स्वास्थ्य स्थिति बेहतर है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 87.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं हैं कि उनकी स्वास्थ्य स्थिति बेहतर है।

55. परिवार में निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि?

निम्नलिखित तालिका के अनुसार हम परिवार में निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि का विश्लेषण करते हैं, जो नीचे दी गई तालिका में चर्चा की गई है-

तालिका सं. 5.55

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	111	44.4
2.	नहीं	139	55.6
	कुल	**250**	**100**

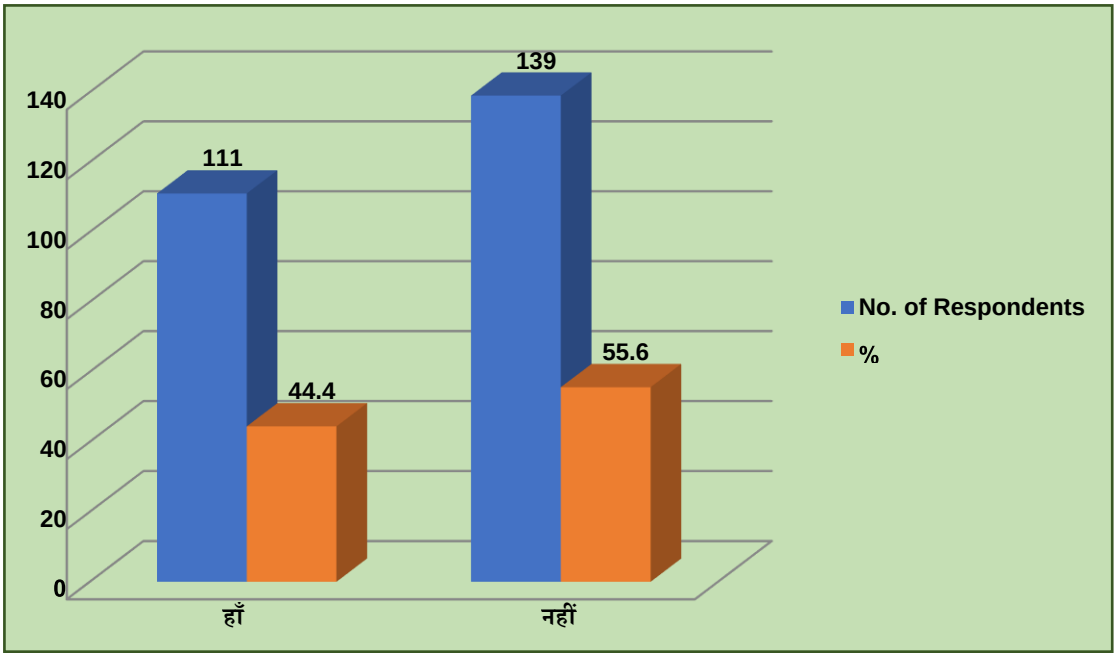

ग्राफ़ 5.55

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हम पाते हैं कि 44.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि परिवार में आर्थिक योगदान के कारण निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि हुई है और 55.6% उत्तरदाताओं ने परिवार में आर्थिक योगदान के कारण निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि से सहमति नहीं जताई

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 55.6% उत्तरदाता परिवार में आर्थिक योगदान के कारण निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि से सहमत नहीं हैं

56. माता-पिता पर निर्भरता में कमी?

निम्नलिखित तालिका के अनुसार हम नीचे दी गई तालिका में चर्चा की गई माता-पिता पर निर्भरता में कमी के बारे में उत्तरदाताओं की धारणा का विश्लेषण करना चाहते हैं।

तालिका सं. 5.56

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	79	31.6
2.	नहीं	171	68.4
	कुल	**250**	**100**

ग्राफ़ 5.56

उपर्युक्त तालिका से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 31.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता पर निर्भरता कम होती जा रही है और परिवार में आय बढ़ने से निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती जा रही है और 68.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता पर निर्भरता कम होती जा रही है और परिवार में आय बढ़ने से निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती जा रही है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता पर निर्भरता कम होती जा रही है और परिवार में आय बढ़ने से निर्णय लेने की शक्ति बढ़ती जा रही है।

57. बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति का व्यवहार?

निम्न तालिका के विश्लेषण से हम बाल श्रम के प्रति अन्य व्यक्ति के व्यवहार के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.57			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	अच्छा	79	31.6
2.	सामान्य	70	28
3.	खराब	171	68.4
	कुल	**250**	**100**

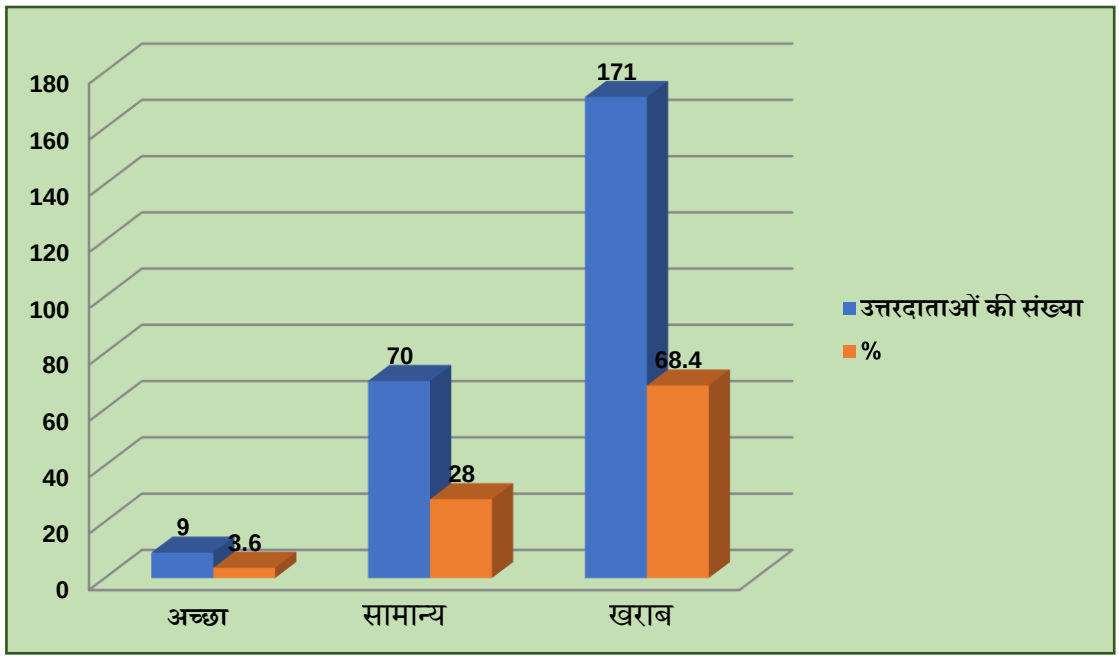

ग्राफ़ 5.57

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 3.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार अच्छा था, 28% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार अच्छा था और 68.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार बुरा था और इसका सभी परिवार के सदस्यों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार बुरा था आदि।

58. समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों के आधार पर?

निम्न तालिका में हम समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों के आधार पर विश्लेषण करते हैं –

तालिका सं. 5.58			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	168	67.2
2.	नहीं	82	32.8
	कुल	**250**	**100**

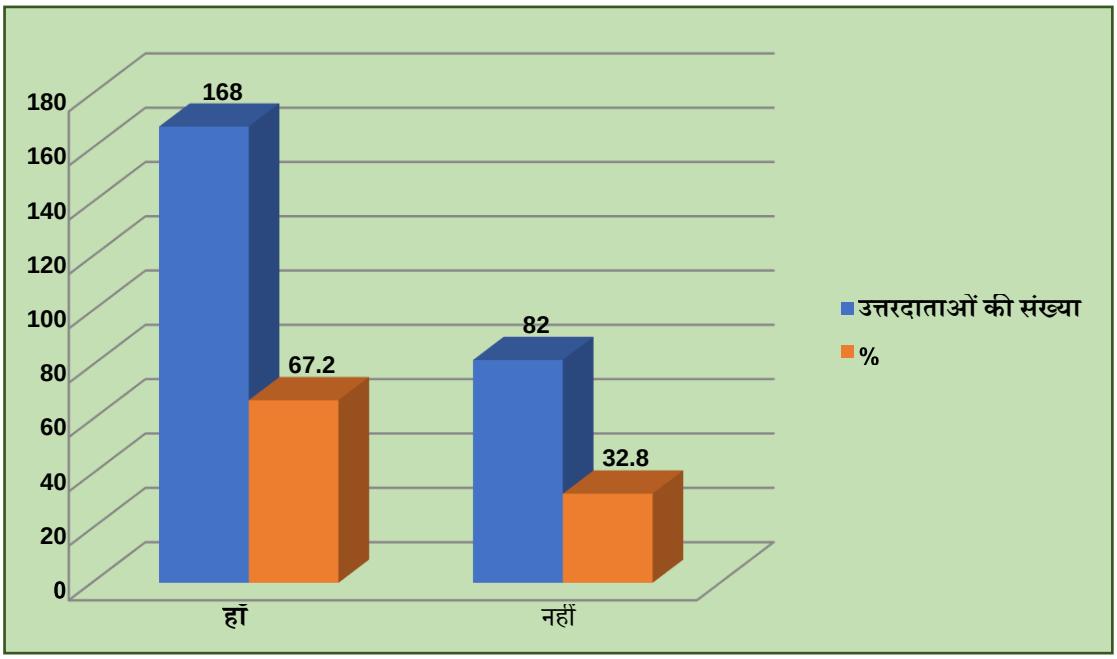

ग्राफ़ 5.58

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 67.2% उत्तरदाताओं ने समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों का सामना किया और 32.8% उत्तरदाताओं ने समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों का सामना किया।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उत्तरदाताओं में से अधिकांश ने समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों का सामना किया।

59. क्या आप सामाजिक अपमान महसूस करते हैं?

निम्न तालिका के अनुसार हम नीचे दी गई तालिका में चर्चा की गई सामाजिक अपमान की भावना के बारे में विश्लेषण करते हैं।

तालिका सं. 5.59			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	216	86.4
2.	नहीं	34	32.8
	कुल	**250**	**100**

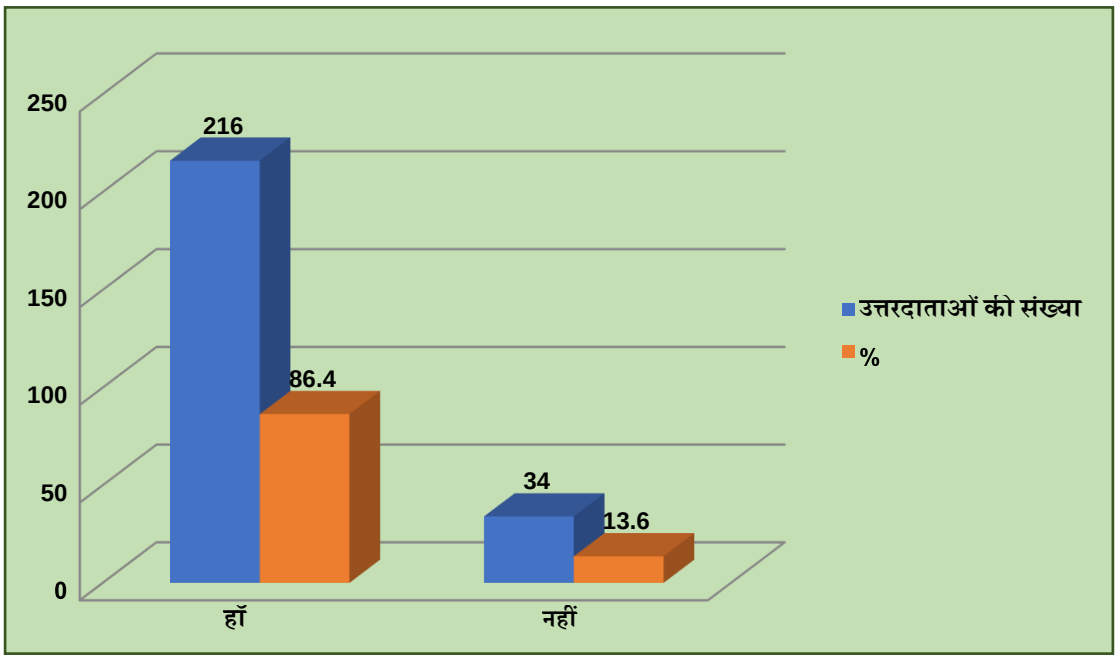

ग्राफ़ 5.59

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 86.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे सामाजिक अपमान महसूस करते हैं और 13.6% उत्तरदाताओं ने सामाजिक अपमान महसूस करने से सहमति नहीं जताई।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 86.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे सामाजिक अपमान महसूस करते हैं।

60. क्या आप मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करने के संबंध में दृष्टिकोण का विश्लेषण करते हैं-

तालिका सं. 5.60			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	170	68
2.	नहीं	80	32
	कुल	**250**	**100**

ग्राफ़ 5.60

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण करते हैं कि 68% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं और 32% उत्तरदाता मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 68% सहमत हैं कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं।

61. क्या आप विशेष अवसरों पर अपने परिवार के साथ जाते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम उत्तरदाताओं के अपने परिवार के साथ विशेष अवसरों में शामिल होने के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.61			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	113	45.2
2.	नहीं	137	54.8
	कुल	**250**	**100**

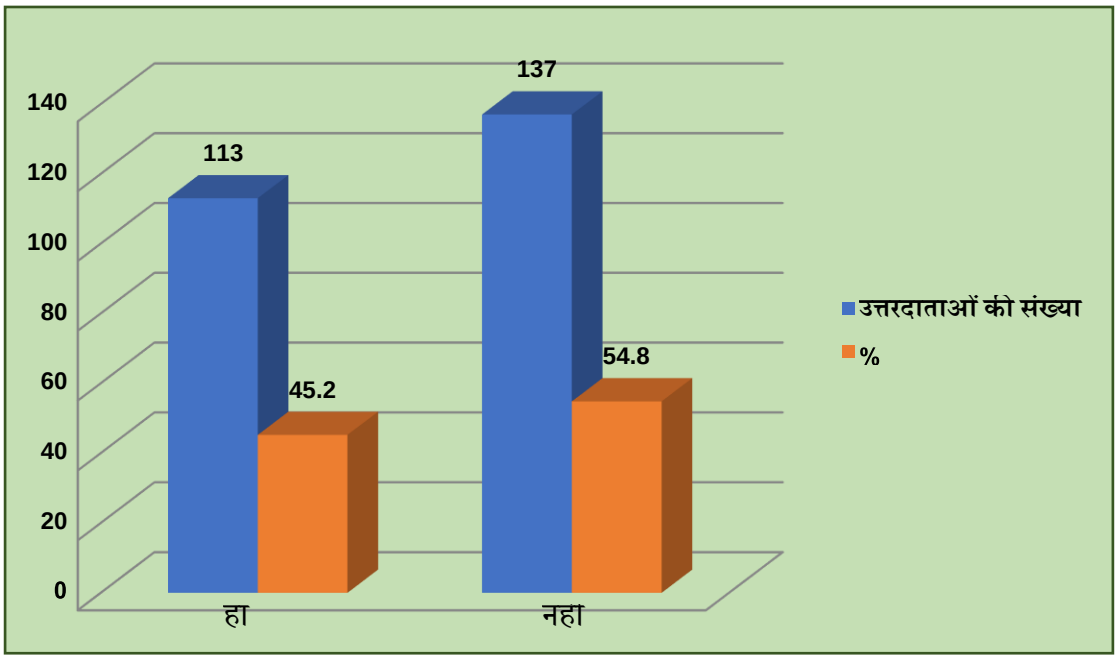

ग्राफ़ 5.61

उपर्युक्त तालिका से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 45.2% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ विशेष अवसरों पर जाते हैं और 54.8% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ विशेष अवसरों पर नहीं जाते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 54.8% अपने परिवार के साथ विशेष अवसरों पर नहीं जाते हैं।

62. शारीरिक क्षमता के अनुसार कार्य करें?

निम्नलिखित तालिका द्वारा हम शारीरिक क्षमता के अनुसार कार्य की प्रकृति का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में चर्चा करते हैं—

तालिका सं. 5.62			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	144	57.6
2.	नहीं	106	42.4
	कुल	**250**	**100**

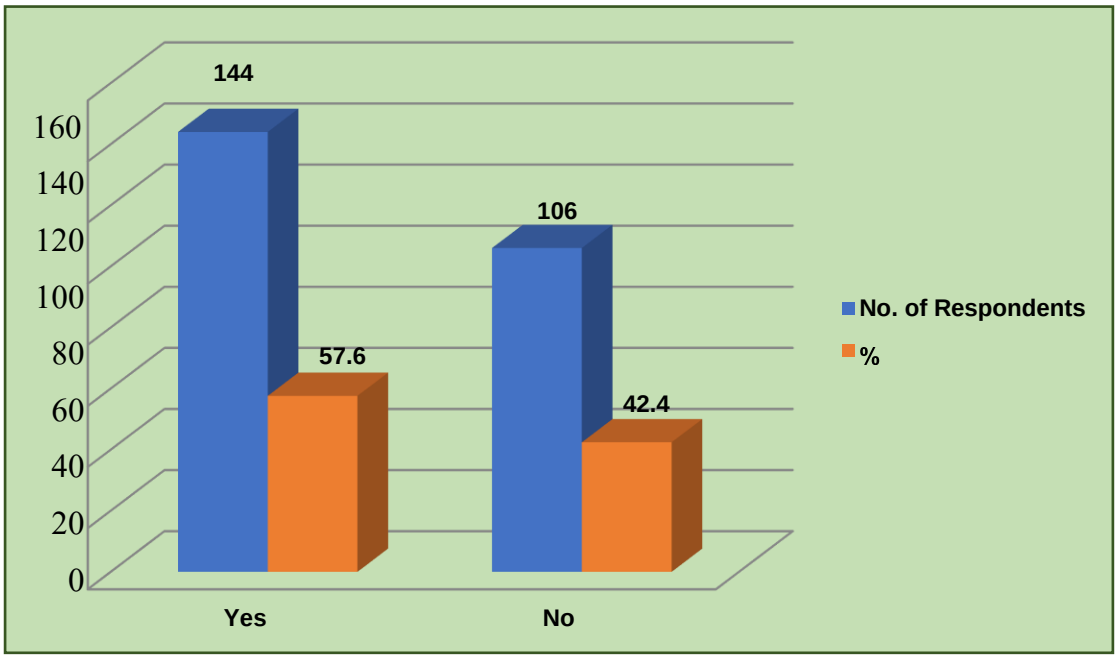

ग्राफ़ 5.62

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 57.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि वे शारीरिक क्षमता के अनुसार काम करते हैं और 42.4% उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं हैं कि वे शारीरिक क्षमता, कर्तव्य, सभी कार्य समय, कठिन और अधिक भार के अनुसार काम करते हैं।

तो, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 57.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि कर्तव्य शारीरिक क्षमता के अनुसार काम करते हैं, लेकिन अत्यधिक अनुशंसित हैं।

63. क्या आप परिवार और कर्तव्य के बीच समायोजन/समन्वय कर सकते हैं?

निम्नलिखित तालिका में हम कर्तव्य और परिवार में समायोजन का पता लगाते हैं चर्चा निम्न तालिका में -

तालिका सं. 5.63			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	153	61.2
2.	नहीं	97	38.8
	कुल	**250**	**100**

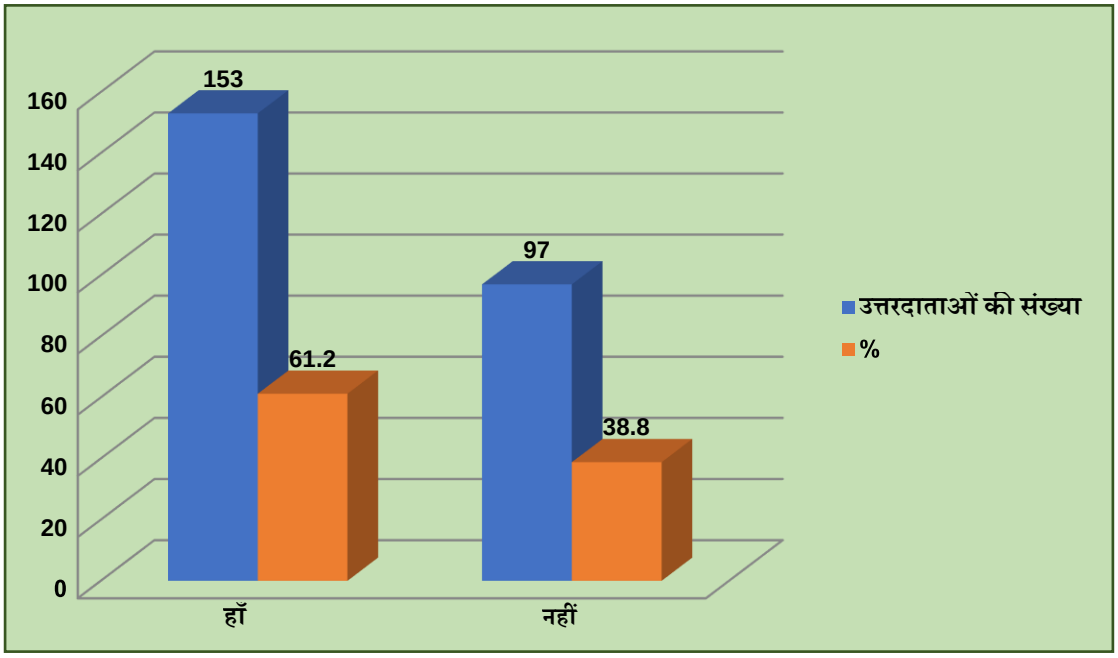

ग्राफ़ 5.63

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 61.2% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि वे परिवार और अपने कर्तव्य के बीच समन्वय रखते हैं।

केवल 38.8% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि वे कभी-कभी पारिवारिक प्राथमिकता और अपने कर्तव्य के बीच समायोजन नहीं करते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 76.5% कर्तव्य और पारिवारिक प्राथमिकता के बीच समन्वय रखने के लिए सहमत हैं।

64. क्या आपके परिवार के सदस्य आपके वेतन पर निर्भर हैं?

नीचे दी गई तालिका में हमने उत्तरदाताओं पर परिवार के अन्य सदस्यों की निर्भरता का विश्लेषण किया है -

तालिका सं. 5.64			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	145	52.5
2.	नहीं	95	47.5
	कुल	**250**	**100**

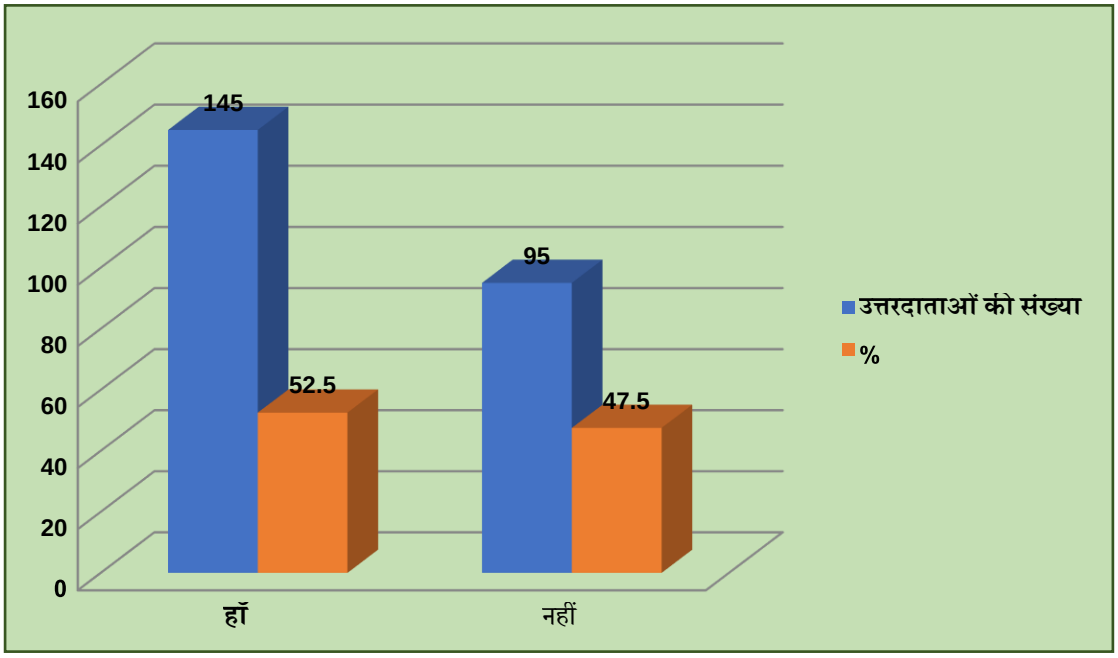

ग्राफ़ 5.64

उपर्युक्त तालिका से हमने विश्लेषण किया कि 52.5% उत्तरदाताओं की पारिवारिक आय का मुख्य स्रोत आय है और 47.5% उत्तरदाताओं का उत्तर है कि वे आर्थिक रूप से परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर नहीं हैं क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य भी उसी जूता उद्योग में काम कर रहे हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 52.5% अपने परिवार का समर्थन करते हैं, यह भी एक उदाहरण है लेकिन हमारी संस्कृति में पुरुष अन्य परिवार के सदस्यों पर अधिक निर्भर हैं

65. क्या आपके पड़ोसी/रिश्तेदारों की आपके बारे में अच्छी धारणा है?

नीचे दी गई तालिका में हम उत्तरदाताओं की अपने पड़ोसी और रिश्तेदारों के बारे में सामाजिक धारणा के बारे में विश्लेषण करते हैं -

तालिका सं. 5.65			
क्र.सं.	**उत्तरदाताओं की धारणा**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**%**
1.	हाँ	159	63.6
2.	नहीं	91	36.4
	कुल	**250**	**100**

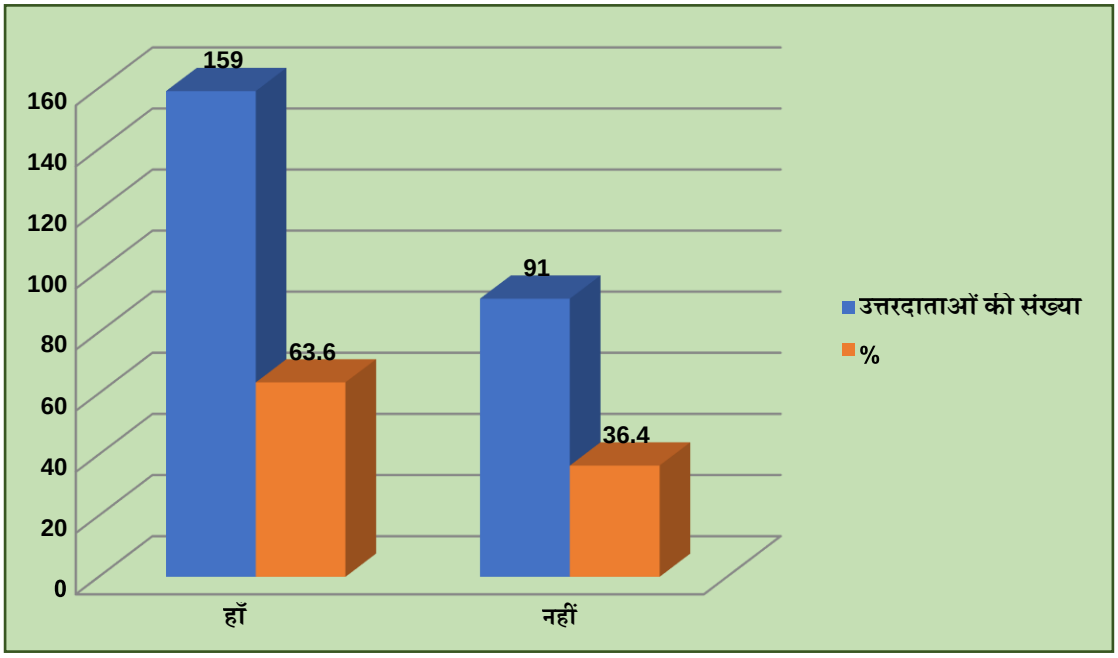

ग्राफ़ 5.65

उपर्युक्त डेटा से हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 63.6% उत्तरदाता सहमत हैं कि पड़ोसी और रिश्तेदारों की अच्छी धारणा है और 36.4% उत्तरदाता सहमत हैं कि अधिकांश रिश्तेदारों और पड़ोसियों की अच्छी धारणा नहीं है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं 63.6% उत्तरदाता सहमत हैं कि पड़ोसी।

अध्याय-6
निष्कर्ष

आगरा जूता उद्योग में काम का बड़ा हिस्सा बाल श्रम द्वारा संचालित है और यह काम के छिपे हुए रूप में है। बाल श्रम वर्तमान में बुराई है और इसे हर क्षेत्र जैसे कृषि, ढाबा, बीड़ी बनाने, डेयरी उद्योग के साथ-साथ जूता उद्योग में भी देखा जा सकता है। यह वर्तमान समय में बहुत हानिकारक है क्योंकि इससे उन बच्चों का भविष्य नष्ट हो जाता है जो बाल श्रम को रोकने के लिए अधिनियम बनाने के बावजूद बाल श्रमिक के रूप में काम कर रहे हैं, जो बच्चे की सुरक्षा के लिए जाना जाता है। बाल श्रम के मामले में महत्वपूर्ण कारक परिवार की संस्कृति है जो बच्चों को प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करने के लिए प्रेरित करती है। कई बार हम आर्थिक दृष्टिकोण से तुलना करते हैं कि पारिवारिक संरचना समाज में बाल श्रम को बढ़ाने का प्रमुख कारण है, परिवार में सौतेली माँ चाहती हैं कि बच्चा बाहर जाए और यह कमाई का एक अच्छा स्रोत होगा और यही इस मामले में बड़ी समस्या है, इसलिए कानून बनाना इस सामाजिक समस्या को रोकने के लिए प्रभावी नहीं है, इस समस्या के बारे में माता-पिता की जागरूकता का स्तर बढ़ रहा है। अधिकांश माता-पिता इसे एक समस्या के रूप में नहीं देखते हैं, लेकिन वे इसे कम उम्र में परिवार का समर्थन करने के लिए कमाई का माध्यम मानते हैं।

- आयु वर्ग के आधार पर विश्लेषण करने पर हमें पता चलता है कि जूता नगरी आगरा में, विशेष रूप से औद्योगिक क्षेत्र में, बाल श्रम के बारे में कोई भी साक्षात्कार करना अधिक कठिन है, क्योंकि अधिकांश कारखाना मालिक इस अधिनियम के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, जो बच्चों के लिए संरक्षित है, वे इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते कि वे बाल श्रम गतिविधियों में शामिल हैं। उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से, हम यह विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश बाल श्रमिक (48.8%) 10-13 वर्ष की आयु वर्ग के हैं।

- शोध कार्य के दौरान बातचीत के दौरान पाया गया कि बाल श्रम में शामिल लड़कियाँ अपने माता-पिता की देखरेख में बाल श्रम में शामिल हैं, जिनमें से अधिकांश माँ की देखरेख में हैं। बातचीत के दौरान हमने उनके सामने आने वाली कुछ आर्थिक समस्याओं पर भी चर्चा की, इसलिए वे इस क्षेत्र में

अपने माता-पिता के समर्थन के रूप में काम करने के लिए तैयार हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि इस अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता (64.4%) पुरुष हैं। कुछ उत्तरदाताओं ने जूता उद्योग के संबद्ध क्षेत्र में जीवित रहने के लिए आर्थिक उपयोग दिए हैं। बाल श्रम में शामिल अधिकांश लड़कियाँ लड़कों की तुलना में कम आयु की थीं, यह बात उत्तरदाताओं के साथ बातचीत के समय ध्यान में आई और धारणा थी कि कार्यस्थल पर लड़कियों के लिए सुरक्षा के मुद्दे हैं।

- इसलिए, हम यह पता लगा सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 74% अन्य अनुसूचित जाति से हैं। आवृत्ति अधिक है क्योंकि जूता उद्योग निचली जाति के लोगों के निवास के नज़दीक है, अधिकांश कार्यकर्ता एक या दो बाल मज़दूरों के साथ आते हैं क्योंकि यह परिवार की अतिरिक्त आय है और यह उद्योग मालिकों के लिए फ़ायदेमंद होगा। बाल मज़दूरी में शामिल होना रोज़गार की निकटतम उपलब्धता पर निर्भर करता है क्योंकि वे रोज़ाना महंगा खर्च नहीं उठा सकते हैं और सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह संभव नहीं होगा।

- इसलिए, उपरोक्त तालिका डेटा विश्लेषण से हम यह पता लगा सकते हैं। उत्तरदाताओं में से 69% हिंदू धर्म से संबंधित हैं। सामान्य तौर पर हम पाते हैं कि मुस्लिम बच्चों में बाल मजदूरी करने की आवृत्ति बहुत अधिक है, लेकिन वे स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। इस अध्ययन में मुस्लिम बाल श्रम हिंदू उत्तरदाताओं की तुलना में कम था। इस तथ्य के पीछे यह प्रमुख तथ्य था कि मुस्लिम बच्चे स्वतंत्र व्यवसाय और कुशल कार्य करना चाहते हैं, क्योंकि उनके व्यावसायिक संस्कृति के अनुसार दिशानिर्देश महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- इसलिए, हम उपरोक्त तालिका का विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 47.6% छोटे परिवार के आकार की पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। यह ध्यान देने योग्य तथ्य था कि अधिकांश बाल श्रमिक छोटे आकार के परिवार से संबंधित हैं। इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करके शोधकर्ता ने पाया कि सभी उत्तरदाता आगरा जिले के शहरी क्षेत्र के आस-पास के निवास से संबंधित हैं।

- इसलिए, हम आसानी से विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश 42% उत्तरदाता अशिक्षित शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। डेटा संग्रह के दौरान हमें पता चला कि शिक्षा के साथ-साथ बातचीत को सुरक्षित बनाने में सुधार होता है। जैसा कि हमने देखा कि बाल मजदूरों की शैक्षिक पृष्ठभूमि बहुत खराब है क्योंकि उन्हें सरकार की नीतियों के बारे में अच्छी तरह से पता नहीं था जो नैतिक और शैक्षणिक शिक्षा प्राप्त करने में मदद करती हैं। बाल मजदूरों का अधिकांश समय फैक्ट्री में काम करने में व्यतीत होता है और वे काम के समय उचित शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं और यह श्रमिक के लिए खुद और अपने परिवार का जीवन यापन करने के लिए आवश्यक है। कुछ बाल मजदूर अपनी शिक्षा के प्रति सजग थे और वे माता-पिता के मोबाइल, यूट्यूब और कोविड अवधि के दौरान विकसित अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की मदद से अपनी पढ़ाई जारी रखते हैं।

- इसलिए, हम उपरोक्त तालिका का विश्लेषण कर सकते हैं कि 88% उत्तरदाता माता-पिता नौकरी पाने और मजदूर के रूप में काम करने में कठिनाइयों का सामना करते हैं। उन्हें लगता है कि उनका बच्चा परिवार की आय में योगदान देता है, यह परिवार के सभी सदस्यों के लिए अच्छी बात है और वे बच्चे की शिक्षा और अन्य विकास के बारे में चिंतित नहीं थे।

- इसलिए, हम पाते हैं कि 92% उत्तरदाताओं के माता-पिता एक ही कार्यस्थल और अपने संबद्ध क्षेत्र में काम करते हैं और उत्तरदाता एक ही सेवा में अच्छा महसूस करते हैं। बालिकाओं के मामले में अधिकांश माताएँ उनके साथ काम करती हैं और वे सुरक्षा के दृष्टिकोण से काम के घंटों पर निगरानी रखती हैं।

- इसलिए, 88% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे सुरक्षा महसूस करते हैं और वे भविष्य और नौकरी की सुरक्षा के बारे में भी चिंतित हैं।

- इसलिए, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 54.4% उत्तरदाता रात की ड्यूटी करने के लिए सहमत हैं और उन्हें इस काम के लिए अतिरिक्त पैसे भी मिलते हैं, खासकर जब मालिक द्वारा सीमित समय में विशेष

ऑर्डर पूरा किया जाता है, विशेष पैसे ज्यादातर रात की ड्यूटी में दिए जाने वाले दिन के वेतन से दोगुने होते हैं और उन्हें जूता उद्योग के लिए सामान बनाने का काम मिल जाता है।

- इसलिए, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि 74% उत्तरदाता ड्यूटी के दौरान सुरक्षित महसूस करते हैं और उनके पास कार्यस्थल पर काम करने के लिए निश्चित समय होता है।

- इसलिए, हम कह सकते हैं कि 61.6% उत्तरदाताओं को अपना काम करते समय असुरक्षा महसूस नहीं होती है।

- इसलिए, हम कह सकते हैं कि केवल 5% उत्तरदाता सप्ताहांत की छुट्टी लेते हैं।

- इसलिए, हम पाते हैं कि 82.5% उत्तरदाता अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (60.8%) ने स्वतंत्र रूप से अपना काम चुना और वे किसी भी परिवार के सदस्य या अन्य लोगों के दबाव में नहीं थे। कई बार बच्चे परिवार के सक्रिय सदस्य बनना चाहते हैं।

- इसलिए, हम यह पता लगा सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (68.5%) ने अपनी वेतन स्थिति से सहमति और संतुष्टि व्यक्त की।

- कुछ लोग कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (50.5%) ने अपनी नौकरी से संतुष्टि व्यक्त की और पाया कि यदि उन्हें अवसर मिले तो वे अन्य क्षेत्रों में काम करने से सहमत नहीं थे।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (70%) ने 7 घंटे से अधिक समय तक काम किया।

- उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से अधिकांश 68.4% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि उनका अधिकारी व्यवहार बहुत अच्छा था।

- इसलिए, हम यह कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (60.4%) ने कार्यस्थल पर खतरा या डर महसूस किया।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (52%) ने अपनी ड्यूटी का समय लंबा महसूस किया।

- इसलिए, हम ऊपर दी गई तालिका से यह पता लगा सकते हैं कि 52.2% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उन्हें जब भी ज़रूरत हो छुट्टी लेना सुविधाजनक है

- बाल श्रम में संतुष्टि का स्तर पाया गया जो अपना समय परिवार के साथ बिताते हैं, उन्हें लगता है कि उन्हें अपने परिवार के साथ बिताने के लिए और अधिक समय की आवश्यकता है। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि केवल 44% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसर से संतुष्ट हैं।

- वे विकास के लिए उचित समय के बारे में सहमत नहीं थे, उत्तरदाताओं द्वारा अपनी ड्यूटी के दौरान पुस्तक पढ़ना संभव नहीं है, यह तब संभव हो सकता है जब वे छुट्टी लेते हैं। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि 54% उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि उन्हें अपने और अपने विकास के लिए समय मिलता है।

- इसलिए, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 62.5% उत्तरदाताओं ने काम पूरा किया है।

- इसलिए, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 54.4% उत्तरदाताओं के परिवार के तीन से अधिक सदस्य बाल श्रमिक के रूप में काम कर रहे हैं।

- अतः हम यह विश्लेषण कर सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (70.8%) ने स्वीकार किया कि उनके पास अधूरा घर है।

- उपरोक्त तालिका से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (68.4%) ने बाल श्रम से मुक्ति नहीं चाही।

- अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (40%) ने यह टिप्पणी की है।

- उनके पास परिवार के सदस्य हैं जो समय-समय पर उनके जीवन में उनकी मदद करते हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 82.8% परिवार की खराब आर्थिक स्थिति से सहमत हैं और यह उत्तरदाताओं के बीच बाल श्रम के प्रमुख कारणों में से एक है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 68.8% उत्तरदाताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि उनके परिवार पर कोई कर्ज नहीं है।

- इसलिए, हम उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 63.6% इस बात से सहमत हैं कि वे अपने माता-पिता से प्रेरित नहीं हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 78.8% इस बात से सहमत हैं कि कानून प्रभावी रूप से बाल श्रम को नहीं रोकता है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 74.4% इस बात से सहमत हैं कि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि बाल श्रम दंडनीय अपराध है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 87.6% को अपने वर्तमान कार्य में बाल श्रम की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता ...

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 66.8% उत्तरदाताओं को काम के दौरान शारीरिक समस्या होती है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 92% उत्तरदाता काम के दौरान कार्य के बारे में चिंतित रहते हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 63.6% ने माना कि उन्हें अपने काम में खतरा महसूस होता है।

- इसलिए, हम उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 78.8% ने माना कि उन्हें कार्यस्थल पर अपने वरिष्ठ का व्यवहार बुरा लगता है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 74.8% ने माना कि काम करने की स्थिति अच्छी है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 75.2% ने माना कि उत्तरदाताओं को काम के घंटों के दौरान मानसिक और शारीरिक दबाव महसूस होता है।

- इसलिए, हम कह सकते हैं कि 89.2% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर प्रतिकूल परिस्थितियों को महसूस किया।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (56% उत्तरदाताओं) ने उचित और पौष्टिक आहार लिया है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (72.4% उत्तरदाताओं) को लगता है कि काम जीवन के लिए आवश्यक नहीं है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (76% उत्तरदाताओं) को कार्यस्थल पर शारीरिक कमजोरी महसूस होती है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश 76.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उनके पास ड्यूटी शिफ्ट की सुविधा है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 78% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि वे कार्यस्थल पर और कार्यस्थल के बाहर किसी भी बुरी लत में शामिल नहीं हैं।

- शोध कार्य के दौरान बातचीत के अनुसार उत्तरदाताओं को इस प्रश्न के बारे में कोई सहजता नहीं है, वे जानकारी छिपाने की कोशिश करते हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 81.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार नहीं किया कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान गतिविधि में शामिल नहीं हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 73.2% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि वे कार्यस्थल पर तंबाकू चबाने में शामिल नहीं हैं।

- इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि 83.6% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर शराब पीने से इनकार किया।

- इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 80.4% उत्तरदाताओं में से ज़्यादातर इस बात से सहमत हैं कि वे कार्यस्थल पर धूम्रपान, चबाने, शराब पीने और अन्य गतिविधियों में शामिल नहीं हैं।

- इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 71.6% उत्तरदाता जूता उद्योग में काम करने के कारण बढ़ती आय के स्तर से सहमत हैं और वे वर्तमान समय में अपने माता-पिता का सहारा बन रहे हैं

- इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ज़्यादातर उत्तरदाताओं में से 59.6% उत्तरदाताओं ने सहमति जताई कि उनका काम उनके भाई-बहनों को शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है

- इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 87.6% उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं हैं कि उनकी स्वास्थ्य स्थिति बेहतर है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 55.6% उत्तरदाता परिवार में आर्थिक योगदान के कारण निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि से सहमत नहीं हैं।

- 31.6% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता पर निर्भरता कम होती हुई महसूस होती है और परिवार में निर्णय लेने की शक्ति में आय में वृद्धि होती है और 68.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता

पर निर्भरता कम होती हुई महसूस होती है और परिवार में निर्णय लेने की शक्ति में आय में वृद्धि होती है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि जूता उद्योग में काम करने के कारण उन्हें माता-पिता पर निर्भरता कम होती हुई महसूस होती है और परिवार में निर्णय लेने की शक्ति में आय में वृद्धि होती है।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार खराब था आदि।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि अन्य धारणा व्यवहार खराब था आदि।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने 67.2% उत्तरदाताओं ने समाज में सामना की जाने वाली सामाजिक कठिनाइयों के आधार पर।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 86.4% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वे सामाजिक अपमान महसूस करते हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (68% उत्तरदाताओं) ने इस बात पर सहमति जताई कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं।

- इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (54.8% उत्तरदाताओं) ने अपने परिवार के साथ विशेष अवसरों पर भाग नहीं लिया।

- ❖ इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 57.6% उत्तरदाताओं ने सहमति जताई कि ड्यूटी शारीरिक क्षमता के अनुसार काम करती है, लेकिन अत्यधिक अनुशंसा की जाती है।

- ❖ इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (76.5% उत्तरदाताओं) ने ड्यूटी और पारिवारिक प्राथमिकता के बीच अच्छे समन्वय से सहमति जताई।

- ❖ इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 52.5% उत्तरदाताओं ने अपने परिवार को समर्थन दिया, यह भी एक उदाहरण है, लेकिन हमारी संस्कृति में पुरुष परिवार के अन्य सदस्यों पर अधिक निर्भर हैं

- ❖ इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं (63.6% उत्तरदाताओं) ने सहमति जताई कि पड़ोसी।

वर्तमान अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष उपर्युक्त अध्ययन का समर्थन करते हैं। बाल श्रम को समाप्त करने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं –

- ❖ श्रम के शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना होगा और बच्चों को यह बताना होगा कि बाल श्रम उनके लिए बहुत खतरनाक है। बच्चों को यह बताना होगा कि बाल श्रम उनके शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है। हमें बच्चों के माता-पिता को भी बाल श्रम के बारे में जागरूक करना होगा। बच्चों को कोई खेल खिलाएंगे और उन्हें समझाएंगे कि बाल श्रम से उनके बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है।

- ❖ इसके अलावा बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना होगा और उन्हें यह समझाना होगा कि शिक्षा के माध्यम से वे अपना जीवन बेहतर बना सकते हैं। बच्चों को शिक्षा से संबंधित उनके अधिकारों के बारे में भी जागरूक करना चाहिए। शिक्षण-अधिगम सामग्री के माध्यम से शिक्षा को रोचक बनाना होगा, ताकि बच्चा शिक्षा को बोझ न समझे और शिक्षा प्राप्त करने में रुचि दिखाए। शिक्षा को सुलभ

और किफायती बनाना होगा, ताकि सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकें। बच्चों के माता-पिता को भी अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

- इसके अलावा सरकार द्वारा गरीब बच्चों और परिवारों के लिए चलाई जा रही योजनाओं और कार्यक्रमों में भ्रष्टाचार को खत्म करना होगा, ताकि इन योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ सीधे जरूरतमंद व्यक्तियों को मिल सके।

- इसके अलावा बाल श्रम के खिलाफ बनाई गई सरकारी नीतियों और कानूनों के क्रियान्वयन में भी सुधार करना होगा। बाल श्रम कानूनों का सख्ती से पालन करना होगा और इन नियमों का पालन न करने वालों को कड़ी सजा देनी होगी। बाल श्रम को रोकने के लिए सरकार को अधिक रोजगार उपलब्ध कराने होंगे, ताकि गरीब माता-पिता अपने बच्चों से बाल श्रम न करवाएं। बाल श्रम को रोकने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि पूरी दुनिया के सभी देशों को मिलकर काम करना होगा।

बाल श्रम पूरी दुनिया में एक समस्या बनी हुई है। इसकी चपेट में दुनिया के कई बच्चे आते हैं। बाल श्रम बच्चों द्वारा अपनी बुनियादी जरूरतों और जीवन यापन के लिए किया जाने वाला काम है। बाल श्रम एक बच्चे द्वारा अपने और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए किया जाने वाला काम है। आज के समय में बाल श्रम बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बाल श्रम ज्यादातर गरीब और अनाथ बच्चों से करवाया जाता है। बढ़ती जनसंख्या, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी और विभिन्न बीमारियों आदि के कारण बच्चे बाल मजदूरी करने को मजबूर हैं। बच्चे विभिन्न प्रकार के खतरनाक उद्योगों में काम करते हैं जैसे रासायनिक उद्योग, पेट्रोलियम उद्योग, बीड़ी बनाने का कारखाना, चूड़ी बनाने का कारखाना, कांच बनाने का उद्योग और विभिन्न प्रकार के खतरनाक उद्योग। पटाखा बनाने के कारखाने आदि। इन उद्योगों और कारखानों में प्रतिदिन अंधेरे, गंदे, गर्म वातावरण, अप्राकृतिक और अमानवीय परिस्थितियों में बच्चे पैदा होते हैं। इन स्थानों पर बच्चों की किसी भी प्रकार की सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं है और न ही किसी प्रकार की चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। बाल श्रमिकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खतरनाक क्षेत्रों में काम करना हमेशा बच्चों की सुरक्षा के लिए एक समस्या बनी रहती है। बच्चों को गंदे, धूल भरे वातावरण और सभी मौसमों जैसे गर्मी, सर्दी, बारिश

और धूप में काम करने के लिए बुलाया जाता है। इन बच्चों द्वारा गंदे वातावरण और खतरनाक परिस्थितियों में काम करने से कई भयानक शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ होती हैं जैसे कैंसर, टीबी, फेफड़ों के रोग, आँखों के रोग, हाथों के चर्म रोग आदि। बच्चों का शरीर बहुत कोमल और नाजुक होता है, इसलिए वे किसी भी बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं। बाल मजदूरी बच्चे के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को अवरुद्ध करती है।

संदर्भ सूची

1. **दीक्षित, रामेश्वर.** (2018). *बाल श्रम: एक सामाजिक समस्या*. नई दिल्ली: समाज विज्ञान प्रकाशन.

2. **शर्मा, सीमा.** (2020). "भारत में बाल श्रम: एक आर्थिक और सामाजिक विश्लेषण". *भारतीय सामाजिक विज्ञान जर्नल*, 15(2), 45-60.

3. **भारत सरकार.** (2019). *बाल श्रम की स्थिति पर राष्ट्रीय रिपोर्ट*. नई दिल्ली: श्रम एवं रोजगार मंत्रालय.

4. **विश्व बैंक.** (2021). *बाल श्रम पर वैश्विक रिपोर्ट*. वॉशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक प्रेस.

5. **खंडेलवाल, सुमन.** (2017). "आगरा में जूता उद्योग और बाल श्रम: एक क्षेत्रीय अध्ययन". *आधुनिक सामाजिक अनुसंधान*, 8(1), 77-89.

6. **गुप्ता, राजेश.** (2015). *सामाजिक दुर्व्यवहार: सिद्धांत और वास्तविकता*. मुंबई: सामाजिक अध्ययन प्रकाशन.

7. **दैनिक जागरण.** (2023). "आगरा का जूता उद्योग: बाल श्रम का अंधेरा पक्ष". 15 जनवरी.

8. **चंदेल, प्रिया.** (2022). *बाल श्रम के विरुद्ध सामाजिक जागरूकता: एक केस स्टडी*. आगरा: लोक कल्याण संस्थान.

9. **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO).** (2022). *भारत में बाल श्रम की स्थिति: चुनौतियाँ और अवसर*. जेनेवा: ILO.

10. **रावत, मोहन.** (2019). "बाल श्रम और तकनीकी विकास: एक नई दिशा". *शोध पत्रिका*, 12(3), 112-120.

11. आचार्य, रजत (2006), 'अगर तुम भविष्य में मेरी देखभाल करोगे, तो क्या मैं तुम्हें अभी स्कूल भेजूंगा? वैश्वीकृत दुनिया में स्वार्थी माता-पिता,' माइमियो: जादवपुर विश्वविद्यालय।

12. एडमासी, ए. (2002), 'उप-सहारा अफ्रीका में बाल श्रम की उच्च घटनाओं की खोज', अफ्रीकी विकास समीक्षा, खंड 14, 251-75।

13. एंडविग, जे. (2000), 'उप-सहारा अफ्रीका में बाल श्रम पर एक निबंध - एक सौदेबाजी दृष्टिकोण', माइमियो: विश्व बैंक।`

14. एंकर, आर., बार्ज, एस., राजगोपाल, एस. और जोसेफ, एम.पी. (संपादक) (1998), भारत के खतरनाक उद्योगों में बाल श्रम का अर्थशास्त्र, नई दिल्ली: हिंदुस्तान प्रकाशक।

15. एंटोनीराज, सी (2002), 'भारत में बाल श्रम: "दृश्यमान विद्यालय-विहीनता" और "अदृश्य कार्य",' पीएच.डी. थीसिस, मद्रास विश्वविद्यालय।

16. आशागरी, के. (1997), कामकाजी बच्चों और खतरनाक बाल श्रम पर सांख्यिकी संक्षेप में, जिनेवा: अंतर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय।

17. असद, आर., लेविसन, डी. और जिबानी, एन. (2003), 'मिस्र में स्कूली शिक्षा पर बाल श्रम का प्रभाव,' पांडुलिपि, मिनेसोटा विश्वविद्यालय।

18. बचमैन, एस.एल. (2000), 'बाल श्रम की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर इसका प्रभाव,' व्यवसाय अर्थशास्त्र, खंड 35।

19. बेकोलोड, मैरीगी पी., और रंजन, प्रिया (2004), 'बच्चे क्यों काम करते हैं, स्कूल जाते हैं, या बेकार रहते हैं: सिद्धांत और साक्ष्य,' माइमियो: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, इरविन।

20. बैगवेल, के. और स्टैगर, आर. (2000), 'श्रम मानकों और GATT का सरल अर्थशास्त्र,' डियरडॉर्फ, ए.वी. और स्टर्न, आर.एम. (संपादक) यू.एस. व्यापार नीति के सामाजिक आयाम, एन आर्बर: यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस।

21. बालैंड, जे.-एम., और रॉबिन्सन, जे. (2000), 'बाल श्रम का एक मॉडल,' जर्नल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी, खंड 108।

22. बैंडो, आर., लोपेज़-कैल्वा, एल.एफ. और पैट्रिनोस, एच.ए., 'बाल श्रम, स्कूल उपस्थिति, और स्वदेशी परिवार: मेक्सिको से साक्ष्य', पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर्स, डब्ल्यूपीएस 3487, विश्व बैंक।

23. बंद्योपाध्याय, सुभायु, और बंद्योपाध्याय, सुदेशना (2003)। 'व्यापार और बाल श्रम: एक सामान्य संतुलन विश्लेषण,' माइमियो: वेस्ट वर्जीनिया विश्वविद्यालय।

24. बासु, अलका (1993), 'शहरी झुग्गी-झोपड़ी में परिवार का आकार और बाल कल्याण: गरीब लेकिन आधुनिक होने के कुछ नुकसान', लॉयड, सी. (संपादक), प्रजनन क्षमता, परिवार का आकार और संरचना, न्यूयॉर्क: जनसंख्या परिषद।

25. बासु, अर्नब और चौ, एन. (2003), 'ऋण बंधन में बाल श्रम को लक्षित करना: साक्ष्य, सिद्धांत और नीतिगत निहितार्थ', विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा, खंड 1 17, नंबर 2. बसु, अर्नब, चाऊ, एन. और ग्रोट, यू. (2000), 'बाल श्रम के बिना निर्मित गारंटी,' वर्किंग पेपर 2000-2004, एप्लाइड इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट विभाग, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी।

26. बसु, के. (2006), एल.एफ. लोपेज़-काल्वा (संस्करण) में 'कॉजेज कॉन्सेक्यूएन्सियास वाई सॉल्यूसिओनेस: ऑब्जर्वैंसिओनेस डी लास नोर्मस लेबरेल्स', ट्रैबाजो इन्फेंटिल: टेओरिया वाई लेसिओनेस डी ला अमेरिका लैटिना, मेक्सिको सिटी: फोंडो डी कल्टुरा इकोनोमिका [जर्नल ऑफ इकोनॉमिक लिटरेचर, 1999 में पेपर का स्पेनिश अनुवाद]।

27. बसु, के. (2000), 'वयस्क न्यूनतम वेतन और बाल श्रम के बीच दिलचस्प संबंध', इकोनॉमिक जर्नल, खंड 110।

28. बसु, के. (2001), 'कॉम्पैक्ट्स, कन्वेंशन और कोड: उच्च अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानकों के लिए पहल', कॉर्नेल इंटरनेशनल लॉ जर्नल, खंड 34।

29. बसु, के. (2002), 'बाल श्रम के साथ कई सामान्य संतुलन पर एक नोट', इकोनॉमिक्स लेटर्स, खंड 110। 74.

30. बसु, के. (2003), 'बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए नीतिगत दुविधाएँ,' सीएई वर्किंग पेपर नंबर 03-17, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी।

31. बसु, के. (2003), 'बाल श्रम का अर्थशास्त्र,' साइंटिफिक अमेरिकन, अक्टूबर, खंड 289, संख्या 4।

32. बसु, के. (2005), 'बाल श्रम और कानून: संभावित विकृतियों पर नोट्स,' इकोनॉमिक्स लेटर्स, खंड 87, 169-174।

33. बसु, के. (2005), बाल श्रम को नियंत्रित करने के लिए नीतिगत दुविधाएँ, ए. बनर्जी, आर. बेनाबौ और डी. मुखर्जी (संपादक), गरीबी के बारे में हमने क्या सीखा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, आगामी।

34. बसु, के. (2005), 'वैश्विक श्रम मानक और स्थानीय स्वतंत्रता,' यूएनयू-वाइडर (सं.), वाइडर पर्सपेक्टिव्स ऑन ग्लोबल डेवलपमेंट, पालग्रेव मैकमिलन, 2005 में।

35. बसु, के., हॉर्न, एच., रोमन, एल. और शापिरो, जे. (सं.), अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानक: इतिहास, सिद्धांत और नीति, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवेल प्रकाशक।

36. बसु, के. और तज़न्नाटोस, जेड. (2003), 'वैश्विक बाल श्रम समस्या: हम क्या जानते हैं और हम क्या कर सकते हैं?' विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा, खंड 17, संख्या 2।

37. बीगल, के., देहेजिया, आर.एच. और गट्टी, आर. (2 003), 'बाल श्रम, फसल आघात और ऋण बाधाएँ,' एनबीईआर वर्किंग पेपर नंबर 10088।

38. बीगल, के., देहेजिया, आर.एच. और गट्टी, आर. (2004), 'बाल श्रम के शिक्षा, श्रम बाजार और स्वास्थ्य परिणाम,' पांडुलिपि, कोलंबिया विश्वविद्यालय।

39. बेहरमैन, जे.आर., फोस्टर, ए.डी., रोसेनज़वेग, एम.आर. और वशिष्ठ, पी. (1999), 'महिलाओं की स्कूली शिक्षा, घर पर पढ़ाना और आर्थिक विकास', जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल इकोनॉमी, खंड 107।

40. बेल, सी. और गेर्सबैक, एच. (2001), 'बाल श्रम और समाज की शिक्षा', माइमियो: सुदासियन इंस्टीट्यूट, हीडलबर्ग।

41. भगवती, जे. (1995), 'व्यापार उदारीकरण और 'निष्पक्ष व्यापार' की मांग: पर्यावरण और श्रम मानकों के मुद्दों को संबोधित करना', विश्व अर्थव्यवस्था, खंड 18.

42. भगवती, जे. और हुडेक, आर., संपादक (1996), निष्पक्ष व्यापार और सामंजस्य, खंड 1: आर्थिक विश्लेषण, कैम्ब्रिज, एमए: एमआईटी प्रेस.

43. भालोत्रा, एस. (2000), 'क्या बाल श्रम आवश्यक है?' माइमियो: लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स.

44. भालोत्रा, एस. और हेडी, सी. (2003), 'बाल कृषि श्रम: धन विरोधाभास', विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा, खंड 1 17, सं. 2.

45. भालोत्रा, एस. और तज़न्नाटोस, जेड. (2002), 'बाल श्रम: हमने क्या सीखा?', सामाजिक सुरक्षा चर्चा पत्र सं. 0234, विश्व बैंक।

46. भास्कर, वी. और गुप्ता, बिष्णुप्रिया (2005), 'क्या अमेरिकी माता-पिता वास्तव में स्वार्थी थे? 19वीं शताब्दी में बाल श्रम की पुनः जांच,' माइमियो, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन।

47. बूजर, एम. और सूरी, टी. (2001), 'घाना में बाल श्रम और स्कूली शिक्षा के निर्णय,' पांडुलिपि, येल विश्वविद्यालय।

48. बोरगुइग्नन, एफ., फेरेरा, एफ.एच.जी. और लेइट, पी.जी. (2003), 'सशर्त नकद हस्तांतरण, स्कूली शिक्षा और बाल श्रम: ब्राजील के बोल्सा एस्कोला कार्यक्रम का सूक्ष्म अनुकरण', विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा, खंड 17, संख्या 2.

49. ब्राउन, डी. (2000), 'अंतर्राष्ट्रीय बाल श्रम मानकों का एक लेन-देन लागत राजनीति विश्लेषण, डियरडॉर्फ, ए. और स्टर्न, आर. (संपादक), अमेरिकी व्यापार नीति के सामाजिक आयाम, एन आर्बर: मिशिगन विश्वविद्यालय प्रेस।

50. ब्राउन, डी. डियरडॉर्फ, ए., स्टर्न, आर. (2002), 'बाल श्रम: सिद्धांत, साक्ष्य और नीति', बसु, के., हॉर्न, एच., रोमन, एल., और शापिरो, जे. (संपादक), अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानक: इतिहास, सिद्धांत और नीति, ब्लैकवेल, आगामी।

51. बुर्रा, एन. (1997), बॉर्न टू वर्क: चाइल्ड लेबर इन इंडिया, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

52. कैनागराजा, एस. और कूलोम्बे, एस. (1997), 'घाना में बाल श्रम और स्कूली शिक्षा', विश्व बैंक, नीति अनुसंधान कार्य पत्र संख्या 1834।

53. कैनाल्स-सेरडा, जे. और रिदाओ-कैनो, सी. (2004), 'ग्रामीण बांग्लादेश में स्कूल और काम की गतिशीलता,' विश्व बैंक नीति अनुसंधान कार्य पत्र #3330।

54. कार्डोसो, एलियाना और सूजा, ए.पी. (2004), 'ब्राजील में बाल श्रम और स्कूल में उपस्थिति पर नकद हस्तांतरण का प्रभाव,' वेंडरबिल्ट विश्वविद्यालय, wp संख्या 04-w07।

55. चमारबागवाला, आर. (2006), 'भारत में बाल श्रम और स्कूली शिक्षा में सामाजिक मानदंडों की भूमिका: एक पदानुक्रमित मॉडल।'

56. चंद्रशेखर, सी.पी. (1997), 'बाल श्रम उन्मूलन के आर्थिक परिणाम: एक भारतीय केस स्टडी,' जर्नल ऑफ पीजेंट स्टडीज, खंड 24.

57. टेक्सेरा, पी.एन. गैरी बेकर का मानव पूंजी पर प्रारंभिक कार्य - सहयोग और विशिष्टता। आईजेडए जे लेबर इकॉन 3, 12 (2014).

58. बरुआ, एस. एल. "पड़ोसी पहाड़ी जनजातियों के प्रति अहोम नीति।" भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 38, 1977, पृ. 249-56। .

59. कोटलर, फिलिप, और रवि सिंह। "1980 के दशक में विपणन युद्ध।" जर्नल ऑफ बिजनेस स्ट्रैटेजी 1, संख्या 3 (1981): 30।.

60. सिंह, मुसाफर, वी.डी. कुर्वा और खान.एस.ए. (1980), 'भारतीय बच्चे काम क्यों करते हैं और क्या यह उनके लिए बुरा है?' माइमियो: फ्लोरेंस विश्वविद्यालय।

61. सिंह, आर., जेड. (1980), बाल श्रम पुस्तिका, वाशिंगटन: विश्व बैंक।

62. शर्मा, एस. (1982) https://indiankanoon.org/doc/127916/

63. त्रिपाठी, एन. (1991), 'बाल श्रम से परहेज और लाभ की तलाश', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, खंड 76।

64. पांडे, राजेंद्र (1991), 'बाल श्रम और स्कूल उपस्थिति के निर्धारक: घरेलू अन अवलोकनीय।' माइमियो: आईयूपीयूआई।

65. पणिक्कर, रीता और नांगिया, प्रवीण (1992), https://www.indiadonates.org/ngos/jamghat--a-group-of-street-children

66. डी. लीमा, हेज़ल और रीमा, गोरालिया (1992)), 'बाल श्रम के विरुद्ध बाध्यकारी उपायों का बचाव', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, खंड 62, 261-75।

67. लोरी श्मिट, मराठा फ्रेंडली, जेन बीच (1993), 'बाल श्रम और समन्वय विफलताएँ', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, खंड 65।

68. बदीवाला, मितेश (1996), 'बाल श्रम के सबसे बुरे रूपों पर प्रतिबंध क्यों लगाया जाए', माइमियो: यूनिवर्सिटी लावल, कनाडा।

69. सनन, चंद्र गुप्ता एस (1998), 'बाल श्रम के सबसे बुरे रूपों का सिद्धांत', आर्थिक पत्रिका, खंड 115, 68-87.

70. पाटिल, बी.आर. (1998), 'वैश्वीकरण, बाल श्रम और दक्षता मजदूरी', माइमियो: फ्लोरिया विश्वविद्यालय।

71. बालहोत्रा, सोनिया (2000)'अंतर्राष्ट्रीय बाल श्रम मानकों के लेन-देन लागत राजनीति विश्लेषण पर टिप्पणी', डियरडॉर्फ, ए.वी. और स्टर्न, आर.एम. (संपादक) यू.एस. व्यापार नीति के सामाजिक आयाम, एन आर्बर: मिशिगन विश्वविद्यालय प्रेस।

72. डोनेल, ओ और रोसाती, (2000), 'अपने बच्चों के साथ मतदान: बाल श्रम कानूनों का सकारात्मक विश्लेषण', माइमियो: लॉस एंजिल्स में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय।

73. एनली, गटसफसन, राइट (2002), 'ग्रामीण भारत में स्कूल भागीदारी', लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, विकास अर्थशास्त्र चर्चा पत्र संख्या 18.

74. भालोत्रा सोनिया (2003), 'इंडोनेशिया में स्कूल निर्माण के स्कूली शिक्षा और श्रम बाजार परिणाम: एक असामान्य नीति प्रयोग से साक्ष्य,' अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू, खंड 91.

75. फ्रेजर एलिजाबेथ (2005), 'ब्राजील में बच्चों के रोजगार और स्कूली शिक्षा पर आर्थिक झटकों का प्रभाव,' जनसंख्या अध्ययन केंद्र अनुसंधान रिपोर्ट 03-541, दिसंबर, मिशिगन विश्वविद्यालय.

76. पटेल, एन. हितेश कुमार (2005), 'दक्षिण अफ्रीका में प्रत्याशित आय के लिए बाल श्रम और स्कूली शिक्षा प्रतिक्रियाएँ,' जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, आगामी.

77. शोल्टेन, वर्नर (2005), 'क्या जीवन स्तर में सुधार के साथ बाल श्रम में कमी आएगी?', डार्टमाउथ कॉलेज वर्किंग पेपर # 01-09।

78. एडमंड्स वी. एरिक (2007), 'क्या हमें बाल श्रम का बहिष्कार करना चाहिए?' एथिक इकोनॉमिक/एथिक्स एंड इकोनॉमिक्स, खंड 1

79. सकुराई रिहो (2006), 'दक्षिण एशिया में बाल श्रम,' ओईसीडी सामाजिक, रोजगार और प्रवास कार्य पत्र संख्या 5, पेरिस।

80. पटेल, एन. हितेश कुमार (2006), 'क्या तरलता की कमी बाल श्रम और स्कूली शिक्षा के निर्णयों को बदल देती है? दक्षिण अफ्रीका में प्रत्याशित नकद हस्तांतरण के लिए घरेलू प्रतिक्रियाओं से साक्ष्य,' एनबीईआर वर्किंग पेपर संख्या 10265, फरवरी।

81. चौधरी, सरबजीत और द्विवेदी, जयंत कुमार (2006), 'क्या आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ बाल श्रम में कमी आती है?' जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज, आगामी।

82. मोहम्मद, आर. रॉबर्ट्स अल्बर्ट (2006), 'क्या वैश्वीकरण बाल श्रम को बढ़ाता है? वियतनाम से साक्ष्य,' एनबीईआर वर्किंग पेपर #W8760।

83. द्विवेदी, जयंत कुमार और चौधरी, सरबजीत (2007), 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और बाल श्रम: क्रॉस-कंट्री साक्ष्य,' एनबीईआर वर्किंग पेपर नंबर 10317।

84. एलम, अताले, जिराफ़, अबाबिक ज़र्गा, केबेडे, डेरेज, अराया, मेसफिन और अन्य (2007), 'बाल श्रम पर व्यापार उदारीकरण का प्रभाव,' जर्नल ऑफ इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स, आगामी।

85. देवी, के. और रॉय, गौतम (2008), 'वैश्विक अर्थव्यवस्था में बाल श्रम,' जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स, खंड 19, संख्या 1।

86. भारती, प्रेमानंद, चक्रवर्ती, सुमन, बनर्जी, पृथ्वीविश, वसुलु, टीएस और बनर्जी, एसआर (2008), 'बंधन के प्रति संवेदनशील बच्चों में निवेश,' पांडुलिपि, डार्टमाउथ कॉलेज।

87. दलाल के, रहमान एफ, जैनसन बी. भारत में बाल मजदूरों के बीच हिंसक व्यवहार की उत्पत्ति। ग्लोब पब्लिक हेल्थ। 2008;3(1):77-92. doi: 10.1080/17441690701238114. PMID: 19288361..

88. कंभमपति, उमा. (2009)। भारत में बच्चों की स्कूली शिक्षा और कार्य संबंधी निर्णय: घरेलू और क्षेत्रीय लैंगिक समानता की भूमिका। नारीवादी अर्थशास्त्र, 15(4), https://doi.org/10.1080/13545700903153997.

89. हाशिमज़ादे निगार और कंबम्पति, उमा (2010), बाल श्रम में वृद्धि और उल्टा यू: एक दोहरी अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण," अर्थशास्त्र चर्चा पत्र em-dp2009-07, अर्थशास्त्र विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग।.

90. बानिक, अरिंदम और नियोगी, देबाशीष, गरीबी और परिवार के लिए कमाई की मजबूरी ने आदिवासी बच्चों को स्कूलों से बाहर धकेल दिया: पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा स्तर पर ड्रॉपआउट अध्ययन (15 फरवरी, 2011)। SSRN पर उपलब्ध: https://ssrn.com/abstract=1762211.

91. खानम, रशीदा और रहमान, मोहम्मद (2012)। बाल श्रम: वैश्वीकरण के प्रभाव। जर्नल ऑफ एप्लाइड बिजनेस एंड इकोनॉमिक्स।

92. लिमये, सुदीप और पांडे, मिलिंद (2013)। भारत में बाल श्रम का एक अध्ययन - परिमाण और चुनौतियाँ। 10.13140/RG.2.1.1328.9202। ।

93. जैदी, नोशीन, नजमा जावेद, और मुहम्मद शोएब खान। 2013. "पाकिस्तान में बाल श्रम - एक हिमखंड का सिरा"। जर्नल ऑफ पोस्टग्रेजुएट मेडिकल इंस्टीट्यूट 27 (3)। https://jpmi.org.pk/index.php/jpmi/article/view/1386।

94. बोनल, माइकल. (2014). बाल श्रम का 'सुधार', 'एक मामूली प्रस्ताव'. जर्नल ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट. 24. 616-637. 10.1080/09638199.2014.950685.

95. मोहम्मद, इमानु समेह, एविस, अशरफ अब्देल अजीम और महफूज, इमानु मोहम्मद (2014): लिंगन विश्वविद्यालय, हांगकांग।

96. वेबबिंक, एलेन और स्मिट्स, जेरोन और डी जोंग, एल्के। (2015)। अफ्रीका और एशिया में बाल श्रम: 16 निम्न आय वाले देशों में युवा बच्चों द्वारा वेतनभोगी श्रम में काम किए गए घंटों के घरेलू और संदर्भ निर्धारक। यूरोपियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च। 27. 84-98। 10.1057/ejdr.2014.19।

97. श्रीमाली, राजेश्वरी और किसान, मयूरी। (2015)। गुजरात राज्य में बाल श्रम पर एक अध्ययन (गुजरात राज्य के 2 ब्लॉकों पर विचार करते हुए)।

98. अल्फ़ा, अब्दुलमुमिनी बाबा और करीम, मोहम्मद ज़ैनी अब्द. (2016)। नाइजर राज्य, नाइजीरिया के ग्रामीण क्षेत्रों में बाल श्रम और प्रदर्शन का सिर के साथ बच्चे के रिश्ते पर प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक्स एंड फ़ाइनेंशियल इश्यूज़। 6. 892-900।

99. जुबैदा ज़फ़र, इसरा सरवर और सैयद इमरान हैदर, (2016), बाल श्रम के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारण: पाकिस्तान का मामला, वैश्विक राजनीतिक समीक्षा, 1, (1), 32-43.

100. हसजेलिना बंटी अबांग अली, दयांग और अरबशेबानी, जी. रेजा (2016) "इंडोनेशिया में बाल श्रम: आपूर्ति-पक्ष निर्धारक," इंडोनेशिया में अर्थशास्त्र और वित्त: खंड 62: संख्या 3, अनुच्छेद 4.DOI: 10.47291/efi.v62i3.555 उपलब्ध: https://scholarrhub.ui.ac.id/efi/vol62/iss3/4.

101. अब्दुल्लाही, आई.आई., नूर, जेड.एम., सईद, आर., और बहारमशाह, ए.जेड. (2016)। क्या गरीबी विकासशील देशों में बाल श्रम के प्रचलन को प्रभावित करती है? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंशियल इश्यूज, 6(1), 7–12

102. अब-रहीम आर, तारिक बी. बाल श्रम पर व्यापार का प्रभाव: चयनित सार्क और आसियान देशों से साक्ष्य। जर्नल ऑफ इंडोनेशियाई अर्थव्यवस्था और व्यापार। 2017 जनवरी 1;32(1)।

103. अशफाक ए, अली आर, हबीबा यू, अशफाक एम. पाकिस्तान में बाल श्रम: बच्चों के स्वास्थ्य पर परिणाम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमन राइट्स एंड कॉन्स्टीट्यूशनल स्टडीज। 2017;5(1):82-90।

104. बसु के. बाल श्रम और शिक्षा पर नोट्स: एक व्यक्तिगत वक्तव्य। बच्चे और सतत विकास: वैश्वीकृत दुनिया में पारिस्थितिक शिक्षा। 2017:31-5.

105. मखदूम, तैय्यबा और नवाज, मुहम्मद और पटोली, अब्दुल कादिर और खट्टी, इलमदीन। (2017)। व्यवसाय में बाल श्रम का उपयोग: क्या यह शोषण या रोजगार है?

106. दाश बी.एम., प्रसाद एल., दत्ता एम. भारत में बाल श्रम के जनसांख्यिकीय रुझान: नीति सुधारों के लिए निहितार्थ। ग्लोबल बिजनेस रिव्यू। 2018 अक्टूबर;19(5):1345-62.

107. हामेनू ईएस, द्वोमोह ईए, डाको-ग्यके एम. घाना में बाल श्रम: बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव। बच्चों और युवा सेवाओं की समीक्षा। 2018 अक्टूबर 1;93:248-54।.

108. इब्राहिम ए, अब्दुल्ला एसएम, जाफर एम, अब्देलगादिर जे, डे व्रीस एन. बाल श्रम और स्वास्थ्य: निम्न और मध्यम आय वाले देशों में बाल श्रम के बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ। 2019 मार्च 1;41(1):18-26।

109. सी., चित्रा (2018), 'बाल श्रमिक का वेतन निर्धारण: एक सैद्धांतिक विश्लेषण', विकास अर्थशास्त्र की समीक्षा, खंड 4

110. अल्फा, अब्दुलमुमिनी बाबा और करीम, मोहम्मद, ज़ैनिक अब्द (2018), बाल श्रम, नाइजर राज्य, नाइजीरिया में सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालयों की दक्षता का प्रदर्शन: आईएलओ, यूनिसेफ और विश्व बैंक समूह।

111. काकर, बशीर अहमद, आलम, मुहम्मद और वदूद, अब्दुल (2019), बाल विवाह की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण और कारक" पाकिस्तान में श्रम - एक खोजपूर्ण शोध ', आर्थिक पत्रिका, 31(1):28-36। ।

112. आहूजा डी, कल्पना बी. बाल श्रम की व्यवहारिक कठिनाइयाँ-दिल्ली की मलिन बस्तियों में स्कूल जाने वाले और काम करने वाले बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ़ एडवांस रिसर्च इन डायनेमिकल एंड कंट्रोल सिस्टम। 2019;11(7)। ।

113. लाल बी.एस. भारत में बाल श्रम: कारण और परिणाम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च। 2019;8(5):2199-206। ।

114. खताब के, रहीम एम.ए., सार्टोरियस बी, इस्माइल एम. मिस्र में बच्चों के खिलाफ बाल श्रम और हिंसा की व्यापकता और जोखिम कारक, बायेसियन जियोस्पेशियल मॉडलिंग का उपयोग करके कई इम्पुटेशन के साथ। पीएलओएस वन। 2019 मई 30;14(5):e0212715। ।

115. अल्फा एबी, कोलो पीबी, बेलो एमके, अहमद ए. बाल श्रम का समय और बच्चों के स्वास्थ्य पर घरेलू व्यय: नाइजर राज्य के लापाई स्थानीय सरकारी क्षेत्र का केस स्टडी। लापाई जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स। 2019 जून 30;3(1):149-57।.

116. मजीद एमटी, किरण एफ. महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति और बाल श्रम: पाकिस्तान से साक्ष्य। गुणवत्ता और मात्रा। 2019 जुलाई 15;53(4):2175-97।.

117. रहमान एस.एम., होसैन एम., आलम एम.एस., शहरियार एम.एच., रसूल आई., जुबैर ए.बी. दीर्घकालिक (सार्वजनिक) लाभों की कीमत पर अल्पकालिक (निजी) लाभ: बांग्लादेश के बीड़ी कारखानों में बाल श्रम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल एंड हेल्थकेयर रिसर्च। 2018;6(3-4):167-82।.

118. मेहता एन, मोहंती एस. बाल श्रम की सीमा और कारणों पर कुछ विचार। अमेरिका। 2020;8(5.3):3-2..

119. साहू, बरसा. (2020). बचपन के बिना बच्चे: भारत में बाल श्रम के पैटर्न और घटना का विश्लेषण. जर्नल ऑफ द सोशल साइंसेज. 48. 2650-2656.

120. मेहता एन, मोहंती एस. बाल श्रम की सीमा और कारणों पर कुछ विचार। अमेरिका। 2020;8(5.3):3-2.

121. ज़घलौल, नैन्सी और हेट्टा, शेरिफ और रमदान, नाज़ीह। (2020)। ज़घलौल एट अल. ग्रेट काहिरा गवर्नरेट, मिस्र में बाल शोषण और बाल श्रम के बीच चिकित्सा-कानूनी संबंध.

122. सैंड्रा एच, माजिद एम, दाऊद टीसी, हामिद ए. इंडोनेशिया में बच्चों के काम करने का क्या कारण है? जर्नल ऑफ एशियन फाइनेंस, इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस। 2020;7(11):585-93.

123. शाहिद एस, खान आरई. अनौपचारिक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, बाल श्रम और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास: अंतर्संबंधों की खोज। एशियाई विकास नीति समीक्षा। 2020;8(4):277-87.

124. होक एम.एम (2021). बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थी बच्चों की जबरन मजदूरी और शिक्षा तक पहुंच: एक मानवीय संकट से परे।.

125. फ़ेटफ़म, चक्रफ़ान और नूसोर्न, नारोंगसाक और प्राजोंगजीप, अचरा। (2021)। निचले उत्तरी थाईलैंड में बर्ले किसानों के बीच तम्बाकू की खेती और उत्पादन में बाल श्रम से जुड़े कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ पीडियाट्रिक्स। 9. 13167-13175. 10.22038/IJP.2021.55138.4346।.

126. ओकपा जेटी, एशियोत्से ई, ओफेम एनओ, सिल्वेस्टर ए, एंड्रयू यूएस (2021)। नाइजीरिया में बाल श्रम और अपराधी व्यवहार: एक जोखिम कारक विश्लेषण। अंतःविषय अध्ययन के अकादमिक जर्नल। 2021 मई;10।.

127. मेहता, आर., त्यागी, ए., दुआ, एस. और खानिजाऊ, वी., 2021. बाल श्रम का सार्थक मूल्यांकन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। तुर्की ऑनलाइन जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव इंक्वायरी, 12(9)।.

128. अहद एम.ए., पैरी वाई.के., विलिस ई., उल्लाह एस. ग्रामीण बांग्लादेश में बाल मजदूरों की उपेक्षा का जोखिम: व्यापकता और जोखिम कारक। बाल संकेतक अनुसंधान। 2021 अप्रैल 26:1-21।.

129. मेहता आर, त्यागी ए, दुआ एस, खानिजाऊ वी. बाल श्रम का सार्थक मूल्यांकन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। तुर्की ऑनलाइन जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव इंक्वायरी। 2021 अक्टूबर 1;12(9)।

130. अहाद, मोहम्मद अब्दुल, पैरी, यवोन करेन और विलिस, एलीन एम. (2021), चार दक्षिण एशियाई देशों के संदर्भ में बाल श्रम दुरुपयोग की व्यापकता और प्रभाव: एक स्कोपिंग समीक्षा, नई दिल्ली: डीप एंड डीप प्रकाशन।

131. के.सी., बी.के., सुबेदी, जी., गुरुंग, वाई.बी. और अधिकारी, के.पी. (2001), 'वेश्यावृत्ति के विशेष संदर्भ में लड़कियों की तस्करी: एक त्वरित आकलन', आईपीईसी, आईएलओ, जिनेवा।

132. क्रूगर, एलन (1996), 'अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानक और व्यापार', विकास अर्थशास्त्र पर वार्षिक विश्व बैंक सम्मेलन।

133. क्रूगर, एलन (2003), 'बाल श्रम की राजनीतिक अर्थव्यवस्था', बसु, के., हॉर्न, एच., रोमन, एल. और शापिरो, जे. (संपादक), अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानक: इतिहास, सिद्धांत और नीति, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवेल प्रकाशक।

134. क्रूगर, डी., सोरेस, आर. और बर्थेलॉन, एम. (2006), 'बाल श्रम और स्कूली शिक्षा के घरेलू विकल्प: ब्राजील में अनुप्रयोग के साथ एक सरल संरचनात्मक मॉडल।'

135. क्रूगर, डायना (2004), 'कॉफी सेक्टर बूम के दौरान बाल श्रम और स्कूली शिक्षा: निकगारुआ 1993-1998,' ट्रैब्जो इन्फेंटिल में: लैटिनोअमेरिका से सिद्धांत और साक्ष्य, लुइस एफ. लोपेज़ कैल्वा, एड. मेक्सिको, डी,एफ.: मेक्सिको की आर्थिक संस्कृति का आधार, आगामी।

136. क्रुगर, डी. और टोर्नहोम, जे. (2001), 'आर्थिक असमानता और बाल श्रम कानूनों का उदय,' माइमियो: स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय।

137. क्रुगर, डी. और डोनोग्यू, जे. (2005), 'बाल श्रम कानून के वितरण संबंधी परिणामों पर', अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक समीक्षा, खंड 46।

138. लैविनास, एल., बारबोसा, एम.एल., और तुओरिन्हो, ओ. (2003), 'ब्राजील में शहरी बोल्सा एस्कोला का मूल्यांकन: रेसिफ़ अनुभव' पी.एफ.ओराज़ेम, जी. सेडलसेक और जेड. तज़न्नाटोस (संपादक; आगामी) 'लैटिन अमेरिका में बाल श्रम और शिक्षा' में। वाशिंगटन डीसी: इंटरअमेरिकन डेवलपमेंट बैंक और विश्व बैंक।

139. लेविसन, डी., एंकर, आर., अशरफ, एस., और बार्ज, एस. (1998), 'क्या भारत के कालीन उद्योग में बाल श्रम वास्तव में आवश्यक है?' एंकर, आर., बार्ज, एस., राजगोपाल, एस. और जोसेफ, एम.पी. (संपादक) भारत के खतरनाक उद्योगों में बाल श्रम का अर्थशास्त्र, नई दिल्ली: हिंदुस्तान प्रकाशक।

140. लेविसन, डी., होएक, जे., लैम, डी. और दुरिया, एस. (2002), 'बाल श्रम अनुमानों के लिए आंतरायिक रोजगार के निहितार्थ', माइमियो: मिनेसोटा विश्वविद्यालय।

141. रामैया, जी और चंद्रशेखरय्या, तेनेपल्ली और विनयाग मूर्ति, परशुरामन (2010)। भारत में घटता बाल लिंग अनुपात: रुझान, मुद्दे और चिंताएँ। एशिया पैक जे सोक साइंस। 3।.
142. "भाग एक: बाबर". www.columbia.edu. मूल से 8 फरवरी 2007 को संग्रहीत। 3 अप्रैल 2021 को पुनःप्राप्त।
143. अब्राहम एराली, क्रोध का युग: दिल्ली सल्तनत का इतिहास
144. सुनील शर्मा, भारतीय सीमा पर फारसी कविता: लाहौर के मसूद सईद सलमान
145. "लोदी राजवंश | भारतीय इतिहास". एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका. 10 अप्रैल 2021 को पुनःप्राप्त।
146. भानु, धर्म (1979)। आगरा प्रांत: इसका इतिहास और प्रशासन। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
147. भानु, धर्म (1979)। आगरा प्रांत: इसका इतिहास और प्रशासन। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी। पीपी. 2–3.
148. "भाग चौदह: सिकंदरा". www.columbia.edu. मूल से 4 मार्च 2007 को संग्रहीत। 4 अप्रैल 2021 को पुनःप्राप्त।
149. "01बाबर". www.columbia.edu. 3 अप्रैल 2021 को पुनःप्राप्त।